कल इसी वक्त

(अफ्रीकन ड्रामे)

अनुवादक

रणवीर सिंह

पंचशील प्रकाशन, जयपुर-3

मूल्य : पैंतालीस रुपये

प्रथम संस्करण : 1985

प्रकाशक
पंचशील प्रकाशन
फिल्म कालोनी, चौड़ा रास्ता,
जयपुर-302003

मुद्रक : शांति मुद्रणालय, दिल्ली-32

KAL ISSI VAKTA (Six African Dramas)
Translated by Ranvir Singh Rs. 45.00

उन तमाम अफ्रिकन मुल्क के वाशिन्दों के नाम
जो अपनी आजादी हासिल करने के लिए और अपने
कल्चर को बचाने के लिए जद्दो जीहाद कर रहे हैं।

अपनी बात

अगर आप मुझसे यह सवाल पूछें कि मैंने इन अफ्रीकी नाटकों का अनुवाद क्यों किया तो मेरे पास जवाब में सिर्फ यही है कि अफ्रीका जैसे महान देश को नजदीक से समझने के लिए, आज की दुनिया बहुत छोटी होती जा रही है और जितनी छोटी होती जा रही है उतनी ही आपस की दूरी बढ़ती जा रही है। एक-दूसरे को समझना, सुख-दुख को जानना, उसे आपस में बांटना, यह इंसानियत का सबसे बड़ा फर्ज है। समाज के रीति-रिवाज, देश की समस्याओं, और उसकी परेशानियों को जानने के लिए थियेटर सबसे अच्छा माध्यम है। मैंने यही सोचकर इन नाटकों का अनुवाद किया कि इन दो महान देशो, अफ्रीका और हिन्दुस्तान, के बीच की दूरी कुछ और कम हो। अफ्रीका उसी दौर से गुजरा और गुजर रहा है जिस दौर से हिन्दुस्तान। गुलामी की जंजीरो को तोड़ कर आजाद हुआ। आज वह अपने को पहचानने में लगा है। अपने पुराने कल्चर को जिसे कोलोनीयल मास्टर्स ने पनपने नही दिया था, उसे निखारने की पूरी कोशिश मे लगा है। जो रोग कोलोनीयल मास्टर्स विरासत मे छोड़ जाते हैं उनसे छुटकारा पाने की कोशिश। इन तमाम समस्याओं को समाज के सामने रखने, उसे इन समस्याओ पर सोचने-समझने के लिए अफ्रीका के नाटककार थियेटर का बखूबी इस्तेमाल कर रहे है। थियेटर जो आज दिन तक कुछ एमेच्योर लोगों के हाथों मे था, वो अब अपनी जिम्मेदारी कमीटेड कलाकारो के मार्ग-दर्शन मे निभा रहा है। इन नाटकों का चुनाव करते वक्त मैंने इस बात का पूरा ध्यान रखा है कि ये नाटक अफ्रीका के समाज की तस्वीर को हमारे सामने रखें ही, मगर इसके साथ यह भी बताएं कि अफ्रीका और हिन्दुस्तान के समाज की तस्वीर कितनी यकसा है।

'कल इसी वक्त' झुग्गी-झोपड़ी के उन बाशिन्दों की कहानी है जिन्होंने आजादी की लडाई मे साथ दिया। आजादी मिली, कुछ लोगों को रहने के लिए बंगले मिले, घूमने-फिरने के लिए मोटर मिली, खाने-पीने का सब सलीका हो गया, मगर बेचारे ये लोग उसी झुग्गी-झोपडी मे कीड़े-मकोड़े की गंदी जिंदगी बसर करने के लिए मजबूर थे। खबरनवीसों के लिए खबर बन कर रह गए, राजनेताओ के लिए महज वोट। उनकी हालत पर किसी को भी कोई हमदर्दी

नहीं। सब लोग अपनी जरूरतों को पूरा करने के लिए इनका शोषण करते हैं और उन गरीबों को सुनहरी ख्वाब दिखा-दिखा कर उन्हें बेवकूफ बनाया जाता है। कभी शहर की सफाई के नाम पर तो कभी उनको नई पक्की कालोनी में बसाने की खातिर। उन्हें वहां से खदेड़ा जाता है। मगर उन बेचारों को यह नहीं मालूम कि कल इसी वक्त वो कहां होंगे, किस हाल में होंगे।

पुश्तैनी खून की दुश्मनी कोई नई बात नहीं, समाज का बहुत पुराना मर्ज है। न जाने कितनी सदियों पहले किसी ने किसी का खून किया होता है। मगर उसका बदला पुश्त-दर-पुश्त लेते जाते हैं और इसी में कितने ही कुनबे बिल्कुल तबाह हो जाते हैं। मगर कोई यह बात नहीं पूछता कि आखिर इसका नतीजा क्या होगा। 'नग्म-ए-मौत' एक ऐसे ही नौजवान अलवान की कहानी है जो पढ़-लिखकर 17 साल के बाद अपने गांव आता है। दिल में तमन्ना लिए हुए कि गाव की तरक्की के लिए कुछ करेगा। मगर उसके हाथ में उसकी मां वो चाकू पकड़ा देती है जिससे उसके बाप का खून हुआ था। इसका कोई सबूत नहीं कि खून किसने किया। पुश्तैनी खून की दुश्मनी है। इसलिए यह मान लिया जाता है कि खून तहावीयों ने ही किया है। अलवान अपनी अम्मा असाकीर से सबूत मांगता है।

अलवान : अम्मा, तुम्हें पूरा यकीन है कि इसी ने मारा है?

असाकीर : सिवाय तहावीयो के हमारा और कोई दुश्मन नहीं।

अलवान : और सही तौर पर तुम कैसे कह सकती हो कि सूवेलम तहावी ने ही मारा है?

असाकीर : इसलिए कि उसे पूरा यकीन है कि उसके वालिद को तुम्हारे वालिद ने मारा।

अलवान : और क्या वाकई मे मेरे वालिद ने इसके वालिद को मारा?

असाकीर : खुदा जाने।

अलवान : इन दोनों कुनबों मे यह दुश्मनी कब से चली आ रही है?

असाकीर : मुझे नही मालूम। किसी को नहीं मालूम। बहुत पुरानी दुश्मनी है। बस हम सिर्फ यही जानते है कि हमारे और उनके बीच सदियों से खूनी दुश्मनी चली आ रही है।

अलवान बदला लेने से इन्कार कर देता है और कहता है— "मै कत्ल नहीं करूंगा'''मैं एक अनपढ़ जल्लाद नहीं जो चाकू से लोगो की जिंदगी लेता फिरूं।"

इस शर्म के मारे कि लोग क्या कहेगें कि असाकीर की कोख से ऐसा डरपोक और नपुंसक लड़का पैदा हुआ है कि वो अपने बाप का बदला भी नहीं ले सकता, वो अपने ही बेटे को मरवा देती है ताकि कोई भी उनके कुनबे पर उंगली नहीं

उठा सके।

35 साल आजादी के बाद हिन्दुस्तान में आज भी यह होता है। बदले की भावना न जाने कितने परिवारों को तबाह कर देती है। न जाने कितने गांव, कितनी बस्तियां, कितने घर जला दिए जाते हैं। न जाने कितने नौजवान देश की सेवा नही करके चंबल की घाटी में या जेल मे सड़ जाते हैं। कब खत्म होगी यह बदले की भावना ? काश अलवान की तरह हमारे नौजवान भी यह कहे कि "मैं एक अनपढ़ जल्लाद नही जो चाकू से लोगों की जिंदगी लेता फिरूं।"

भगवान ने हमको सिर्फ इंसान बनाया। वही हाड़-मांस का चलता-फिरता पुतला। सब की नसो में वही खून बहता है मगर हमने अपने निजी स्वार्थों को पूरा करने के लिए अपने आप को अलग-अलग वर्गों मे बांट लिया—ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र। इससे भी हमें तसल्ली न हुई। स्वार्थ और बढ़ते गए और हर एक वर्ग कई तबकों में बंट गया। ब्राह्मण है तो कौन-सा निम्न कोटि का या उच्च कोटि का। क्षत्रिय है तो चंद्रवंशी या सूर्यवंशी। यहां तक कि शूद्रों में भी कई तरह के शूद्र हो गए—वही कोई उच्च कोटि के तो कोई निम्न कोटि के।

'शर्त' उन दो प्रेमियों की कहानी है जो एक नीग्रो है और दूसरी हिन्दुस्तानी। हिन्दुस्तान की तरह अफ्रीका मे भी इंसान सिर्फ सफेद, अफ्रीकन, एशियन या चीनी नही है। वहां भी अफ्रीकन कई वर्ग में बंटा हुआ है। कोई सोथो है, कोई तसवाना, कोई पेडी, गुलु, जोसा, वेंडा, स्वाजी, शनगाने।

अभी तो यही सुनते आए थे कि गोरे-काले में झगड़ा है, मगर वहां झगड़ा काले और ब्राउन में भी है। नीग्रो और हिन्दुस्तानी। नीग्रो समाज यह नहीं चाहता कि उनकी शादी हिन्दुस्तानी समाज में हो और ऐसे ही हिन्दुस्तानी नहीं चाहते कि उनके लड़के और लड़कियां नीग्रो समाज में शादी करें। शर्त ऐसे ही प्रेमियों की कहानी है। जहां तक बिजनेस का सवाल है, देव जो कि हिन्दुस्तानी है उसके लिए जरूरी है कि वो एक अफ्रीकन पार्टनर को ले—वो अपनी बीवी सावित्री से कहता है—

देव : सावित्री, मैं समझता हूं कि मैं ठीक ही कर रहा हूं। नजेरोग अफ्रीकन है और अगर मुझे यह बिजनेस ठीक से चलाना है—चलाना ही है, तो मुझे एक अफ्रीकन पार्टनर लेना ही होगा। यह मत भूलो कि यह देश उसका है।

मगर जब मोहन उसका लड़का जिनकीवा एक अफ्रीकन लड़की से शादी करना चाहता है—तो यह बात देव को अच्छी नहीं लगती और वो नाराज होकर कहता है—

देव : इतनी बड़ी दुनिया में तुम्हें यही एक लड़की मिली?

मोहन : मगर…

देव : कोई हिंदुस्तानी लड़की नही जिससे तुम शादी करो'''मैं इस बात की इजाजत नही दे सकता। यह शादी तुम समाज के खिलाफ कर रहे हो। तुम इस शादी से कभी भी खुश नही रह सकते। तुम एक हिंदुस्तानी हो और तुम्हें एक हिंदुस्तानी लड़की से शादी करनी चाहिए।

और जब मोहन उनको जवाब देता है कि "हम एक बहुजातीय देश में रह रहे हैं और वक्त बहुत जल्द बदल रहा है तो देव उसको जवाब देते हैं—

देव : मगर उतना जल्द नही जितना तुम बदल रहे हो। जिस बहुजातीय देश की बात कर रहे हो वो सिर्फ कल्ब में है। दरअसल में हिन्दुस्तानी, अफ्रीकन और यूरोपियन तीनों अलग-अलग जाति हैं। यह मैंने या तुमने नही भगवान ने बनाई हैं। यह ठीक है कि हम बगैर किसी जाति-भेद के एक साथ मिल-जुल कर रहें, मगर भगवान के लिए शादी-ब्याह को इन सबसे दूर रखो।

नजेरोग भी इस बात से खुश नही है और देव से कहता है—

नजेरोग : मैं तो बिल्कुल खिलाफ हूं। सिनयीया की शादी एक एशियन से हो। ऐसा तो हो ही नही सकता। तुम्हारे लड़के ने उस पर जादू किया है, तुम्हें उसको समझाना होगा।

कहने के लिए तो हम बहुत कुछ पढ-लिख चुके हैं। बड़ी-बड़ी डिग्रिया पाकेट में लेकर घूमते हैं। मगर आज के हिन्दुस्तान में यह समस्या किस समाज के सामने नही है। न जाने कितने ही मासूम दिल इस समाज के मारे या तो समझौता कर बैठते हैं या टूट जाते है।

जो लोग अपने पापों की सजा इस दुनिया में नही पाते और कानून के हाथों से निकल जाते हैं, उनको सजा मिलती है। मगर मर जाने के बाद जहन्नुम में। खुदा देता है।

पादरी : इन्सान के बनाए हुए कानून सिर्फ जिस्म को सजा दे सकते हैं, मगर यहां जहन्नुम में हम यह नही जानते कि भगवान हमारे जिस्म को नहीं हमारी आत्मा को कैसे और क्यो सजा देना चाहता है।

अवीवू . मैं अपने आप को बिल्कुल नगा पा रहा हूं।

सेलीना : हम सब नंगे हैं, हमारी आत्माएं नगी हैं।

पादरी : नही, हम नंगे नहीं हैं, हम सबने पाप का चौगा पहन रखा है। उन पापों का जो माफ नही किए जा सकते।

जहन्नुम में रहने के लिए मजबूर किए जाते हैं जहां कोई भी एक दफा आ जाता है तो यो फिर वहां से निकल नही सकता। तमाम उम्र वहीं रहना पड़ता है। एक कमरे में जहां न कोई दरवाजा है—न कोई खिड़की है। एक लंबी जिन्दगी जीने के लिए मजबूर किया जाता है। ऐसी जिन्दगी जो कभी खत्म नही होती, हयात-

ए-जांविदां जहन्नुम में एक बात की कमी नही है और वो है वक्त। वक्त सबसे बड़ी चीज है जो कि हर किस्म की समस्या और परेशानी को अपने ही तौर से उसे सुलझाने में मदद करता है। यही वक्त हमें सिखाता है कि हम अमन-चैन से कैसे जी सकते हैं। एक-दूसरे को जानने-समझने का वक्त। हयाते जांविदा यह सिखाती है कि इस छोटी-सी जिन्दगी जीने के लिए कितनी कोशिश करनी पड़ती थी। एक-दूसरे को समझने के लिए वक्त नही था। एक पागल भीड़ थी और उसकी हड़बड़ी में लोग भूल गए थे कि मिल-जुल कर जिन्दगी कैसे बिताई जा सकती है। एक-दूसरे को प्यार कैसे करते हैं। काश हम सब अपनी इस छोटी-सी जिन्दगी मे थोड़ा-सा भी वक्त निकाल सकें तो यह दुनिया कितनी हसीन हो जाए!

यह समाज अवसरवादियों का है। हर आदमी इस दौड़ मे लगा है कि वो दूसरे से आगे बैठे। हर वक्त अवसर की तलाश मे रहता है। 'अवसर' भी एक ऐसे ही इन्सान की कहानी है। आजादी के बाद, पार्टी के और मेम्बरों को कुछ न कुछ ओछा ओहदा मिल चुका है। सोलोमन जो पार्टी का सेक्रेटरी है, इस दौड़ में पीछे रह गया था। अब उसे यू० एन० ओ० मे राजदूत बनाकर भेजा जा रहा है। मगर एक अड़चन है। उसकी बीवी इतनी पढी-लिखी नही है कि वो यू० एन० ओ० में पार्टी वगैरा मे भाग ले सके, बाकी बीवियों से बात कर सके। उसको यह सुझाव दिया जाता है कि वो दूसरी शादी एक पढ़ी-लिखी लड़की से करे। इस दौड़ में आगे बढने के लिए वो तैयार हो जाता है। पच्चीस साल से जो आदर, वफा और प्यार उसकी बीवी ने उसको दिया, उसे अपने अरमानो को पूरा करने के लिए कुचल देना चाहता है। रीमा उसकी बीवी जो पुराने ख्यालो की है, राह मे रोड़ा नही बनना चाहती। वो खुशी से दुख सहने के लिए तैयार हो जाती है। मगर जमाना बदल गया है। मोनिका उसकी बेटी जो विलायत से तालीम पाकर आई है वो यह सुनकर बगावत करती है। जोजेफ जिससे उसकी शादी होने वाली थी, उसे अगूठी वापस कर देती है और अपने पापा से कहती है—

मोनिका : हां पापा, मैं सोचती हूं कि इस परिवार मे एक से ज्यादा तलाक होगा। अभी पूरी तरह से तय नही कर पाई हू मगर सोचती हू कि मैं वो गलती न करूं जो मेरी मां ने की थी। क्योंकि जोजेफ भी आप की तरह उतना ही अवसरवादी है। आप जैसे अवसरवादियो पर भरोसा नही किया जा सकता। कम-से-कम मां और मुझ जैसी औरतों को जिनकी छोटी इच्छाएं हों। हां वैरोनिका की और बात है। उसने आप से शादी करने के लिए हां इसलिए की होगी कि वो दौड़ मे आगे पहुंचना चाहती है और आप लोगों को भी ऐसी ही पत्नी चाहिए जो आपको आगे बढने में मदद करे।

सोलोमन : (बीच में बोलते हुए) मगर मोनिका तुम···

मोनिका : मगर आप वहां पर पहुंचेंगे नहीं, क्योंकि जोजेफ जैसे नौजवान अपनी पत्नियों की मदद से पहले वहां पर पहुंच चुके होंगे और जब आप इस दौड़ में उनसे मुकाबिला करेंगे तो वे आपको लात मार नीचे गिरा देंगे।

जोजेफ : (टोकते हुए) यह क्या कह रही हो···

मोनिका : मैं यह नहीं चाहती कि मेरे साथ ऐसा हो। इसलिए मैं इस दौड़ में शामिल नहीं होना चाहती। यह दौड़ आप जैसे अवसरवादी महा-पुरुषों को ही मुबारक हो।

हिन्दुस्तान में हम इस बात से बेहद परेशान हैं कि हर आदमी घूस लेता है। चपरासी से लेकर मिनिस्टर तक। यह बात नहीं है कि यह सिर्फ हिन्दुस्तान में ही है। इस युग की बदकिस्मती यह है कि तमाम देशों में घूस ली जाती है। हां, उसके रूप अलग हैं और तरीके अलग हैं। नाम अलग हैं। मगर, तमाम देश इस घूस की बीमारी से पीड़ित हैं। भंवर भी एक ऐसे चेयरमैन की कहानी है जो घूस लेता है। जोगियों के पास जाता है। शराब पीता है और हर तरह के भ्रष्टाचार करता है। अन्त उसका भी वही होता है जो घूस लेने वाले का होता है। इन छः नाटकों के अनुवाद से मैंने कोशिश की है कि अफ्रीका को नजदीक से जानने में मदद मिले। हम यह जान सकें कि हिन्दुस्तान में और अफ्रीका में कोई ज्यादा फर्क नहीं। जो परेशानियां हमारी हैं करीब-करीब वही उनकी भी हैं। एक-दूसरे की परेशानियों को जानने-समझने से ही लोग और देश एक-दूसरे के नजदीक आते हैं। अगर यह इन नाटकों के जरिए मैं कर सका हूं तो अपने-आपको खुश-किस्मत समझूंगा। थियेटर यह काम बखूबी अदा कर सकता है कि समाज की कमजोरियों को, समस्याओं को, परेशानियों को समाज के सामने इस तरह से पेश करे कि समाज उन पर सोचने-समझने पर मजबूर हो और उन्हें हल करने के लिए कोशिश करे।

कुडलीद हाउस
जयपुर

—रणवीरसिंह

नाट्यक्रम

कल इसी वक्त



नगुगी वा थीयोंगो (NGUGI WA THIONGO)

नगुगी वा थीयोंगो का जन्म 1938 में लीमुरू (Limuru) में हुआ। तालीम कीनिया में हासिल की, और जब युनीवर्सिटी कालेज (University College) मेकेरेरे (Makerere) में थे तब दो उपन्यास Weep Not,Child और The River Between लिखे। इनका दूसरा उपन्यास A Grain of Wheat लीड्स की युनिवर्सिटी (University of Leeds) में लिखा। इनका नाटक The Black Hermit छप चुका है।

पात्र

पत्रकार
संपादक
नजांगो—एक गरीब अधेड़ उम्र की बुढ़िया
वनजीरो—उसकी बेटी
पहला, दूसरा और तीसरा ग्राहक
कीओगो—म्युनिसिपल का स्वास्थ्य अफसर
लुहार
मोची
आसिन्जो—टैक्सी ड्राईवर—वनजीरो का आशिक
अजनबी
पुलिस अफसर
भीड़—कुछ पुलिस के सिपाही ।

[एक पत्रकार स्टेज के एक कोने मे काफी तेज स्पीड से टाइप कर रहा है। स्पौट लाइट सिर्फ उसी के ऊपर आनी चाहिए। बाकी स्टेज पर अंधेरा होना चाहिए।]

सं० की आवाज : ओ भई—सुनते हो।

[पत्रकार टाइप करना बंद कर देता है और सुनने लगता है। सपादक की आवाज आती है।]

संपादक : अरे यार जल्दी करो। तुम्हारे लेख की वजह से पूरा पेपर रुका हुआ है।

[पत्रकार टाइप करने लगता है। थोड़ी देर के बाद रुकता है और मशीन पर से कागज निकालता है।]

पत्रकार : (अपने आप से) लो खत्म हुआ। यह मेरी जिन्दगी का सबसे अच्छा लेख होगा। इससे बेहतर सन्डे फीचर अभी तक नही लिखा गया। जरा पढ के तो देखें। (पढ़ता है) गंदी झोंपड़ियां जिनमें कुछ लोग बसते थे—और जो हमारी राजधानी को चारों तरफ से घेरे जा रही थी, कल उनको तहस-नहस करके मिट्टी मे मिला दिया गया। मिट्टी और धुएं के बीच में से रास्ता पार करते हुए'''नही पार ठीक नही है—रास्ता ढूढते हुए सीटी काउंसिल के मजदूर अपनी दरांती और हंसिया से दायें-बायें मकानों को गिराते जा रहे थे। छप्पर की छतें जल रही थी—लपटें आसमान को छू रही थी। मिट्टी से बनी दीवार फिर से मिट्टी में मिल रही थी। हम : अच्छा-खासा है। यह सब कुछ उन दिनों की याद दिलाती थी जब जेरीको की दीवारों को गिराया गया था। शहर को साफ करो आंदोलन शुरू हो चुका था। आपका रिपोर्टर जो हर वक्त वहां मौजूद था, वो आंखों देखा हाल आपको बयान करता है। मैं बहुत सुबह बड़ी मुश्किल से उठा। अपना मुंह साफ किया। कैमरा और अपनी नोट बुक लेकर कच्ची बस्ती के बस अड्डे की तरफ जल्दी से भागा। वहां कोई भी आदमजात दिखाई नहीं दिया। इस बस

अड्डे पर जहां खचाखच भीड़ रहा करती थी वो आज काला-हारी या सहारा रेगिस्तान की तरह बिलकुल सुनसान था। अंधेरा इतना गहरा था कि मैं उन झोंपड़ियों को देख नहीं सका। मगर कुछ देर बाद मुझे अंधेरे में से कुछ आवाजें सुनाई दीं।

[जैसे पत्रकार बयान करता जा रहा है वैसे ही नजांगो की झोंपड़ी, जो कार्ड बोर्ड और टिन की बनी हुई है, उ पर लाइट आती है। सुबह की किरणें। यह झोंपड़ी इस तरह से बनाई जानी चाहिए कि जरूरत हो तो रखी जाय नहीं तो हटा ली जाये। बाकी का स्टे कच्ची बस्ती होना चाहिए। नजांगो और वनजीरो जमीन पर दीवार के पास सो रहे हैं।]

नजांगो : वनजीरो, वनजीरो! (वनजीरो सो रही है। वो जोर-जोर से खर्राटे लेती है) उठो-उठो—कैसी लड़की है! यह एक-न एक दिन मुझे मार कर रहेगी। दूसरी लड़कियां हैं वो सुबह सुबह उठकर घर के काम मे हाथ बटाती हैं और यह सूअर की तरह खर्राटे लेती हैं। उठती हो कि तुम्हारा नाक पकड़कर उठाऊं, या तुम्हारे मुंह पर ठंडा पानी डालूं—उठो।

वनजीरो : (जैसे सपने में डरी हो) क्या···क्या···पानी? पानी की कौन बात करता है? (जंभाई लेते हुए) ऐसा सपना आ रहा था। (जोश मे) चारों तरफ पानी-ही-पानी—इतना भयंकर बाढ़ कि इस तमाम बस्ती को बहाकर ले गया···

नजांगो : (जो कि उतावली में है) तुम तो बस सपनो की दुनिया में रहती हो। उठो जरा आंखें खोलो। ग्राहक आने वाले होंगे। वो गीहुआ, मावारीया, गीटीना सबके सब आने वाले होंगे। यह गोश्त बनाना है। और जो कल की हड्डियां बची हैं उनसे शोरबा बनाना है।

वनजीरो : हड्डियां, सड़ा हुआ गोश्त, कीड़े-मकोड़े, टिन, कागज, टूटे हुए बर्तन···सबके-सब बह गये। कीड़े फूल-फूल कर बड़े हो गए थे। मैंने उनको तैरता देखा—और फिर डूब गये।

नजांगो : तुम क्या कह रही हो?

वनजीरो : पानी···बाढ़ जो इस बस्ती को बहाकर ले गया।

नजांगो : (पिछली यादों में खोते हुए) तू बहुत छोटी थी। यही कोई दो-तीन साल की होगी। तब से तुझे सपने में आग दिखाई देती है। जब उन्होंने हमारा घर जलाया था तो तू रात-भर सोती

रही। तुझे कुछ मालूम भी नही था। लाल-लाल आग की लपटें आसमान को छू रही थी। मैं डर के मारे कांप रही थी मगर न जाने क्यों मैं रो न सकी। हमने टट्टियों मे जाकर शरण ली थी और जब सुबह हुई तो हम वहीं थे। तू जब नींद से उठी तो भूख के मारे रोने लगी। तेरा भाई भी रोने लगा, मगर मेरे पास तुम्हें खिलाने को कुछ भी नहीं था (बहुत कड़वेपन से) कुछ नही था।

वनजीरो : मां, पानी ही था। कल रात को सचमुच पानी ही था।

नजांगो : तुझे उसमें डूब जाना चाहिए था। तू और तेरे सपने। जल्दी से कपड़े बदल और आंगन में झाड़ू लगा, जब तक मैं जाकर आग तैयार करती हूं। देख झाड़ू ठीक मे लगाना। (बाहर जाती है लकड़ी काटने जिससे आग जला सके)

वनजीरो : (बहुत दुखी होकर) हां मां।

[झाड़ू लगाने लगती है। जोर-जोर से सांस लेती है।]

वनजीरो : (छींकती है) यह धूल तो मुझे मार डालेगी! (फिर से छींकती है। झाड़ू लगाती है और गाना गुनगुनाती है। दरवाजे से टकरा जाती है—चिल्लाती है) ओह! यह दरवाजा। मेरा सर फट गया होगा। ओह, मां ठीक कहती है। आखिर में मेरे सपने और मेरा गाना ही मेरी मौत की वजह होंगे। कितनी बार इस खम्भे के सहारे खड़ी होकर मैंने इस शहर में सुबह होती देखी है। आज शहर मे किसी भी तरह का शोर नही, चारों तरफ सन्नाटा है। चारो तरफ अंधेरा है, कीड़े-मकोड़े नालियों में छुपे हैं। हे भगवान, यह पेशाव की कितनी बदबू आ रही है!

[नजांगो जो अब तक लकड़ी काट रही थी, अब आग जलाने की तैयारी करती है।]

वनजीरो : मेरी मां फिर से काम पर लग गई है। वही लकड़ी काटना, उसे माचिस से जलाना। फिर वही धधकती हुई आग। वही जाने-पहचाने लोग और वही बातें। मैं इन सबसे तंग आ गई हूं।

[नजांगो आग जलाती है।]

वनजीरो : देखो, देखो, फिर से आग जलाकर उसने तमाम आसमान पर रोशनी कर दी। अब सुबह जल्दी ही होने वाली है। मुझे सूरज बिलकुल पसन्द नही। वो इस जगह की बदबू को और बढ़ा देता है। (लम्बी सांस भरकर) अजनबी के भाषण सुनने से पहले मैं इन तमाम बातों से अनजान थी। उसकी आंखें कितनी

गहरी थी। उनमें कितनी शक्ति थी। आसिन्जो की आंखें भी अजनबी की तरह ही थी। काश मां ने उसको यहां से भगा न दिया होता···

[थोड़ी देर का पाज। मुर्गों की बांग सुनाई देती है। बच्चों के रोने की आवाज, टीन की खड़खड़ाहट। कच्ची बस्ती के लोग उठ रहे हैं एक और नया दिन शुरू करने के लिए। नजांगो शोरबा बनाने के लिए आग पर एक बर्तन रख रही है। उसमें पानी मिलाती है। पत्रकार अपना बयान जारी रखता है।]

पत्रकार : थोड़ी ही देर में मुर्गे बांग देने लगे। जहां मैं खड़ा था वहां से बच्चों के रोने की आवाज और टिन की खड़खड़ाहट सुन सकता था। धीरे-धीरे और आवाजें सुनाई देने लगी। बस्ती के लोग उठ रहे थे। बहुत तेज सर्दी के मारे मैं कांप रहा था। मगर मैं अपनी जगह से हिला नहीं क्योंकि मुझे पूरा भरोसा था कि यहां से मुझे ताजा खबर जरूर मिलेगी। मुझे अब आवाजें साफ सुनाई देने लगी।

वनजीरो : बस्ती के लोग उठ रहे हैं, मगर चिड़ियां अभी भी आधी नींद में हैं।

नजांगो : (वापस आती है) वनजीरो, क्या तुम चिड़ियों की नकल करना चाहती हो? याद रखो चिड़ियों को जीने के लिए मरना नहीं पड़ता। क्या उन्हें खाना खरीदने के लिए पैसे चाहिए? नहीं। तू और तेरे भाई जैसे छोकरों के लिए कपड़े खरीदने पड़ने हैं? स्कूल की फीस देनी पड़ती है? नहीं। जा इस कूड़े को नाली में फेंक आ। क्या तूने शोरबा बनाने के लिए हड्डियों को अभी तक ठीक नहीं किया?

वनजीरो : मां, कपड़ों की और स्कूल की बात करके तू हमेशा मेरा मजाक उड़ाती है। मेरा भाई कहां है? उसको तो तूने चाचा के पास गांव भेज दिया ताकि वो स्कूल जा सके। और मुझे अपने पास रखा काम करवाने के लिए। यह जो कपड़े खरीदने की बात करती हो, कहां हैं वो? और लड़कियों को देखो, साफ-सुथरी फ्राक पहनकर घूमती हैं। और मुझे बाहर जाने में शर्म आती है।

नजांगो : तू मुझसे ऐसी बात करती है? तू जानती है मैं कौन हूं? मैं बताती हूं। मैंने तुझे जन्म दिया था। इतनी दुबली-पतली थी

तू। काश कि मैं उस दिन की कोई निशानी रखती, ताकि आज सोलह साल बाद तू अपने आप देख सकती कि तू कैसी थी। सारी-सारी रात तू रोया करती थी। न जाने मैं कितनी रातें सोई नहीं हूं।

वनजीरो : तू हमेशा ऐसी बातें करके ही मुझे चुप करा देती है। इन्ही बातों से फुसला कर आसिन्जो को भुलाने पर मजबूर किया। पैदा होने के लिए मैंने तो कभी नहीं कहा।

नजांगो : (उसकी बात को अनसुनी करके) और तेरे बाप ने किसी भी काम मे मदद नहीं की। वहां पहाड़ी पर अपने दोस्तों के साथ बैठा रहता था। नसवार सूंघता रहता था और चुराई हुई जमीन की बात करता रहता था। कभी-कभी सब मिलकर गीत गाते और हंसते रहते। फिर एक दिन उन गोरों के देश से एक बुड्ढा आया, और उसके बाद उनका गाना और हंसना वैसा न रहा जैसा पहले था। उनकी आंखें, उनके चेहरे पत्थर की तरह सख्त हो गए। (बीते हुए दिनों को याद से अपने आपको छुड़ाते हुए) हे भगवान, तू अच्छी तरह से जानता है मैंने उन एहसानफरामोशों के लिए कितने कष्ट सहे। और इसको इतना घमण्ड कि यह मुझसे इस तरह बात करती है! आखिर तू सोचती क्या है? आसिन्जो ने तेरे लिए क्या कर दिया होता?

वनजीरो : वो मुझे इस जगह से निकाल कर ले गया होता।

नजांगो : वहां शहर मे तू खो गई होती।

वनजीरो : आसिन्जो मेरी रक्षा करता।

नजांगो : तेरी रक्षा करता? दूसरी कौम का आदमी? तू जानती है यह शहर के आदमी कैसे होते हैं? तूने सुना नहीं, औरतों को नालियों मे किस तरह फेंक देते हैं? उन्हे घूंसा मार कर सड़कों पर मरने के लिए छोड़ देते हैं। तेरी रक्षा करता! अच्छा हुआ वो बदमाश मेरी नजरों से ओझल हो गया।

वनजीरो : उसकी आखें कितनी गहरी थी!

नजांगो : और होठ कैसे मोटे थे···जैसे पहाड़ हों।

वनजीरो : (प्यार से) उसका बदन कितना मुलायम था!

नजांगो : कितना काला था···कोयले से भी ज्यादा काला।

वनजीरो : काश कि वो मेरी खातिर वापस आता! आज यह बस्ती मिटा दी जाएगी।

नजांगो : कान खोलकर सुन ले, मैं यह कभी नहीं सुनना चाहती, "वो मेरी खातिर वापस आ जाए !" आसिन्जो मेरे घर आए ? क्या मैंने इसी दिन के लिए तुझे खिलाया-पिलाया, कपड़े दिए, तेरे लिए दुख सहे कि तू हमारी कौम के बाहर शादी करे ?

वनजीरो : (थोड़ा-सा नाराज होकर) मैं जानती हूं तूने इस शहर में कितने दुख सहे हैं । इस युहूरू बाजार में तू शराबियों, भेड़ियों और लकड़बग्घों से लड़ती रही है । मैं कभी भी तेरी मर्जी के खिलाफ काम नहीं करना चाहती थी । परसों ही शहर में मैंने एक पोशाक देखी थी । मुझे इतनी अच्छी लगी कि मैंने उसे चुरा ही लिया होता ।

नजांगो : तू गोरों की तरह कपड़े पहनना चाहती है ?

वनजीरो : मैंने देखा है कि काले लोग भी वैसे कपड़े पहनते हैं ।

नजांगो : यह शहर हमारे लिए नहीं है ।

वनजीरो : मगर वो अजनबी कहता है कि शहर हमारा है । दूकानें, फैक्ट्रियां सब कुछ हमारी है ।

नजांगो : यह सब कुछ खास लोगों के लिए है ।

वनजीरो : अजनबी कहता है कि जो गरीब किसान और मजदूर युहूरू की आजादी के लिए लड़े, यह जमीन उन्हीं की है ।

नजांगो : यह अजनबी कौन है ? वो लुच्चा और लफंगा है ।

वनजीरो : मगर मां, सिटी कौंसिल के पास लेकर वही तो गया था । वो अपने लिए कुछ नहीं चाहता । वो इस गांव के लोगों की भलाई ही चाहता है । वो तो अकेला सबसे दूर रहना चाहता है । वो तो कौंसिल का नेता भी नहीं बनना चाहता था ।

नजांगो : फिर गया क्यों था ?

वनजीरो : बस्ती के लोगों ने उसे नोटिस दिखाया था । यहां से उठ जाने के लिए हमें कुछ ही दिन दिए गए थे । क्या तुम भूल गईं, जब उसने नेता बनने से इन्कार कर दिया था तो औरतें उसके सामने किस तरह से फूट-फूटकर रोई थीं और तुम उसे लुच्चा और लफंगा कहती हो ! यह सरासर बेइंसाफी है मां ।

नजांगो : उससे हमें क्या फायदा हुआ ? बता, क्या फायदा हुआ ?

वनजीरो : उसके कहने पर सिटी कौंसिल ने हमें कुछ महीनों की मोहलत और दे दी ।

नजांगो : सिटी कौंसिल फिटी कौंसिल कोई भी हो । मैं इस जगह से हिलने वाली नहीं ।

वनजीरो : कुछ लोग तो कहते हैं कि उसके हाथ में जादू है।

नजांगो : वो सिर्फ झगड़ा-फसाद करवाता है। जा, इन हड्डियों को उस हांडी में डाल दे।

वनजीरो : अच्छा मां।

[नजांगो कुछ गुनगुनाने लगती है। वनजीरो हड्डियों को उठाकर हांडी में डालती है।]

वनजीरो : मां !

नजांगो : हां, क्या है ?

वनजीरो : तुमने सोचा भी है कि क्या करोगी ?

नजांगो : क्या मतलब ?

वनजीरो : बस्ती मे सभी लोग यह बात कर रहे है कि हम अपने इन हाथों से चुपचाप अपनी झोंपड़ियों को तोड डालें या फिर उसके खिलाफ आवाज उठायें।

नजांगो : बकवास बन्द कर। इधर आ मेरी मदद कर। जल्दी आ ना। यह पुरानी सिटी कौंसिल नही'''चाहे पुरानी हो या नई, कान खोलकर सुन ले, मैं अपनी झोपड़ी तोड़ने वाली नही। इधर आ, गोश्त कटवाने में मदद कर—ठीक से पकड़।

वनजीरो : मुझे डर लगता है। तू कही मेरी उंगलियां ही न काट डाले।

नजांगो : बेवकूफी की बात मत कर। कितनी बार काटी हैं तेरी उंगलिया ? ठीक से पकड़। हिला मत गोश्त को।

वनजीरो : मां !

नजांगो : जरा-सा भी चैन नहीं। अब क्या पूछना चाहती है ? उस सिटी कौंसिल के बारे में मत पूछना।

वनजीरो : तू उससे मिली है क्या ?

नजांगो : किस से ?

वनजीरो : उस अजनबी से ?

नजांगो : यह तमाम परेशानियां, जिनका हमे सामना करना पड़ता है, यह सब उसी की वजह से है। मैं उसकी मीटिंग में कभी नही जाती।

वनजीरो : बहुत दिनों तक उसने गोरों की नौकरी की। फिर जेल गया। जब बाहर आया तो उसे मालूम हुआ कि उसकी जमीन लोगों ने छीन ली थी। वो अब लकड़ी काट-काटकर अपनी जिन्दगी नही बिताना चाहता।

नजांगो : सुन, मेरी बात मान। अब आइन्दा उससे मत मिलना, समझी ?

वनजीरो : क्यों?

नजांगो : मैं कैसे समझाऊं—तू अभी भी बहुत बच्ची है।

वनजीरो : हां, अजनबी के भाषण सुनने से पहले मैं बिलकुल अनजान थी। यह कच्ची बस्ती ही मेरी तमाम दुनिया थी। इसके अलावा मैं कुछ नहीं जानती थी।

नजांगो : वो बहुत खतरनाक है। जो मैं कह रही हूं तू सुन रही है? वो बहुत खतरनाक है"'तेरा बाप भी ऐसी ही बातें किया करता था।

वनजीरो : मेरे बाप को क्या हुआ था? उसके बारे में मैं जब भी तुझ से पूछती हूं तो तू खामोश हो जाती है। फटी-फटी आंखों से देखती रहती है और वो उन आंसुओं से भर जाती हैं जो कभी बह न सके थे।

नजांगो : वो मेरा पति था। ताकतवर : उसे अपने आप पर भरोसा था। मगर उसका मन अशान्त था। वो कुछ करना चाहता था। औरों की तरह उसने भी गोरों के खिलाफ आवाज उठाकर बेवकूफी की। डेडोन कीमाथी की नेतागिरी में अपना घर-बार छोड़कर जंगल चला गया और वहां से बम्ब और बन्दूकों के खिलाफ लड़ता रहा। फिर एक दिन खबर आई की तेरे बाप को गोरों ने पकड़ लिया और कुत्ते की तरह गोली मार दी। (खामोश हो जाती है। फिर धीरे से कहती है) इस युहुरू ने हमें क्या दिया, जिन्होने अपने पति और बेटों को खो दिया?

[मुर्गों की बाग की आवाज। चुज्जे पर फड़फड़ाते हैं। पत्रकार की आवाज उभर कर आती है। नजांगो और वनजीरो, ग्राहकों की इन्तजार में मेज सजाती हैं। सूप पीने के लिए गिलास वगैरा रखती हैं।]

पत्रकार : और फिर पौ फटी। सुबह गेरुआ कपडे पहने, ओस के ऊपर चलती हुई कच्ची बस्ती की झोंपड़ियों मे आई। लोगों की आवाजें जो बन्द होने का नाम नही ले रही थी, धीरे-धीरे बढती चली गईं और एक शोर-सा मच गया। लुहार टिन ठोक रहे थे। गांव से बस अनगिनत लोगों को उतार रही थी और वो इधर-उधर चारो तरफ जल्दी-जल्दी चले जा रहे थे। जैसे किसी चीटियों के कारवां मे खलबली मच जाय और वो इधर-उधर भागती हैं। कुछ लोग कच्ची बस्ती मे शोरबा पीने के लिए जा रहे थे। गोश्त के तलने की आवाज़ सुनकर मुझे भी भूख

लग आई। मैं भी उस भीड़ में शामिल हो गया और गोश्त की उस ललचाती हुई खुशबू की तरफ बढ़ता चला गया।

[स्पौट लाइट पत्रकार से हट जाती है]

पहला ग्राहक
दूसरा ग्राहक
तीसरा ग्राहक : अम्मा नजांगो—अम्मा नजांगो !

[नजांगो शोरबा देती है और साथ-साथ दूसरे दुकानदारों की तरह अपना शोरबा बेचने के लिए दाम वगैरा बोलती रहती है।]

नजांगो : बीस सेंट में शोरबा, बीस सेंट में शोरबा। इस शोरबा के पीने से ताकत बढ़ती है।

नजांगो
वनजीरो : (दोनों साथ) सस्ता शोरबा, आज का सबसे सस्ता शोरबा।

पहला ग्राहक : सस्ता शोरबा। आज का सबसे सस्ता शोराबा, हमेशा यही बीस सेंट में तो देती हो।

दूसरा ग्राहक : नजांगो। बदमाश बुढ़िया। ग्राहकों को ऐंठना तो तू जानती है।

तीसरा ग्राहक : चल एक गिलास और दे। तुझे सबक सिखाना ही होगा।

नजांगो
वनजीरो : (दोनों एक साथ) बीस सेंट मे शोरबा सूप जो ताकत बढ़ाता है।

[इन्सपेक्टर कीओंगो स्टेज पर आता है। लाउडस्पीकर के जरिए बोलता है।]

कीओंगो : मैं सिटी कौसिल की तरफ से बोल रहा हूं। मैं सिटी कौंसिल की तरफ से बोल रहा हूं। जो लोग युहुरू के बाजार मे रहते हैं उन सबको हिदायत की जाती है कि···

पहला ग्राहक : हे भगवान, आज का ही तो दिन था।

दूसरा ग्राहक : अब क्या करें !

तीसरा ग्राहक : सुनें तो सही यह पागल क्या कहता है।

कीओंगो : मैं सिटी कौंसिल के स्वास्थ्य विभाग का इन्सपेक्टर कीओंगो बोल रहा हूं। जो लोग यहां पर बस रहे हैं मैं उन सबको याद दिलाना चाहता हूं कि पिछली बार जब आप लोगों की तरफ आया था तो तुम्हें एक महीने की मोहलत दी गई थी। आज उस एक महीने का आखिरी दिन है। आज बारह बजे तक यह तमाम झोंपड़ियां तोड़ डालनी चाहिए। अमेरिका, इंग्लैंड और

पश्चिम जर्मनी से आने वाले टूरिस्ट लोगों को यह गंदगी बिल्कुल पसंद नही जो धीरे-धीरे हमारे शहर को, जो अफ्रीका का मोती माना जाता था, उसे चारों तरफ से घेर रही है।

पहला ग्राहक : नही, यह हमारे मकान नही तोड़ सकते।

दूसरा ग्राहक : मैं नही जानता था कि हमें सताने के लिए इनके इरादे इतने पक्के हैं।

तीसरा ग्राहक : क्या यह काले आदमी की सरकार नही है—हमारी सरकार नही है ?

कीओंगो : शहर को साफ रखने का आंदोलन आज से शुरू होता है।

[लोग गुस्से में एक-दूसरे से बात करते हैं। इस बीच पत्रकार स्टेज पर आता है। उसके पास कैमरा और एक नोट बुक है। वो बेतहाशा तस्वीरें उतारता है और लोगों से बातचीत करता है। कीओंगो तस्वीर उतारने के लिए पोज बना कर खड़ा होता है।]

पत्रकार : (लुहार से पूछता है) हां तो जनाब, जरा आप बताइए, मैं एक पत्रकार हूं और यह जानना चाहता हूं कि इस आंदोलन के बारे मे आपकी क्या राय है। ठहरिए, जरा ठहरिए, मैं आपकी एक फोटो ले लू। हां तो अब बताइए, आप क्या काम करते हैं।

लुहार : मैं लुहार हूं।

पत्रकार : आप की उम्र ?

लुहार : उम्र ? यही पचास-साठ होगी। ठीक से कह नही सकता।

पत्रकार : आप इस शहर मे रहने कब आए थे ?

लुहार : कब ? जरा गिन कर बताऊं—एक-दो-तीन···ओह् बहुत साल पहले।

पत्रकार : यहां आने से पहले आप क्या काम करते थे ?

लुहार : मैंने कई तरह के काम किए—खाना पकाना, कपड़े धोना, झाड़ू लगाना। वैसे मैं रसोइया था। मेरा मतलब मैंने गोरे के लिए खाना पकाया है। लड़ाई के ज़माने में भी और बाद में भी। मैं रिफ्ट वैली (Rift valley) मे रहा करता था। जब इमरजेन्सी लागू हुई तो मुझे वहां से भगा दिया गया। फिर रेलवे स्टेशन और बंदरगाह पर कुली का काम किया। किसी हद तक वो अच्छा काम था। क्योंकि कभी-कभार शिलिंग दो शिलिंग इनाम मे मिल जाते थे। उससे खाना तो नसीब

होता था मगर सोने की जगह कहीं नहीं थी। दुकान के बरामदे मे, नालियों मे, जहां जगह मिल जाए सोना पड़ता था। कई बार तो मैं टट्टियों में भी सोया हूं। बाप रे, क्या बदबू आती है। फिर न जाने कहां काम किया कुछ याद नही आता। सिर्फ इतना याद है कि पुलिस के डर के मारे और भूख से सताया हुआ मैं एक जगह से दूसरी जगह भागता रहा। मगर चैन कहीं नही मिला जब तक इस बस्ती में आ के नही बसा। मैंने लुहार काम यहीं सीखा। मैं अब पानी के लिए पीपे मांगा, जेमवेस, सिगड़ी वगैरा सब कुछ बना लेता हूं। सब कुछ।

कीओंगो : अच्छे नगरवासियो! याद रखो यह शहर तुम्हारा है। तुम्हे इस पर गुमान होना चाहिए। इसे साफ रखो।

नजांगो : इसकी वेहूदी आवाज सुनकर मुझे कै होती है। कितनी गंदी जुबान है! यह कीओंगो है न? दोपहर के खाने के वक्त हमेशा यहां आता था। एक कटोरा सूप और अच्छी बड़ी हड्डी खा कर, शुक्रिया अदा करके जाता था। उन दिनों नवयुवक संघ का मेम्बर था। हमेशा भूखा रहता था। और अब तो बादशाह है—बादशाह।

कीओंगो : आपको याद है हमारे प्रधानमंत्री ने आलसियों से, भिखारियों से, वेश्याओं से और वेकार लोगों से जो शहर में आते हैं उनसे कहा था कि वो अपनी जमीन पर वापस जाएं।

[लोग फिर एक-दूसरे से गुस्से मे बात करते हैं।]

पत्रकार : (मोची से) मैं पत्रकार हूं, मै इस आंदोलन के बारे मे आपकी राय जानना चाहता हूं। आप इसके बारे मे क्या सोचते हैं, वगैरा-वगैरा। नही-नही, हिलिए नही। जरा चुपचाप खड़े रहिए। जरा अपना डण्डा ऐसे उठाइए जैसे आप किसी को मारने जा रहे हैं। ऐसे उठाइए जैसे आप सिटी कौंसिल से लड़ाई करने जा रहे हैं। हां, ऐसे। यह अच्छी फोटो बनेगी। अच्छा जरा बताइए, आप क्या काम करते है?

मोची : मै मोची हूं।

पत्रकार : उम्र?

मोची : मुझे नही मालूम मेरी उम्र क्या है।

पत्रकार : आप शादीशुदा है?

मोची : जी हां, एक बीबी और पांच बच्चे हैं। सब मेरे साथ यही रहते हैं।

पत्रकार : इस नाजायज आंदोलन के बारे में आपका क्या ख्याल है ?

मोची : ऐसा नही है कि मैं यहां से जाना नही चाहता। मगर सरकार को चाहिए कि इस जगह की एवज में मुझे दूसरी जगह दे। मेरा हक है, क्योंकि मैं पार्टी का मेम्बर रहा हूं। 1950 में मैंने भी कसम खाई थी। उस वक्त मुझे ऐसा महसूस हुआ जैसे मैं एक नया इंसान हूं। और भला किस को महसूस नही था। मेरा मतलब उन सभी को जिन्होंने कसम खाई थी। हम आजादी के लिए लडे थे। अपनी मातृभूमि के लिए लड़े। उन दिनों हम गाया करते थे "चाहे वो कितना भी मेरा मजाक उड़ाए, मुझे पीटे, मुझे मार डालें, मगर मैं यह कभी नही भूलूंगा कि यह काले आदमी का देश है।" मुझे गिरफ्तार करके मनयानी भेज दिया। क्यों, तुमने इस जगह का नाम नही सुना ना, यह एक जेलखाना है। मैं इमरजेन्सी के बाद घर आया तो मालूम हुआ कि अभी तक गोरे गए नही थे। वो वही थे जैसे पहले थे। मगर मेरे लिए कोई नौकरी नहीं थी। कोई जमीन नही थी। मैं यहां शहर आ गया था। नही-नही, मैंने यहां क्या देखा उसके बारे में कुछ नहीं बताऊंगा। सिर्फ इतना बताऊंगा कि मैं यहा खुश हूं। इधर-उधर कुछ जूतों की मरम्मत कर लेता हूं। बस इतना है कि मैं भूखा नही मर रहा हूं। अब मेरे दोस्तो, तुम्ही बताओ कि मैं यह जगह क्यों छोड़ूं !

कीओगो : शहर को साफ रखो आंदोलन आज शुरू होता है। आज दिन के बारह बजे पुलिस अपना काम शुरू कर देगी। भाइयो, हैराम्बी स्पिरिट दिखाइए, और यहां से हटने की तैयारी करिए।

[स्टेज से बाहर चला जाता है। पत्रकार उसके पीछे-पीछे जाता है, वो उसकी इन्टरव्यू लेना चाहता है।]

नजांगो : ऐसी बकवास मैंने कभी नही सुनी। अपने घर तबाह करके हैराम्बी स्पिरिट (*Harambee Spirit*) दिखाएं।

लुहार : मुझे अकेला छोड़ दें, बस मैं यही चाहता हूं।

मोची : मैं क्या करूं ? अपने आपको बचाने की मुझ में ताकत भी नही।

पहला ग्राहक : उस अजनबी के साथ एक मीटिंग क्यों न करें ? उसके हाथ में जादू है, वो इनको मजा चखा सकता है।

दूसरा ग्राहक : हां, उस अजनबी का जादू हमे बचा सकता है।

तमाम लोग : एक जरूरी आम सभा। एक जरूरी आम सभा। तमाम लोगों से प्रार्थना है कि वो इस आम सभा मे भाग लेने के लिए फौरन आएं। युहुरू बाजार जिन्दाबाद, युहुरू बाजार जिन्दाबाद। (बाहर चले जाते हैं)

नजांगो : वनजीरो, उस अनजबी को सुनने के लिए मैं भी मीटिंग में जा रही हूं। जब तक मैं लौटूं इस सूप और गोश्त की निगरानी करना। (चली जाती है)

वनजीरो : (लंबी सांस लेते हुए) वो यह सोचते है कि अजनबी उनकी मदद करेगा। मैं नही जाना चाहती, मैं चाहती हूं कि अजनबी कोई जादू न करे। मैं इस कच्ची बस्ती से बाहर निकलना चाहती हूं। देखो, मुझे देखो, और लड़कियों की तरह मेरे पास पहनने को कपड़े भी नही। मैं अब जवान हूं, मगर कोई मर्द मेरी तरफ देखता भी नही। अगर कोई देख भी लेता है तो सिर्फ यही कहता है, कि वो फटे चिथड़ों मे कौन जा रही है। आसिन्जो की बात और थी। वो मुझे अपनी बांहों में लेकर अपने हाथ मेरे सीने पर रखता था। एक दिन उसने यह भी कहा कि मैं खूबसूरत हूं। उस दिन पहली बार मुझे कितनी खुशी हुई। मुझे यकीन नही हुआ। मैं दौड़ कर शहर गई और अपने आप को एक दुकान के शीशे मे देखा। हां, मैं इतनी बदशक्ल नही, उस दिन मेरे चेहरे पर नई चमक थी।

आसिन्जो : (धीरे से) वनजीरो, वनजीरो !

वनजीरो : आसिन्जो, तुम !!

आसिन्जो : मैं अन्दर आ जाऊं ? तुम्हारी मां है क्या ?

वनजीरो : वो सभा में गई है। आओ, जल्दी आओ न, सूप पीओगे ?

आसिन्जो : हां, कुछ ठंड है। लो यह लो। (कुछ नोट निकालकर देता है)

वनजीरो : दस शिलिंग ! तुम्हें इतने पैसे कहां से मिले ? मगर तुम्हे पैसे देने की जरूरत नही।

आसिन्जो : (खुशी के मारे) मैं अब बेकार नही हूं, मै टैक्सी ड्राइवर हूं।

वनजीरो : (खुशी के मारे ताली बजाती है) टैक्सी—तुम्हारा मतलब तुम खुद चलाते हो ?

आसिन्जो : हां, मैं अब शहर का कोना-कोना जानता हूं। कोलो जहाँ गोरे रहते हैं और वेस्टलैंड और कावेटे, जहां धनी अफ्रीकनों ने पक्के मकान खरीदे हैं। तू शहर की सैर करने चलेगी ?

वनजीरो : ओह आसिन्जो, मैं चाहती तो बहुत हूं। मगर मेरी मां···

आसिन्जो : मेरी मां, मेरी मां ! तुम अब बच्ची नहीं हो, तुम यह कैसे मान लेती हो कि वो बुढ़िया तुझे इस घर में बंद करके रखे ? जिन्दगी की हर खुशी से दूर रखे ? जब मैं यहां आता था तो वो गालियां देकर मुझे भगा देती थी। कहती थी कि मैं बेकार हूं। तुम्हारी कौम का नही हूं। उससे क्या फर्क पड़ता है ? मेरे पास अब अच्छी-खासी नौकरी है। कई लड़कियां मुझसे शादी करना चाहती हैं। अगर मैं तुझसे प्यार नही करता, तो जो कुछ भी तेरी मा ने मुझसे कहा था उसके बाद मैं यहां आता ? बता ? (खामोश) तू चुप है तो फिर चल मेरे साथ। तेरी मां बुड्ढी हो गई है। वो नये जमाने की बात नही जानती। वो एक जवान औरत की जरूरतों को क्या जाने ? और फिर यह बस्ती आज उजाड़ दी जायेगी। फिर तुम कहां जाओगी ? मेरे पास मकान है। मेरे लिए खाना पकाना, मकान की सफाई रखना, मैं तुझे पहनने को नये-नये कपड़े दूंगा, नये जूते दूंगा···

वनजीरो : ओ आसिन्जो, मैं कैसे बताऊं, तुम्हें कितना प्यार करती हूं ! अभी तुम्हारे आने से पहले मैं तुम्हारे बारे में ही सोच रही थी। तुम कैसे मुझे अपनी बांहों में लेते थे, अपने हाथ मेरे सीने पर रखते थे, यह सब सोचकर मुझे रोना आ गया था···मगर तुमने मुझे सोचने का वक्त भी नही दिया। यह सब बहुत जल्द हुआ।

आसिन्जो : जल्दी और देर के फेर में मत पड़। अच्छी जिन्दगी बितानी है तो चल मेरे साथ।

वनजीरो : मेरी मा बिलकुल अकेली हो जायेगी, आसिन्जो।

आसिन्जो : हम कभी-कभी उससे मिलने आ जाया करेंगे। उसके लिए तोहफे भी ले आयेंगे।

वनजीरो : मुझे सोचने का थोड़ा-सा वक्त दो। तुम्हारी टैक्सी कहां है ?

आसिन्जो : बस अड्डे पर।

वनजीरो : तुम वहां मेरा इन्तजार करो। मां अभी आती ही होगी। मैंने क्या तय किया है वहां आकर बता दूंगी।

आसिन्जो : (जाते-जाते) हां, अपना सब सामान साथ ले आना।

वनजीरो : मैं इस जगमगाते हुए शहर की हर खुशी को जीना चाहती हूं। मुझे फ्रॉक चाहिए। और जूते···बड़ी एड़ी वाले ताकि मैं गोरी मेम की तरह चल सकूं। मेरे बायें हाथ में एक बैग झूलता हो और दाहिने हाथ की उंगलियों मे एक सिगरेट हो।

[वो यूरोपियन मेम की नकल उतारते हुए स्टेज पर से बाहर चली जाती है। (पाज)
प्रदर्शनकारियों का जत्था, नारे लगाता हुआ स्टेज पर आता है। उनके हाथों मे पोस्टर है। अजनबी का भाषण सुनने के लिए बैठ जाते हैं और जब अजनबी भाषण देने के लिए उठता है तो शोरगुल धीरे-धीरे बंद हो जाता है।]

अजनबी : हां, मैं आप लोगो के बीच एक अजनबी हूं। मगर मैं उनमे से एक हूं जिन्होंने जगल और जेल में रहकर युहुरू के लिए लड़ाई लड़ी। मगर इस युहुरू ने हमे क्या दिया?

भीड़ : कुछ नही, इसने हमे कुछ नही दिया।

अजनबी : नही, ऐसा नही, इसने कुछ दिया। इसने हमें दिये ऐसे लोग जो मरसीडोज और लम्बी-लम्बी अमरीकन गाड़ियां चलाने में खुश हैं। जबकि हम यहां इन कच्ची बस्तियों में भूखे मर रहे हैं। अच्छा यही होगा कि सिटी कौसिल हमें हमारी परेशानियों और दुखों के साथ कच्ची बस्ती में अकेला छोड़ दे।

भीड़ : अजनबी जिन्दाबाद। हमारी बस्ती जिन्दाबाद।

अजनबी : मैं ज्यादा देर तक बोलना नही चाहता, सिर्फ इतना बता देना चाहता हूं कि मेरे पास कोई जादू नही है। मैं कोई ओझा नहीं हूं कि किसी चमत्कार से सिटी कौंसिल को अपना काम करने से रोक दूं।

भीड़ : अरे यह क्या कह रहा है? ऐसा क्यों कह रहा है? यह हमारी मदद कर सकता है। इसे हमारी मदद करनी चाहिए।

अजनबी : मगर हां जादू है। जादू आप लोगों में है। जिस जादू के चमत्कार से आप लोग सिटी कौसिल को रोकना चाहते हैं, वो आपके दिल में है। आपके हाथों मे है। आइए हम सब मिलकर, एक आवाज में, इस नई सरकार को बताएं कि हमें हमारे मकान चाहिए, वो हमें प्यारे हैं। जब तक सिटी कौसिल हमें दूसरी जगह नही बताए, हम अपनी रोटी कमाने कहां जाएं? हम अपने मकान नही तोड़ेंगे। मैं तो यह भी कहूंगा कि हम अपने मकानों की रक्षा करेंगे। उन्हे किसी भी हालत मे तोड़ने नही देंगे।

भीड़ : युहुरू बाजार जिन्दाबाद। युहुरू बाजार जिन्दाबाद।

पहला ग्राहक : मुझे तो सब बातें पसन्द नहीं।

दूसरा ग्राहक : मेरे ख्याल में तो यह अच्छा बोलता है।

तीसरा ग्राहक : यह जो कुछ कह रहा है क्या यह सच है? हम सबको एक होकर रहना चाहिए।

पहला ग्राहक : सुनो-सुनो, वो अजनबी फिर से बोल रहा है।

अजनबी : दोस्तो, तुम्हें याद है हम गोरों के खिलाफ कैसे लड़े थे। हमारे कितने ही बेटे और बेटियां जेल मे और जंगलों में बेमौत मारे गए। हम अपनी जमीन के लिए लड़े थे, मगर कहां है वो जमीन?

भीड़ : वो गोरों के पास है, तमाम जमीन गोरों के पास है।

अजनबी : हम युहुरू के वास्ते लड़े थे। हमें बताया गया था कि हमें अच्छे मकान मिलेंगे। अच्छी नौकरी मिलेंगी। मगर कहां हैं वो मकान? कहां हैं वो नौकरियां?

भीड़ : यहां नही हैं, यहां नही हैं।

[पुलिस के भोंपू की आवाज सुनाई देती है।]

पहला ग्राहक : पुलिस। पुलिस आ रही है।

दूसरा ग्राहक : भागो-भागो, जल्दी भागो—सामने से हट यार।

तीसरा ग्राहक : मगर हम सबको एक होकर सामना करना है।

अजनबी : भाइयो और बहनो! मैं आपसे प्रार्थना करता हूं कि भागिये मत। आपकी मांग सही है। आपके मकान आपको प्यारे हैं।

पहला ग्राहक : देखो उनके हाथ में लाठियां हैं। संभलना, देखना।

तीसरा ग्राहक : भाइयो, भागो मत, ठहरो।

अजनबी : देशवासियो'''नगरवासियो'''देशवासियो!

[पुलिस आती है। लोगों को लाठियों से मारना शुरू करती है। लोग चिल्लाते है। इधर-उधर बचकर भागते हैं।]

पुलिस अफसर : मैं पुलिस अफसर हूं। हमारे नये गणतंत्र के नाम पर आपको गिरफ्तार किया जाता है। आपका जुर्म—तोड़-फोड़, मार-धाड़ करवाना और लोगो को बगावत के लिए उकसाना। चलिए, हमारे साथ चलिए।

अजनबी : (आखिरी बार भीड़ से कहता है) दोस्तो!

[भीड़ उसकी बात को अनसुनी कर देती है। यूं ही कुछ बड़बड़ाते हुए वहां से चली जाती है।]

पुलिस अफसर : चलिए। ले चलो इसे।

[बाजार मे खामोशी छा जाती है। थोड़ी देर बाद

वनजीरो स्टेज पर आती है। वो अभी भी यूरोपियन औरत की तरह चल रही है। उसके ठीक बाद नजांगो आती है। मगर दोनों अपनी-अपनी दुनिया में अपने-अपने ख्यालो में खोई हुई हैं।]

नजांगो : सो अजनबी को गिरफ्तार कर लिया। अब हमारा कोई नेता नही। उसकी आंखें देखकर मुझे अपने पति की याद आती है। वो भी लड़ाई लड़ने के लिए जंगल में जाने से पहले अपनी फटी-फटी आंखों से कुछ नही देखते हुए फिर भी सब कुछ देखता था। मुझे बहुत डर लगता था, किस बात का यह मुझे नही मालूम। हमें यहा से निकाल देंगे तो वनजीरो कहां जाएगी? मैं कहां जाऊंगी? रोटी कमाने के लिए नया काम कहां शुरू करेंगे? वनजीरो!

वनजीरो : (उसके पास आती हैं) हां मां।

नजांगो : सूप और बिका?

वनजीरो : कोई खास नही मां, सब लोग तो मीटिंग में गए थे।

नजांगो : उन्होंने अजनबी को गिरफ्तार कर लिया।

वनजीरो : क्या? उसे गिरफ्तार कर लिया?

कीओंगो : (लाउडस्पीकर पर बोलते हुए) जल्दी करो। जल्दी करो। अपने मकानों से सब सामान निकाल लो।

[इस सीन मे बुलडोजर की आवाज लगातार आती है।]

वनजीरो : मा, मैं तुमसे कुछ कहना चाहती हूं।

नजांगो : क्या है?

वनजीरो : मैं···मैं यहा से जाना चाहती हूं।

नजांगो : मेरी बच्ची, अब तो हम सभी को जाना है।

वनजीरो : हां मां, मगर मैं तुम्हारे साथ नही जा रही।

नजांगो : (थोड़ा-सा शक होता है) क्या मतलब···तू मेरे साथ नही जायेगी?

वनजीरो : मैं आसिन्जो के साथ जा रही हूं। जब तुम यहां नही थी तो वो आया था।

नजांगो : उस आदमी के साथ? दूसरी कौम के आदमी के साथ? जो बेकार है?

वनजीरो : उसे नौकरी मिल गई है और उसके पास रहने को मकान भी है।

नजांगो : तू पागल है। इन शहर के लोगों के बारे मे मैंने तुझे बताया था।

वनजीरो : मगर आसिन्जो उन जैसा नहीं है।

नजांगो : उन जैसा नहीं है। तेरे मुंह से उसका नाम नहीं सुनना चाहती।

वनजीरो : मैं तो उसके साथ जा रही हूं। तुम बुड्ढी हो गई हो। नये जमाने की बातें नहीं जानती। तुम एक जवान औरत की जरूरतों को नहीं जानती।

नजांगो : मेरी कोख से जन्मे हुए बच्चे मेरी मर्जी के खिलाफ कोई काम नहीं कर सकते, मैं उनकी हड्डियां तोड़ दूंगी।

वनजीरो : मैं अब बड़ी हो गई हूं, अपना बुरा-भला खुद देख सकती हूं। मैं अब जा रही हूं, आसिन्जो मेरा इन्तजार कर रहा है। खुदा-हाफिज मां!

नजांगो : वनजीरो! वनजीरो! मत जा, मुझे अकेला छोड़कर मत जा, मैं तेरे बगैर क्या करूंगी? (कुछ देर चुप रहती है। फिर धीरे-धीरे कहती है) मैं एक बेकार बुढ़िया हूं।

[कीओंगो स्टेज पर आता है। वो जो कुछ कहता है नजांगो उसको नहीं सुनती है।]

कीओंगो : जल्दी करो—जल्दी करो। ऐ औरत—तुम यहां क्या कर रही हो, जल्दी करो—जल्दी करो। (हुक्म देता हुआ वहां से चला जाता है)

नजांगो : हमें यहां से भेड़-बकरियों की तरह से खदेड़ा जा रहा है। मैं आज रात को कहां जाऊंगी? मैं कल इसी वक्त कहां रहूंगी? काश हम सब एक होकर उनका सामना करते! काश हम सब एक होकर उनका सामना करते!

[बुलडोजर की आवाज इस वक्त बहुत ऊंची है। झोंपड़ी के गिरने की आवाज आती है। फिर खामोशी छा जाती है।]

[पर्दा]

ह्याते जांविदां



पैट अमादू मैडी (PAT AMADU MADDY)

पैट अमादू मैडी का जन्म 1936 ई० में हुआ। यह सियरा लीयोन के रहने वाले हैं। 1960 में यह ब्रिटेन और डेनमार्क में काम करते थे जहां उन्होंने अफ्रीकन नाटककारों के नाटक प्रोड्यूस किए। कुछ अर्से तक इन्होंने सियरा लीयोन रेडियो पर प्रोड्यूसर का काम किया। 1969 में इन्होंने Expo 70 के लिए जाम्बिया के नेशनल डास ट्रूप का निर्देशन किया। इस वक्त यह लंदन में थियेटर, टेलीविजन और रेडियो पर काम कर रहे हैं। इनके नाटकों का एक संग्रह "ओबासी" के नाम से छप चुका है।

पात्र

बिग बोय	:	जहन्नुम में एक नौकर
के० आचीवू	:	रिटायर्ड सी०आई०डी० का सुपरिन्टेन्डेन्ट
श्रीमती सेलीना मेकआर्थी	:	
पादरी सीमीयोन कोलिन	:	रिटायर्ड पादरी

कुछ आवाजें जो स्टेज के बाहर गाते हैं।

[एक बहुत छोटा कमरा, बगैर सजावट के कोई फर्नीचर नहीं, बिल्कुल खाली। सही तौर से बताया नहीं जा सकता मगर एक खास तरह की पुरानी याद को ताजा करता है। इस कमरे में अगर कोई अकेला रहे तो ऐसा महसूस होता है जैसे कि चारों तरफ से दीवारें बन्द होती चली आती हैं और ऐसा लगता है जैसे घुट के मर जाएं। दरअसल में यह कमरा नर्क यानी जहन्नुम की तरह बना हुआ है। जब पर्दा उठता है और नाटक शुरू होता है तो स्टेज पर आबीबू (Abibu) 33 साल का एक नीग्रो, जमीन पर लेटा हुआ है और ऐसी आवाजें निकाल रहा है जैसे डरा हुआ कुत्ता बोलता है। सेलीना (Selina) एक नीग्रो की लड़की, लम्बा कद और खूबसूरत, वो भी जमीन पर लेटी है और बिल्ली की तरह आवाजें निकाल रही है। पादरी कोलिन (Pastor Collins) घुटने के बल है जैसे कि प्रार्थना कर रहा हो और सूअर की तरह आवाजें निकाल रहा है। यह तमाम लोग मर चुके हैं और अब इन्हें इनकी तकदीर यहां हमेशा रहने के लिए ले आई है।

बिग बोय : नमस्कार—आदाब (Good Evening)। यह नर्क है, हम सब जहन्नुम में हैं, यहां हम कभी भी खुदा हाफिज नहीं कहते। जो लोग यहां आते हैं, यहां जहन्नुम में, वो हमेशा रहने के लिए आते हैं।

[आबीबू—सेलीना और पादरी कोलिन, बेहोशी की हालत में जानवरों की तरह बोलने लगते हैं। उन्हीं जानवरों की तरह जो ऊपर बताया गया है।]

बिग बोय : यहां जहन्नुम में उतना आपस में भेदभाव नहीं होता जितना दुनिया में होता है। चुप रहो मेरे दोस्तो, अब खामोश भी हो जाओ राक्षसो। (सब चुप हो जाते हैं, बिग बोय बहुत ही अजीब तरह से हंसता है, जो सुनाई देने में बहुत ही अटपटी-सी लगती है) हां अब ठीक है, खामोशी भी हजार नेमत है, कभी-कभी। अब यह जानवरपन छोड़ो और आओ काम की बात करें। हम एक-दूसरे को जानने की कोशिश करें और यह भी जानें कि हम सबको यहां एक साथ रहने के लिए क्यों भेजा गया है।

यहां जहन्नुम में, यहां इत्तफाक से कुछ नही होता, मगर जब कोई एक बार यहां आ जाता है तो यहां पर कोई अपना खास आदमी नहीं होता, कोई पक्षपात नहीं, कोई Priorities (प्राथमिकतायें) नही। यहां पर यह सब कुछ नहीं है, तुमको यहां भेजा गया और इसलिए भेजा गया कि तुम कयामत तक रहो। (कुछ ठहरकर) यहां जहन्नुम में अजीबो-गरीब वारदातें होती हैं। बड़े, कमजोर, ताकतवर, पढ़े-लिखे, गरीब, बीमार, हरामज़ादे बगैर किसी सैक्स, क्लास या जाति को ध्यान में रखे हुए, सब यहां पर घुलमिल कर रहते हैं।

सेलीना : ओफ ओ—बहुत गर्मी है।

आबीबू : शिकायत करने से कोई फायदा नही, खिड़की खोल लो और पर्दे हटा लो।

बिग बोय : यहां कोई खिड़की नही, कोई पर्दे नही।

आबीबू : और मैं यह पूछ सकता हूं कि तुम कौन हो?

बिग बोय : मेरा नाम बिग बोय है।

आबीबू : भाड़ में गया तुम्हारा नाम, तुम यह बताओ, तुम मेरे कमरे में क्या कर रहे हो?

बिग बोय : ऐसा लगता है अभी भी तुम्हारी आंख खुली नही। अभी भी तुमको यह नही मालूम है कि तुम कहां हो।

पादरी : सैली, मेरी बाईबल कहां है? कहां रखी है? मैंने कितनी बार कहा कि मेरी बाईबल को मत छुआ करो।

सेलीना : मैं सैली नही हूं—मेरा नाम सेलीना है।

आबीबू : (हैरान है) क्या···क्या कहा, तुम्हारा नाम क्या है?

बिग बोय : बिग बोय—मेरा नाम (धीरे-धीरे बोलकर बताता है) बि··· ग···बो···य।

आबीबू : बिग बोय।

सेलीना : बिग बोय।

आबीबू : कैसी···यह कैसी अजीब जगह है?

सेलीना : जगह ही अजीब नही, माहौल भी अजीब है।

आबीबू : मैंने तुमसे एक सवाल पूछा था (जोर से और हुक्म जताकर) यह क्या मनहूस जगह है?

बिग बोय : जनाब, यह जहन्नुम है।

तमाम लोग : (सिवाय बिग बोय के) जहन्नुम!

बिग बोय : जी, जहन्नुम।

आबीबू : जहन्नुम में जाओ तुम!

विग बोय : (हंसता है) जनाब, आप वहीं हैं, यहीं जहन्नुम है।

आवीवू : और यह सब कौन हैं ?

विग बोय : यह लोग तुम्हारे साथी हैं। हम सब एक-दूसरे के साथी हैं।

आवीवू : यह क्या मेरी बीवी है ?

विग बोय : नहीं।

आवीवू : वो कौन है जिसने कुत्ते जैसे गले में पट्टा पहन रखा है।

पादरी : क्या कहा ?

आवीवू / सेलीना : (एक साथ) तुम कौन हो ?

पादरी : मैं तुम से यही पूछने वाला था। तुम यहां क्या कर रहे हो ?

[विग बोय जोर-जोर से हंसता है।]

सैलीना : बन्द करो।

आवीवू : चुप रहो।

पादरी : खामोश।

विग बोय : (चुप हो जाता है) जैसी तुम्हारी मर्जी। ऐसा लगता है तुम्हें मजाक पसन्द नहीं है।

[बाहर बरामदे से किसी के आने की आवाज आती है।]

सैलीना : कोई आ रहा है।

विग बोय : वो यहां नहीं आ रहा।

सैलीना : वो कौन है ? यहां क्या कर रहा है ? [illegible] ?

विग बोय : (सवालों को दोहराता है) कौन है ? [illegible]...क्या कर रहा है ? कुछ नहीं...कहां आ रहा है ? [illegible] ? [illegible] कुछ भी नहीं, कुछ नहीं है।

सैलीना : चुप श श श श श श...

[उसके पैरों की आवाज [illegible]
है।]

सैलीना : (धीरे से) [illegible]

आवीवू : खामोश......([illegible])

पादरी : हमें प्रार्थना करनी चाहिए ([illegible]) [illegible]

विग बोय : [illegible]

बातों के लिए यहां वक्त नही है।

पादरी : छोटी बातें, तुम प्रार्थना को छोटी बात कहते हो !

आबीबू : देखो मिस्टर बिग बोय, जो कुछ भी तुम्हारा नाम हो, मुझे यह बच्चों के खेल पसन्द नही, मैं यह सब खेल नहीं खेलता हूं। यह दरवाजा खोल दो, मैं यहां से बाहर जाना चाहता हूं।

बिग बोय : खेल ? कैसा खेल ? कौन बच्चों की तरह खेल रहा है ?

आबीबू कान खोलकर सुन लो, तुम शायद यह नही जानते हो कि मैं कौन हूं, मैं सुरा लियोन की सी० आई० डी० का चीफ सुपरिन्टेन्डेंट हूं और मेरा नाम है करीमू-आबीबू ! सो तुम मुझे बेवकूफ बनाने की कोशिश मत करो।

सेलीना : (चिल्लाती है) कोई मेरी मदद करो, मदद, पुलिस (अपने पर काबू नहीं रख पाती) पुलिस। हमें यहां जबरदस्ती से बन्द किया गया है। मारा है—मदद…

बिग बोय : चिल्लाने से कोई फायदा नही, यहां तुम्हें कोई सुन नही सकता, इस कमरे से आवाज बाहर नही जा सकती, यह साउण्ड-प्रूफ है और फिर यहा जहन्नुम में एक-दूसरे के मामले मे कोई दखल नही देता।

[तरह-तरह के जानवरों को आवाजें सुनाई पड़ती हैं, सूअर, शेर, भालू, सांप, कुत्ता, चिड़ियां, बन्दर सब एक साथ आते हैं। मगर साफ-साफ सुनाई देता है। सबसे आखिर में मेंढक की आवाज आती है।]

आबीबू : यह क्या अजीब आवाजें हैं ?

बिग बोय : ये सब तुम्हारे पड़ोसी हैं।

आबीबू : मेंढक अभी भी बोल रहे हैं क्या ? (हैरान है—ताज्जुब होता है) मेंढक ?

बिग बोय : हां, मेंढक, सांप, शेर, चिड़िया वगैरा वगैरा वगैरा वगैरा—यह सब तुम्हारे पड़ोसी हैं, यहां पर हम किसी किस्म का भेद-भाव नही रखते।

पादरी : यहां कहां ?

बिग बोय : माफ करना पादरी साहब, मैं यह भूल जाता हूं कि अभी भी आपको यकीन नही कि आप जहन्नुम मे हैं।

पादरी : मैं ? जहन्नुम में ?

बिग बोय : क्यो, इसमे गलती क्या है ?

पादरी : बहुत कुछ—इतने लोगों में से क्या मैं ही रह गया हूं कि जहन्नुम

में आद और फिर इन जानवरों की पड़ोस का क्या मतलब ?

बिग बोय : जनाब पादरी साहब, आप मे और इन जानवरों में कोई फर्क नही है। जैसी आपकी आत्मा है वैसी उनकी भी है। इन्हें यहां रहने की आदत पड़ गई है और वो खुश भी है। जानवर बहुत जल्दी ही अपने आप को नये माहौल मे ढाल लेता है, उसमें रम जाता है। यह सिर्फ एक अदनी-सी जान, इन्सान ही है जो अपनी रोजमर्रा की घिसीपिटी जिन्दगी से हटकर किसी भी माहौल में खुश नही रह सकता।

सेलीना : (रोती और मिन्नत करती) मेहरबानी करके बिग बोय मुझे यहा से निकाल दो, मुझे यहां से आजाद कर दो—मुझे छोड़ दो।

बिग बोय : मैं ऐसा नही कर सकता, मेरे पास कोई इख्तियारात नही। मैं यहा उसी हैसियत में हूं जैसे आप सब हैं। आप तीनो की तरह और हम सब यहां इसलिए आए है कि हम हमेशा-हमेशा यही रहेंगे।

सेलीना : हम यहां से बाहर कभी भी नही जा सकते ?

बिग बोय : कभी नही।

सेलीना : क्यों ? क्यो ? क्यों ?

बिग बोय : इसलिए कि तुम सब मर चुके हो और हमेशा-हमेशा के लिए तुम्हे यही रहना होगा।

सेलीना : और तुम ? क्या तुम भी मर चुके हो ?

बिग बोय : नही, मैं तुम तीनों की तरह नही हूं।

सेलीना : यह कैसे ?

बिग बोय : मैं तुम्हारी तरह हाड़-मांस का बना हुआ नही था, मैं हमेशा से यहीं था और हमेशा यही रहूंगा।

सेलीना : यह सब कैसे हो सकता है।

बिग बोय : बहुत आसान है। तुम तीन, यहां जहन्नुम में इस कमरे मे जो खास तौर पर तुम्हारे लिए बनाया गया है, जब दुनिया मे तुम अपने काम-काज खत्म करके यहा रहने के लिए आओ, तो तुम्हारे स्वागत के लिए कोई तो होना चाहिए, इसी काम के लिए मुझे यहां रखा गया है ताकि मैं तुम्हारी देखभाल कर सकूं।

सेलीना : और तुम हमेशा से यहीं हो ?

बिग बोय : हां, हमेशा से'''तुम तीनों की इन्तजार मे, और तुम तीनों को

यहां से देखता रहता था कि तुम क्या करते हो, कहां जाते हो।

सेलीना : हमारी इन्तजार मे अकेले तुम दिन कैसे बिताते थे ?

बिग बोय : कभी आंख लग जाती थी तो सो जाता था, मगर नींद में भी तुम लोगों पर नजर रखता था।

सेलीना : मगर हम तीन ही क्यों ?

बिग बोय : भाग्य, यह तुम्हारे भाग्य में लिखा हुआ था कि मरने के बाद तुम तीनों साथ रहोगे।

सेलीना : मगर"'मगर"'हम एक-दूसरे को जानते तक नही ?

बिग बोय : यह मेरा काम है।

सेलीना : तुम्हारा क्या काम है ?

बिग बोय : यही कि तुम सबको एक-दूसरे से मिलाऊं। करना तो यह है ही, तो फिर क्यों न यह काम मैं अभी शुरू कर दूं। छोटी-मोटी कार्यवाही करनी पड़ती है।

सेलीना : कार्यवाही।

बिग बोय : हां, यहां जहन्नुम में भी कार्यवाही तो करनी ही पडती है, मगर तुम लोगों को तो दुनिया में रहकर आदत पड़ गई होगी, अच्छा तो तुम सब मेरा नाम तो जानते ही होगे ?

सेलीना : बिग बोय है न ?

बिग बोय : हां, ठीक है।

सेलीना : क्यों बिग बोय, तुम यही पैदा हुए थे क्या ? तुम्हारा नामकरण भी यहीं हुआ था ?

बिग बोय : नहीं-नहीं, यहां पर नामकरणवगैरा नहीं होता। यहां पर नामकरण, शादी जैसी फिजूल की बातो के लिए कोई वक्त नहीं है, मगर जहन्नुम के बारे में तुम जो भी जानना चाहो, तुम्हारे पास तमाम वक्त है।

सेलीना : मगर तुम हर वक्त यहीं रहोगे ?

बिग बोय : हां, हर वक्त, आओ जरा पहली कार्यवाही निभाएं, परिचय।

सेलीना : क्या कहा ?

बिग बोय : पहली कार्यवाही जो हमें करनी है।

सेलीना : क्या करना है ?

बिग बोय : एक-दूसरे के नाम से परिचय करवाना, यह जाने कि हम कौन हैं और यहां पर एक साथ क्यों मिलते हैं।

सेलीना : तुम इसको मिलना कहते हो, हमें यहां पर बन्द किया गया है।

कैद किया गया है, इस कोठरी में जहां हम चारों तरफ से जानवरों से घिरे हुए हैं।

बिग बोय : धीरे-धीरे आदत पड़ जाएगी, तुम्हारा नाम मिसेज सेलीना मैक आर्थी है न ?

सेलीना : तुम मेरा नाम कैसे जानते हो ?

बिग बोय : तुम्हारा नाम जानना मेरा काम है, मैं यह तुम्हें बाद में बताऊंगा कि मैं यहां किस हैसियत से हूं और यह पादरी सिमीयोन कोलिनस है।

पादरी : तुमने मुझे बताया कि मैं मर चुका हूं कि मैं जहन्नुम में हूं मेरी प्रार्थना एक फिजूल बात है कि मेरे पड़ोसी मेंढक हैं और अब तुम मेरा नाम बता रहे हो, मेरी समझ में नहीं आता कि इसके बाद तुम मुझे क्या-क्या और बताओगे।

बिग बोय : मैं तो बात बहुत कम करूंगा, बात तो आप तीन ही करेंगे।

सेलीना : तुम क्या करोगे ?

बिग बोय : मैं क्या करने जा रहा हूं यह मुझे नहीं मालूम और जहां तक मैं जानता हूं यह तुम्हें भी नहीं मालूम कि तुम क्या करने वाले हो। अब जरा इन कामरेड की बात करें।

आबीबू : मुझे कामरेड मत कहो। मैं साम्यवादी नहीं हूं। मेरा नाम करीम आबीबू है और यह मैं तुम्हें पहले बता चुका हूं।

बिग बोय : मैं नही जानता कि यह पादरी और सेलीना क्या सोचते होंगे, शायद इन्हें गालियां पसन्द नहीं, जहां तक मेरा ताल्लुक है, तुम जितनी गालियां दे सकते हो, यहां जहन्नुम में हम सिर्फ एक ही बात पसन्द नहीं करते और वो है नेक और अच्छी आदतें। यहां जहन्नुम में अच्छाई और बुराई में, बदसूरती और खूबसूरती में, बड़े और छोटे में, कमजोर और ताकतवर में, पापी और धर्मात्मा में कोई फर्क नहीं है। यहां पर सब एक समान हैं, न कोई बड़ा न कोई छोटा, सबके नाम यहां एक काली किताब में लिखे हुए हैं।

आबीबू : यह तुम्हें बताने की जरूरत नहीं, हम अच्छी तरह से देख सकते हैं कि यहां का बन्दोबस्त बहुत ही अच्छा है।

[बाहर कदमों की आहट सुनाई देती है]

पादरी : क्या और कोई आ रहा है ?

बिग बोय : नहीं, पादरी साहब !

पादरी : क्या तुम्हारे कहना हम सिर्फ तीन ही यहां रहेंगे ?

बिग बोय : जी हां।

पादरी : मगर कुछ देर पहले तुमने यह कहा था कि जहन्नुम में कोई भेदभाव नहीं है।

बिग बोय : मैंने यह कहा था कि यहां पर सब एक समान हैं।

आबीबू : क्या वकवास करते हो, समानता और भेदभाव में क्या फर्क है?

बिग बोय : मिस्टर आबीबू, आप जो कहते हैं वो सच ही होगा। मैं अनपढ़ क्या जानूं क्या फर्क है?

पादरी : यह, यह अंग्रेज लोग जो मरते हैं यह कहां जाते हैं?

बिग बोय : वही जो उनके भाग्य में लिखा है। उस काली किताब में सब लिखा है पादरी साहब!

पादरी : समझा।

सेलीना : मुझे प्यास लगी है, एक गिलास पानी देंगे।

बिग बोय : पानी, प्यास? माफ करना, मिसेज सेलीना, यहां जहन्नुम में पानी नहीं मिलता।

[पैरों, कदमों की आवाज साफ सुनाई देती है, फिर रुक जाती है।]

सेलीना : वो कोई नहीं, कुछ नहीं, बाहर फिर आ गया है (धीरे से) पानी, मुझे पानी दो। (गला सूख गया है। फटी आवाज आती है) पानी, मेरा दम घुट रहा है।

आबीबू : (धीरे-से फुसफुसाकर कहता है) चुप रहो'''मुझे'''मुझे'''डर लग रहा है। मुझे पसीना आ रहा है, कभी भी मेरी हालत ऐसी नहीं हुई।

[कुछ देर के लिए बिल्कुल सन्नाटा छा जाता है।]

आबीबू : मेरे कहने का मतलब, पहले मैं किसी से भी डरा नहीं था, कभी नहीं।

बिग बोय : यहां किसी से डरने की जरूरत नहीं, यहां तुम्हें कोई भी नुकसान नहीं पहुंचा सकता, किसी बात का खतरा नहीं, यहां तुम बिल्कुल सुरक्षित हो।

पादरी : तुम यह कैसे कह सकते हो?

बिग बोय : यह मेरा काम है, तुम्हारी हिफाजत करना मेरा फर्ज है। मुझे यहां इसलिए रखा गया है कि मैं तुम्हारी सब जरूरतें, तमाम ख्वाहिशें पूरी करूं, तुम्हें यह बताऊं कि तुम यहां क्यों और कैसे आए हो।

आवीवू : हमें यहां पर क्यों लाया गया है ।

बिग बोय : सुनो, सबसे पहले तो हमें यह सीखना है कि हम सब अमन और चैन से कैसे जी सकते हैं, यह करने के लिए जरूरी है कि हम मे एकता हो और एकता जब ही हो सकती है जब हम एक-दूसरे को जानें, समझें और सब से जरूरी है कि एक-दूसरे को प्यार करें।

आवीवू : तुम्हारी क्या सलाह है, यह ऊंचे ख्याल कैसे पूरे हो सकते हैं ?

बिग बोय : वक्त मिस्टर आवीवू—वक्त सबसे बड़ी दवा है, तमाम मुसीबतों को दूर कर देता है । सब समस्याएं हल हो जाती हैं और इन मुसीबतों और समस्याओं को दूर करने के लिए यहां वक्त की कोई कमी नहीं ।

आवीवू : वक्त की कमी...

बिग बोय : हां, यहां जहन्नुम में वक्त की कोई कमी नही, हम कही जा नही रहे, कोई जल्दी नही—हड़बड़ नही, यहां कभी भी वक्त की कमी नही होती ।

आवीवू : यकीनन ।

बिग बोय : साथियो—हमें यहा किसी बात की फिक्र नहीं है । न शरीर की फिक्र, न मानसिक, न चरित्र की परवाह न बुद्धि की । तुम लोगो को उस हरी-भरी दुनिया में इन सबकी परवाह करनी पड़ती थी, उस छोटी-सी जिन्दगी जीने के लिए तुम्हें हर तरह की कोशिश करनी पड़ती थी । तुम्हारी उस दुनिया में अमनो-चैन नहीं था । चारों तरफ गडबड़ ही गड़बड़ थी, और वक्त तुम्हारे साथ नही था । उस पागल भीड़ में, हड़बड़ी में, तुम लोग यह भूल गए थे कि मिलजुल कर जीवन कैसे बिताया जाता है और एक-दूसरे को प्यार कैसे करते हैं ।

पादरी : मैंने तो सब को हमेशा प्यार किया है ।

बिग बोय : यह तुम कैसे कह सकते हो ।

पादरी : मैं अच्छी तरह से जानता हूं, इसलिए ।

बिग बोय : यह अभी मालूम हो जाता है ।

आवीवू : तुम कहना क्या चाहते हो कि पादरी झूठ बोल रहे हैं ?

बिग बोय : यह सवाल मुझ से पादरी खुद पूछ सकते हैं । मैं तो यह कह रहा था कि हम लोगों को यह सीखना चाहिए कि एक-दूसरे को प्यार कैसे किया जाता है । यहां पर तुम लोगो को एक साथ रखने का मकसद यही है ।

पादरी : हम चारों को ?

बिग बोय : नहीं, तुम तीनों को, मैं तो सिर्फ नौकर हूं।

पादरी : सिर्फ नौकर ?

बिग बोय : हां, सिर्फ नौकर—तुम्हारा नौकर—यह बात ध्यान में रखिए और जितना हो सके मुझसे काम करवाइए।

[उल्लू काफी देर तक और जोर से बोलता है]

पादरी : यह कैसी आवाज ?

आबीवू : उस कमबख्त उल्लू को कहो कि चुप रहे।

बिग बोय : यह मैं नहीं कर सकता। वो अपना काम कर रहा है, हमें खबर दे रहा है कि एक और…

आबीवू : एक और क्या ?

बिग बोय : एक और साथी—

[उल्लू के बोलने की आवाज अभी भी सुनाई देती है]

सेलीना : (भर्राई हुई आवाज से) क्या यह साथी यहीं रहने के लिए आ रहा है ?

बिग बोय : हां…जहन्नुम में आ रहा है…मगर इस कमरे में नहीं।

सेलीना : श श श श श(फुसफुसाकर धीरे से) तुम्हें आवाजें सुनाई देती है ?

बिग बोय : हां, जो साथी यहां आ रहा है उसके दोस्त और रिश्तेदारों की रोने की आवाजें हैं।

सेलीना : (धीरे से) खामोश, देखो, उन्हें देखो।

[कहीं दूर से, जैसे सिमेटरी में दफनाने के वक्त घंटी बजती है वैसी ही आवाज सुनाई देती है। आवाज धीरे-धीरे ऊंची होती है और नजदीक भी आती है। घंटी पांच दफे बजती है। हर घंटी के बीच थोड़ी-सी खामोशी होती है। जैसे ही आखिरी घंटी बज चुकती है, गाने की आवाज सुनाई देती है।]

आवाजें : (गाने की आवाज) मेरे भाई तुम कहां जा रहे हो ?

मैं ईश्वर के पास जा रहा हूं

मेरे भाई तुम कहां जा रहे हो ?

मुझे मेरा ईश्वर बुला रहा है।

हम जोरडन नदी के पास मिलेंगे

ईश्वर की महिमा गाते हुए

हम जोरडन नदी के पास मिलेंगे

तुम देवलोक जा रहे हो !

पादरी : (पादरी, पादरी कोलिनस ही है) ईश्वर ने ही जिंदगी दी और ईश्वर ने ही वापस ले ली । राम नाम सत्य है ।

आवाजें : आमीन !

पादरी : (मंत्र की तरह पढ़ता है) आओ, प्रार्थना करें…हे ईश्वर, इस तुच्छ मनुष्य की परीक्षा मत लो, क्योंकि तुम्हारी नजरों में किसी भी मनुष्य का जीवन पाप-मुक्त नहीं होगा । अगर हम कहते हैं कि हमने कोई पाप नहीं किया, तो हम अपने आपको धोखा देते हैं । हम सच्चे नहीं हैं । हम अपने पाप स्वीकार करते हैं, हमें माफ कर दो ।

आवाजें : आमीन !

पादरी : हे ईश्वर, हमारे इस भाई की आत्मा को सुख-शांति देना, देव-लोक मे इसकी आत्मा को सुख और शांति मिले ।

आवाजें : आमीन !

पादरी : इसकी आत्मा को शांति मिले ।

आवाजें : आमीन !

पादरी : फरिश्ते देवलोक की यात्रा में तुम्हारी सहायता करें, शहीद तुम्हारा स्वागत करें और देवलोक के गांधर्व लोरी सुनाकर तुम्हें हमेशा के लिए सुख की नींद सुला दें ।

[कब्र में कोफिन के नीचे जाने की आवाज सुनाई देती है, और लोगों के रोने की भी]

बिग बोय : खूबसूरत नजारा है । यह दाह-संस्कार मैं यहां बैठा-बैठा रोज देखा करता था और खास तौर से जब मैं तुम्हारा इंतजार कर रहा था ।

आबीबू : क्यों, इससे अच्छा काम नहीं था करने को ?

बिग बोय : इससे अच्छा काम ? यह भी कोई कहने की बात है ? मैं कितनी बार समझा चुका हू कि यह बात यहां पर बेमानी है, यहां पर कोई तुलना नहीं की जाती, यहां पर सब एक समान हैं, कोई किसी से अच्छा नहीं । जानवर, चिड़ियां, तुम, मैं, 'वो औरत, वो पादरी, यह कमरा, सब एक जैसे हैं, एक जैसे हमेशा-हमेशा के लिए और सदियों ऐसे ही रहेंगे, मुर्दे और बेजान ।

[जानवरों और चिड़ियों की बेसुरी आवाज सुनाई देती हैं, फिर खामोशी । बिग बोय चुपचाप खड़ा हो जाता है—चारों तरफ खामोशी छा जाती है । बिग बोय एक

तरफ चुपचाप खड़ा हो जाता है, सबसे अलग और बाकी कलाकार जो भी कहते हैं या करते हैं उसमें कोई हिस्सा नही लेता।]

सेलीना : (घबराई हुई) सब लोग खामोश क्यों हैं? (थोड़ी देर चुप रहती है, फिर जोर से चिल्लाकर) कोई कुछ कहता क्यों नहीं, तुम लोग बोलते क्यों नही? मैं यह खामोशी सह नहीं सकती, मैं इस कमरे में नही रह सकती, मैं पागल हो जाऊंगी, यह नर्क है। (जोर से चिल्लाती हैं) इस तरह खड़े होकर आखें फाड़ कर क्या देख रहे हो, कुछ बोलते क्यों नही? पादरी साहब तुम और कुछ नही कर सकते तो इस सन्नाटे को तोड़ने के लिए प्रार्थना करो। तुम, तुम मिस्टर आबीवू, तुम तो पुलिस के अफसर हो सी० आई० डी० के, मुझे गिरफ्तार क्यों नही कर लेते, मुझे यहां से बाहर निकालकर, अपने जेल में बंद कर दो (चिल्लाकर) मुझे गिरफ्तार करो।

आबीवू : अगर तुमने कोई जुर्म नहीं किया है।

सेलीना : (घबराई हुई है और तनाव में है) हां मैंने, हां मैंने जुर्म किया है। मैं कबूल करने को तैयार हूं अगर तुम वादा करो कि मुझे गिरफ्तार करोगे, तुम वादा क्यों नही करते?

आबीवू : नहीं, मैं यह नहीं कर सकता।

सेलीना : तुम कर सकते हो, तुम्हे करना ही होगा, तुम्ही तो कानून हो, तुम्हें इंसाफ करना ही होगा, मुझे सजा मिलनी ही चाहिए।

पादरी : तुम्हारे गुनाहों की सजा तुम्हे मिल रही है, अब इंसान के बनाए हुए कानून लागू नही होते। सब कुछ तुम्हारे हाथ है। तुम्ही जज हो, तुम्ही जूरी हो, तुम्हीं वकीले-सफाई और तुम्ही सरकारी वकील हो, यहां पर हम सबको यह करना ही होगा इसलिए ही हम सब यहां हैं।

सेलीना : क्या जो कुछ हम कबूल करेंगे वो इस बिग बोय के सामने करेंगे?

पादरी : तुम उसकी परवाह मत करो। वो सब कुछ जानता है। वो हमारे बारे में हमसे ज्यादा जानता है।

सेलीना : (रो पड़ती है) मुझे डर लग रहा है, मैं क्या करूं—मैं क्या करूं?

पादरी : बेटी, अपने गुनाहों को कबूल करके अपनी आत्मा को शांति दो, तुम्हारी आत्मा दुखी है, बेटी, तुम्हारी आत्मा दुखी है।

सेलीना : तुम मेरी मदद करोगे ? तुम मुझे समझने की कोशिश करोगे ?

पादरी : हम सब यहां पर इसीलिए आए हैं । एक-दूसरे को मदद करने के लिए, समझने के लिए, प्यार करने के लिए ।

सेलीना : कसूर उसी का था, उसने मेरे साथ सलूक ही ऐसा किया, मुझे यह करना ही पड़ा ।

पादरी : जो भी कुछ हुआ दोष उसको मत दो । अपने आप को दोषी समझो, जो लोग जिंदा हैं वो अक्सर दूसरों को दोषी समझते हैं ऐसा हमें नही सोचना चाहिए ।

सेलीना : क्या कहा तुमने ?

पादरी : यही कि तुम्हे अपनी सहेली को दोषी नही ठहराना चाहिए ।

सेलीना : तुम्हारा, मतलब डैजी से है ? पादरी साहब, तुम उसे नही जानते, वो मेरी सहेली नही सबसे बड़ी दुश्मन थी । उसने मेरे पति को मुझसे छीन लिया, हां, उसने उस पर कोई ऐसा जादू किया कि वो मुझ से नफरत करने लगे ।

पादरी : तुमने उसके साथ क्या किया ?

सेलीना : मैं यह बदनामी बर्दाश्त नही कर सकी, कितना अपमान ! वो उसे सब जगह अपने साथ ले जाते थे । कई बार मेरे सामने एक-दूसरे को प्यार करते थे, कोई बात छुपी नही थी । कोई राज राज न था, वो मुझे तलाक करके उससे शादी करने वाले थे । वो मुझे जहां भी मिलती मेरा मजाक उड़ाती; गलियों में, बाजार में, उसकी सहेलियों के सामने, मैं जहां भी जाती वो मेरा पीछा करती ।

पादरी : तुम्हारे पति तुम से प्यार करते थे ?

सेलीना : नहीं, वो मुझ से नफरत करते थे । उस डैजी की बदौलत । वो जवान थी, खूबसूरत थी ।

पादरी : तुमने कभी अपने पति को बताने की कोशिश की कि तुम उसे प्यार करती हो ?

सेलीना : वो मुझसे बात ही नही करते थे । घर ही नही आते थे और कभी आते थे तो सिर्फ कपड़े बदलने के लिए । मैं उनके लिए एक जिंदा लाश थी और कुछ नही । मैंने कई बार उनसे कहा कि घर वापस आ जाएं—बड़ी मिन्नत की, हाथ जोड़े, पांव पड़ी, मगर उन्होंने मेरी एक न सुनी ।

पादरी : तो ?

सेलीना : तो''' (रोने लगती है) तो डैजी के बच्चा होने वाला था—

उनका बच्चा ! ऐसा नहीं था कि मैं मां नहीं बन सकती थी (रोते हुए) मैं यह अच्छी तरह से जानती थी कि अगर उसके बच्चा हो गया तो हमारी शादी टूट जाएगी। मैंने यह तय किया कि मैं यह नहीं होने दूंगी। मैंने कई तरकीबें सोचीं—आखिर में एक सूझी, उसमें पैसे तो लगे मगर उसे कोई दर्द नहीं हुआ मैंने पाकेमोह वैद्य को पैसे दिए और उसने सब कुछ कर दिया।

आबीबू : (हुक्म जताता हुआ) क्या किया उसने?

पादरी : धीरज रखिए, मिस्टर आबीबू, धीरज रखिए—

सेलीना : उसने उसकी जीवन-ज्योति को बुझा दिया।

पादरी : मार डाला उसको? कैसे?

सेलीना : हां, मैंने मार डाला उसको...जब वो मरी तो वो पसीने से तरबतर थी।

पादरी : तुमने उसे किस तरह से मारा?

सेलीना : पाकेमोह ने कुछ ऐसा जादू किया कि एक छोटे-से कांच के टुकड़े में उसकी शक्ल दिखाई दी। मुझे कहा कि मैं उसे अपने बायें हाथ में पकड़ लूं। फिर मेरे दायें हाथ में एक हथोड़ा दिया। जब डैजी की शक्ल उस कांच में दिखाई दी तो मैंने हथौड़ा मार कर उस कांच को टुकड़े-टुकड़े में तोड़ दिया। बस मुझे यही करना था। जैसे ही कांच टूटा डैजी मर गई।

पादरी : मगर...सेलीना...

सेलीना : मुझे हमदर्दी मत दिखाइए—मुझे हमदर्दी नहीं चाहिए। मैंने उसे मार डाला—अकेले मुझे अभी भी साफ-साफ दिखाई देता है, मैं उससे नफरत करती थी। मैं डैजी से नफरत करती थी। वो मेरे और मेरे पति के बीच आई, मेरी तमाम खुशियां छीन ली, मेरा प्यार छीन लिया उसने मेरा सब कुछ छीन लिया। सब कुछ बिल्कुल नंगा करके छोड़ दिया था। मेरे पास मेरा कुछ भी नहीं रह गया था—कुछ नहीं, समझे—तुम समझे !!

पादरी : हां...हां...शायद...

सेलीना : अब मिस्टर आबीबू, तुम अब मुझे गिरफ्तार करो—तुम्हें गिरफ्तार करना ही होगा।

आबीबू : मगर मैं यह कैसे कर सकता हूं? मैं भी यहां पर तुम्हारी तरह ही हूं, मेरी रूह भी गुनाहगार है। जिस तरह से बिगबोय ने

कहा था, मैं यहां पर हमेशा-हमेशा के लिए रहने आया हूं, मैं अब कुछ भी नही हू, पुलिस का बड़ा अफसर भी नही। मैं एक मुर्दा हूं गुनाहगार रूह, अपने गुनाहों की सजा भुगतने के लिए मुझे यहां पर भेजा गया है ताकि मैं हमेशा जुल्मो सितम सहता रहूं! (चिल्लाकर) क्या तुम देख नही सकते कि हम सबको सताया जा रहा है। उसको देखो क्या वो हमारी हालत पर हंस नहीं रहा? आवाज दो उसको।

पादरी : (बिगबोय को बुलाता है) बिगबोय···बिगबोय···

सेलीना : (पादरी के साथ) बिगबोय···बिगबोय···

आबीबू : तुम क्या सोचते हो वो एकदम से चुप क्यों हो गया। बिगबोय तुम जवाब क्यो नही देते? बोलो, तुम तो जानते हो हमें यहां क्यों लाया गया है। सताने के लिए, जुल्म ढाने के लिए। मगर क्यों? ऐसा कौन है जो हमारी रूह पर जुल्म ढाना चाहता है? हमारे जिस्म जमीन में छः फुट नीचे गड़े हुए हैं, कीड़े-मकोड़ों के खाने के लिए, हां, हमारे जिस्म सिर्फ कीड़े-मकोडो के खाने के लिए रह गए हैं। क्या यह सजा काफी नही, फिर हम तीनों को क्यों इस काल कोठरी मे बंद किया गया है? हमें छोड़ दो, हमारी रूह को आजादी दो, मेरी गुनाहगार रूह को जहा वो चाहे जाने दो।

पादरी : मिस्टर आबीबू, तुम तो कारण जानते थे। तुम यह अच्छी तरह से जानते हो कि इंसान के बनाए हुए कानूनों को तोडना जुर्म है। और जुर्म की सजा मे जुर्माना देना पड़ता था। जेल जाना पड़ता था। और मौत की सजा भी मिलती थी।

आबीबू : हां, यह मैं जानता हू।

पादरी : इंसान के बनाए हुए कानून सिर्फ जिस्म को सजा दे सकते हैं, मगर यहां जहन्नुम में हम यह नही जानते कि भगवान हमारे जिस्म को नही हमारी आत्मा को कैसे और क्यों सजा देना चाहता है।

आबीबू : मैं अपने आप को बिल्कुल नंगा पा रहा हूं।

सेलीना : हम सब नगे है। हमारी आत्माएं नंगी हैं।

पादरी : नही, हम नगे नही हैं, हम सबने पाप का चोगा पहन रखा है, उन पापों का जो माफ नही किए जा सकते।

आबीबू : (अपने जजबात पर काबू करते हुए) गुनाह···गुनाह···गुनाह ···या खुदा मैंने गुनाह किया है, मैं कबूल करता हूं मैंने गुनाह

किया है, मगर वो मेरा फर्ज था। एक पुलिस अफसर का फर्ज है कि वो समाज की हिफाजत करे। जब तक कानून को लागू न किया जाए, किसी भी मुल्क मे अमन और चैन का होना मुश्किल है। लोग पुलिसमैन से इतनी नफरत क्यों करते हैं, सिर्फ इसलिए कि वो पुलिसमैन है। ऐसा क्यों होता है?

पादरी : अब तुम पुलिस अफसर नही रहे।

आबीबू : मैं जानता हूं, मगर लोगों को कानून को मानना चाहिए। कानून उन्होने बनाए हैं, उनको मानना उनकी इज्जत करना उनका फर्ज है, उन्हे पुलिसमैन की भी इज्जत करनी चाहिए। अगर खुदा फिर से मुझे जिन्दगी दे तो मुझे एक बार फिर से पुलिसमैन होना मंजूर है, चाहे मुझे फिर से इंसाफ, कायदे-कानून लागू करने पड़ें, अच्छे समाज के लिए यह बहुत जरूरी है कि वो इन सबको मानें।

पादरी : समाज! क्या अब भी तुम समाज के बारे में सोचते हो?

आबीबू : मुझे वो नज्जारा अभी भी साफ दिखाई देता है, मैंने अपनी मां को जेल भिजवाकर समाज मे हलचल मचा दी थी। मैंने उसे गिरफ्तार किया, क्योंकि वो कानून की नजरो में गुनाहगार थी—हा मैंने उसे गिरफ्तार किया था।

सेलीना : उसका कसूर क्या था?

आबीबू : मैंने कई बार उसको समझाया मगर उसने मेरी एक न सुनी और आखिर में मुझे उसको जेल मे डालना ही पड़ा। बड़ी अजीब औरत थी। जब मैंने उससे कहा, "अम्मा, घर मे शराब बनाने के जुर्म में तुम्हे मेरे साथ पुलिस स्टेशन चलना होगा।" वो जानती थी कि मैं मजाक नही कर रहा था, वो मेरी बात सुनकर सिर्फ मुस्कराई—और वो मुस्कराहट उस दिन तक उसके होंठों पर रही, जब जज ने उसको तीन महीने की सजा सुनाई। जिस तरह उसने गिरफ्तारी की कोई खिलाफत नही की थी वैसे उसने जज के सामने भी कोई सफाई पेश नही की, सिर्फ मुस्कराती रही, एक अजीब मुस्कराहट। जैसे औरो को जेल जाते देखता था वैसे मैं खड़ा-खड़ा अपनी प्यारी अम्मा को भी जेल जाते देखता रहा।

सेलीना : यह सब करके तुम क्या साबित करना चाहते थे? मेरा मतलब यह सब करने को तुम्हे किसने उकसाया? ऐसा तुमने क्यों किया?

आबीवू : यह मेरी ड्यूटी थी—मेरा फर्ज था।

पादरी : आबीवू, भगवान से प्रार्थना करो कि वो तुम्हें माफ कर दें।

आबीवू : प्रार्थना ! पादरी साहब, मुझे नमाज पढ़नी नहीं आती, मैंने अपनी जिन्दगी में कभी नमाज नहीं पढ़ी। जब मैं हाड़-मांस का बना इंसान था, जीता-जागता करीम आबीवू-तब मैं कभी भी किसी मस्जिद या चर्च के नजदीक नहीं गया। मैं एक सख्त, संगदिल इंसान था जो लोगों को सिखाता था कि जिन्दगी किस तरह से जीनी चाहिए, मगर यह जानने की सख्त जरूरत मुझी को थी।

[बिगबोय यह सुनकर एक लम्बे अर्से तक हंसता है।]

सेलीना : (जोर से चिल्लाती है) चुप रहो।

बिगबोय : यह मेरी ड्यूटी है कि मैं जब चाहूं हंसूं, इससे तुम लोगों को अपने पाप को भुलाने में मदद होगी।

सेलीना : खामोश'''सुनो।

[कदमों की आवाज फिर सुनाई देती है।]

बिगबोय : जब तुम अपने गुनाहों को कबूल करोगे, तो मैं बीच-बीच में तुम्हें टोकता रहूंगा।

पादरी : क्यों ?

[कदमों की आवाज नजदीक आती है।]

बिगबोय : इसकी कोई वजह नहीं है।

आबीवू : (चिल्लाता है) खामोश !

[कदमों की आवाज दरवाजे तक आकर बाहर रुक जाती है।]

सेलीना : (थोड़ी देर रुकने के बाद) क्या वो यहां आ रहा है !

बिगबोय : मैं कितनी बार तुम्हें बता चुका हूं कि यहां पर कोई नहीं आयेगा—परेशान होने की कोई जरूरत नहीं, यहां पर कोई नहीं आयेगा कभी नहीं।

[दो-चार कदम चलने की आवाज आती है, फिर बंद हो जाती है। सन्नाटा-सा छा जाता है।]

पादरी : सुनो'''रुक गया (जोर से आवाज देता है) कौन है ! अन्दर आना चाहते हो तो आ जाओ।

[कदमों की आवाज दूर जाने लगती है।]

पादरी : सुनो, जो भी तुम्हे यहां बार-बार भेजता रहता है, उससे जाकर कहो (चिल्लाकर) क्या तुम मुझे सुन सकते हो ? उससे जाकर

कहो कि हम यहां हैं—हमेशा के लिए जुल्म सहने के लिए, जिस हाल मे रखा जाए उसमें रहने के लिए। (जानवरों की आवाजें सुनाई देती हैं।)

आबीवू : यह साले जानवर, यह सब मर क्यों नही जाते !

सेलीना : वो हमारे पड़ोसी हैं'''हमेशा के लिए।

पादरी : हमेशा के लिए, हमारे भाग्य में यही लिखा था, कि हमेशा हम जानवरों और चिड़ियों की आत्माओं के पड़ोस मे रहेंगे ! (सब हंसते हैं, बिगबोय उन सबसे तेज हंसता है) खुदा के वास्ते चुप रहो (जोर से चिल्लाता है) खामोश'''(मौन) कितना भयानक '''कितना भयानक है इस कालकोठरी में रहना !

बिगबोय : तुमने कैसी भी जिन्दगी बिताई हो, अच्छी याबुरी मगर पादरी साहब, तुम्हें आखिर मे आना तो यही पड़ता, इसी काल कोठरी मे।

पादरी : मैं धर्मात्मा आदमी हूं, अपना पूरा जीवन पूजा-पाठ में बिताया है, तमाम लोगो में, चाहे बड़े हों या छोटे, किसी भी जात के हों, किसी भी देश के हों, बाईबल का प्रचार किया, जो बिछुड़ गए उनका फिर से मिलन करवाया, जो हताश थे उन्हें दिलासा दिया, गरीबों की मदद की, अमीरों को सलाह दी, जैसे धर्म-ग्रंथो मे लिखा था वैसे ही किया।

आबीवू : पादरी साहब, तुम्हारे धर्म ने तुमको धोखा दिया।

पादरी : नही धर्म को मैंने धोखा दिया है, और इसीलिए मैं यहां हूं। जहन्नुम में मै एक निकम्मा पुजारी हूं, पापी हूं, मुझे मुक्ति नहीं मिलेगी। मैंने किसी को मारा नहीं, किसी को जेल में नहीं डाला—मगर इन सबसे ज्यादा भयंकर गुनाह मैंने किया है।

सेलीना : *क्या किया तुमने ?*

पादरी : मेरे मन में मेरे बिशप के लिए नफरत थी—उस की उम्र मुझ से कम थी, तजुर्बा भी कम था, मगर वो मुझसे ज्यादा कामयाब था। उसमे तमाम खूबियां थी। ईमानदार था, मेहनती था। मेरे रास्ते में वो एक रोड़ा था। हालांकि मैं उससे हंसकर और प्यार से मिलता था, मगर मेरे मन मे उसके लिए बेहद नफरत थी—मेरी खुशियां, मेरा चैन, मेरा भविष्य यह सब मेरे लिए बहुत अहमियत रखते थे, मैं खुद बिशप बनना चाहता था।

सेलीना : आखिर में हुआ क्या ?

पादरी : मैंने बिशप बनने की पूरी कोशिश की मगर मेरी उम्मीद पूरी

नही हुई, मैं दिन-रात प्रार्थना करता रहा और उम्मीद पर जिन्दा रहा। सुबह से शाम होती गई, दिन गुजरते गए, मगर मेरी उम्मीद कभी पूरी नहीं हुई।

आबीबू : मगर फिर भी तुम सुबह-शाम भगवान की प्रार्थना करते रहे !

पादरी : मैंने हर कोशिश की मगर आखिर मे कोई उम्मीद बाकी नहीं रही। मेरा घमंड चूर-चूर हो गया, मेरे सुनहरे सपने जिनको मैं देख-देख कर खुश हुआ करता था, वो सब टूट गए। धीरे-धीरे वो डरावने बन गए, मैं उनसे डरने लगा और फिर कुछ नहीं रहा, कुछ भी नही। चारों तरफ खालीपन-ही-खालीपन महसूस होने लगा, सिर्फ खालीपन और कुछ नही···

आबीबू : कुछ नही···

सेलीना : *कुछ नही···हमारा यहां क्या हाल होगा ?*

पादरी : कुछ नही, कुछ नही, जो हाल है बस यही रहेगा।

आबीबू : ···हमे यहा से छुड़ाने के लिए कोई नही आएगा ?

पादरी : कोई नही, कभी नहीं।

सेलीना : हम यहां से बाहर नही जा सकेंगे !

पादरी : कभी नही, यही हमारी हैयाते जांविदां है यही हमारी मुक्ति है।

आबीबू : कितना अजीब है। हममे से एक आदमी भी वापस दुनिया में जाकर उन सबको बता पाता कि यहां पर क्या है···

पादरी : हां···उनको यह बता पाते कि यहा पर कोई जोरडन नदी नही है, कोई देवलोक नही है···सिर्फ···सिर्फ···

सेलीना : *दोस्तो, अपने पर भरोसा रखो···*

[सेलीना जोर-जोर से हंसने लगती है। बाकी सब भी यही करते हैं। धीरे-धीरे उनकी हंसी बढ़ती जाती है, उस पर कोई काबू नही रहता। धीरे-धीरे हंसी बन्द होती है और जानवरों की आवाज ऊंची होती जाती है—थोड़ी देर खामोशी होती है। फिर कदमों की आवाज सुनाई देती है—चारो तरफ खामोशी छा जाती है, कदमों की आवाज साफ सुनाई देती है और फिर रुक जाती है और चारों तरफ खामोशी छा जाती है।]

नग्मा-ए-मौत



तौफीक-अल-हकीम (TEWFIK-AL-HAKIM)

तौफीक-अल-हकीम का जन्म 1902 ई० में Alexandria मे हुआ। यह मिस्र के रहने वाले हैं। अनकरीब 1930 ई० मे साहित्य मे इनका नाम हुआ और तब से लेकर अब तक अरब के सबसे मशहूर साहित्यकार हैं। सत्तर से ज्यादा नाटक लिख चुके हैं। और इनके बहुत सारे नाटक यूरोप की कई भाषाओ में अनुवाद हो चुके हैं। काहिरा (Caira) मे एक थियेटर इनके नाम से मशहूर है।

पात्र

मवरूका
असाकीर
सूमेदा
अलवान

[उत्तरी मिस्र मे एक किसान का मकान। दरवाजे के पास दो औरतें काले कपड़े पहने बैठी हैं। उनका नाम है असाकीर और मबरूका। उनसे कुछ ही दूर पर एक बछड़ा और बकरी घास-फूस खा रहे हैं, दोनों औरतें सर झुकाए हुए चुपचाप बैठी हैं। थोड़ी देर बाद रेलगाड़ी के स्टेशन पर आने की आवाज़ आती है।]

मबरूका : (सर उठाकर) वो गाड़ी की ही आवाज है न ?

असाकीर : (बग़ैर हिले) तुम क्या सोचती हो वो इस गाड़ी से आया है ?

मबरूका : कल जो ख़त उस्ताद शेख मोहम्मद अल-दुसनवी ने हमें पढ़कर सुनाया था, क्या उसमे यह नही लिखा था ?

असाकीर : मबरूका, तुमने किसी को बताया तो नही कि वो मेरा बेटा है ?

मबरूका : मैं क्या पागल हू ? तुम्हारा बेटा अलवान कुएं मे डूबकर मर चुका था। जब वो सिर्फ दो साल का था। यह तमाम गांव जानता है।

असाकीर : मगर अभी भी उनको यकीन नही है।

मबरूका : किनको—तहावीयों को न ?

असाकीर : तुम्हारे बेटे सूमेदा ने जो कुछ बाज़ार मे सुना वो तुम्हें बताया नही ?

मबरूका : क्या सुना उसने ?

असाकीर : उसने भीड़ मे किसी को यह कहते हुए सुना था कि या तो अजीज़ीयों के यहां सिर्फ औरतें ही रह गई हैं या उन्होंने बदला लेने के लिए किसी को छुपा रखा है जो उसके भाई सूमेदा से रिश्ते मे ज्यादा नजदीक है।

मबरूका : हां, मेरे बेटे सूमेदा ने मुझे बताया था। गाव वाले अगर ऐसा नही सोचते तो उसका सर उठाकर चलना मुश्किल हो जाता।

असाकीर : उनको आज यह मालूम हो जाने दो कि जिसका कत्ल किया था उसका बेटा जिन्दा है, वो अब मर्द है, उसे किसी से डरने की कोई वजह नहीं। मुझे अब डरने की कोई जरूरत नही। जिसने इतने साल डर-डर के बिताए हैं, अब डर के मारे उन लोगों की नीद हराम हो जाएगी। ऐ रेलगाड़ी उसे जल्दी ला—बहुत जल्दी। मैंने बहुत इंतजार किया है। सत्रह साल—जिसका पल-पल मैंने गिनकर बिताया है। यह सत्रह

साल मैंने इस तरह से गुज़ारे हैं जैसे किसी बूढ़ी गाय के थनों से बूंद-ब-बूंद दूध टपकता हो ।

मबरूका : (गाड़ी की सीटी की आवाज सुनते हुए) स्टेशन पर गाड़ी आ रही है। मेरा बेटा सुमेदा, वहां उसको इंतज़ार करता हुआ मिलेगा ।

असाकीर : (जैसे अपने आप से बात कर रही हो) हां ।

मबरूका : (उसकी तरफ घूमकर) क्या हुआ, असाकीर ? तुम कांप रही हो ?

असाकीर : (जैसे अपने आप से बात कर रही हो) सुमेदा के आने से मुझे मालूम हो जाएगा ।

मबरूका : क्या मालूम हो जाएगा ?

असाकीर : कि वो आया है कि नहीं ।

मबरूका : क्या तुमने मेरे बेटे से यह कहा है कि वो अलवान के आने की खबर तुम्हें आकर बताए ?

असाकीर : हां, जैसे ही डिस्ट्रिक्ट दफ्तर के पास आएं ।

मबरूका : हिम्मत रखो, असाकीर, हिम्मत रखो; बहुत कुछ बीत चुका है, मगर अभी भी थोड़ा वक्त बाकी है ।

असाकीर : मैं अब किसी से कमजोर नहीं, मुझे किसी से डर नहीं ।

मबरूका : डरने का वक्त तो बीत चुका । अब कभी वापस नहीं आएगा । मैं वो दिन कभी नहीं भूल सकती जब रात को एक टोकरी में तुम्हारे बेटे अलवान को छुपाकर मैं काहिरा ले गई थी तुम्हारे रिश्तेदार के पास जो एक इत्र की दुकान, जो सैय्यद अल हुसैन मोहल्ले में थी, पर काम करता था ।

असाकीर : मैंने उससे कहा था । इसे कसाई की तरह बड़ा करना ताकि चाकू का ठीक इस्तेमाल कर सके ।

मबरूका : मगर उसने तुम्हारी यह ख्वाहिश पूरी नहीं की ।

असाकीर : नहीं, उसने तो पूरी की थी, जब वो सात साल का था तो उसे एक कसाई के यहां रखा था, मगर वो लड़का ही भाग गया था ।

मबरूका : अल-अज़हर यूनिवर्सिटी में दाखिला लेने ।

असाकीर : मैं पिछली साल उससे मिलने गई थी वो अमामा और गिद्दा पहने हुए था । बहुत हसीन लग रहा था । मैंने उससे कहा, "काश, आज तुम्हारे वालिद तुम्हें देखते तो वो कितने खुश होते" . मगर इन लोगों ने यह सब कुछ नहीं होने दिया, वो अपने बेटे को बड़ा होते नहीं देख सका । इन तमाम खुशियों से गाफिल ही रहा ।

मबरूका : अगर वो कसाई की दुकान पर रहता तो अच्छा होता न ?

असाकीर : ऐसा क्यों कहती हो मबरूका ?

मबरूका : यू हीं, ऐसे ही ख्याल आ गया।
असाकीर : मैं सब समझती हूं।
मबरूका : क्या समझती हो असाकीर ?
असाकीर : तुम्हें इस बात का दुख होता है कि मेरा बेटा अमामा और गिद्दा पहनता है और तुम्हारा बेटा सर पर वहीं टोपी और किसानों का चोगा पहनकर घूमता है।
मबरूका : खुदा की कसम मैंने ऐसा कभी सोचा भी नहीं था।
असाकीर : तो फिर अलवान का अल-अजहर यूनिवर्सिटी में जाना तुम्हें क्यों अखर रहा है ?
मबरूका : मुझे बिलकुल नहीं अखर रहा। खुदा की कसम। मुझे'''सिर्फ डर लग रहा है।
असाकीर : डर ? कैसा डर ?
मबरूका : यही कि वो चाकू को ठीक से इस्तेमाल करना नहीं जानता होगा।
असाकीर : यकीन करो मबरूका यकीन करो। तुम उसे देखोगी तो मालूम होगा। अलवान अब एक नौजवान मर्द है, उसके बाजुओं में वही ताकत है जो अजीजीयो के बाजुओं में हुआ करती थी।
मबरूका : (गाड़ी की सीटी को सुनते हुए) स्टेशन से गाड़ी जा रही है।
असाकीर : जाने दो उसे जहां जाना चाहे। बस हमारे अलवान को ले आए। ताकि वो उस खूनी को मारकर उसकी सड़ती हुई लाश को कुत्तों के लिए छोड़ दे।
मबरूका : और अगर वो नहीं आया तो ?
असाकीर : ऐसा क्यों कहती हो मबरूका ?
मबरूका : यूं ही कभी-कभी शक होता है।
असाकीर : यहां आने में उसे कौन रोक सकता है ?
मबरूका : और भला यहां कौन-सी कशिश है जो उसे काहिरा और अलअजहर की खूबसूरत जिन्दगी से खींच लाएगी ?
असाकीर : यहां वो पैदा हुआ, और बदला लेने के लिए उसे लहू पुकार रहा है।
मबरूका : काहिरा से हमारा गांव कितना दूर है, क्या लहू की आवाज़ वहां तक पहुंच सकती है ?
असाकीर : तुम क्या सोचती हो वो नहीं आएगा ?
मबरूका : मैं उतना ही जानती हूं असाकीर जितना तुम जानती हो।
असाकीर : और वो ख़त जो उस्ताद ने हमें पढ़कर सुनाया था ?
मबरूका : तुम्हें याद है उसमें उसने लिखा था, "अगर मौका मिला तो आऊंगा।" किसे मालूम उसे मौका मिला या नहीं।

असाकीर : मेरी हिम्मत को मत तोड़ो मबरूका,—मेरी उम्मीदों को तबाह न करो। जब मैंने गाड़ी की सीटी की आवाज़ सुनी तो मेरे दिल में खुशी की लहर दौड़ी थी। मुझे ऐसा मालूम हुआ कि इतने बरसों का मातम खत्म होने को है, अगर अब अलवान नहीं आया तो मेरा क्या हाल होगा? मुझे कितने साल और इंतजार करना होगा?

मबरूका : यहां से स्टेशन और डिस्ट्रिक्ट दफ्तर दूर नहीं हैं, अगर वो आया होता तो अभी तक सूमेदा के गाने की आवाज सुनाई पड़ जाती।

असाकीर : मुमकिन है कि वो आराम से टहलते बातें करते हुए आ रहे हों। उन्हें मिले तीन साल से ज्यादा हो गए। पिछली बार तुम्हारा बेटा सय्यदल-अल हुसैन की सालगिरह के मौके पर काहिरा गया था।

मबरूका : अगर वो आया होता तो मेरे बेटे को इतनी खुशी हुई होती कि दफ्तर पहुंचने से पहले ही गीत गाना शुरू कर देता।

असाकीर : मुमकिन है कि वो भूल गया हो।

मबरूका : नहीं, वो भूल नहीं सकता।

असाकीर : (सुनने की कोशिश करते हुए) मुझे गाने की आवाज सुनाई नहीं देती।

मबरूका : (सुनने की कोशिश करती है) मुझे भी।

असाकीर : कोई नहीं गा रहा है। गडरिया भी तो नहीं गा रहा। खंडहरों में उल्लू भी नहीं बोल रहा। मबरूका, मुझे यकीन होता जा रहा है कि वो वाकई में नहीं आया।

मबरूका : (जैसे अपने आप से बातें कर रही हो) मेरा दिल कुछ और ही कह रहा है।

असाकीर : मेरा दिल जो कब्र की तरह बंद था, पत्थर की तरह सख्त था। वो मुझे कुछ बताना चाहता है।

मबरूका : क्या बताना चाहता है?

असाकीर : उसकी बाबत जो कुछ होने वाला है।

मबरूका : क्या बताना चाहता है? मुझे भी तो बताओ।

असाकीर : (गौर से सुनते हुए) खामोश, मबरूका, तुम्हें कुछ सुनाई दे रहा है? गौर से सुनो, कुछ सुनाई दे रहा है?

मबरूका : सूमेदा के गाने की आवाज।

असाकीर : या अल्ला—कितनी खुशी है!

[दोनों बहुत गौर से सूमेदा का गाना सुनते हैं, जो स्टेज के बाहर से सुनाई देता है, और जैसे-जैसे नजदीक आता जाता है वैसे उसके लफ्ज साफ सुनाई देने लगते हैं।]

सूमेदा : "दोस्त कितने बहाने हमने बनाये

कितने इरादों को तोड़कर पछताये
फिर भी तुम्हारी शिकायतें यूं ही रही
तो हमने अपने गरेबां को तार-तार किया
जब भी सुना अपने वालिद के बारे में—
शर्म के मारे मेरा सर झुक-झुक गया—
मेरी इन फटी-फटी दोनों आंखों से
यूं बेसाख्ता आंसू बहते रहे।"

असाकीर : वो आ गया क्या ? अलवान आ गया ? आज मैं इन शर्मनाक चीथड़ों को फाड़कर फेंक दूंगी। नये कपड़े पहनकर शान और इज्जत के साथ बाहर निकलूंगी।

मबरूका : और जो मार डाला गया था उसका शानदार जनाजा निकालेंगे।

असाकीर : उसकी रूह को सकून मिले इसलिए बकरे और बछड़े की कुरबानी चढ़ाएंगे।

मबरूका : आज कितनी खुशी का दिन है ! (वो खुशी के मारे चिल्लाने को ही है कि···)

असाकीर : (उसे रोकती है) अभी नहीं। वक्त से पहले राज फाश हो जाएगा।

मबरूका : ओ सूवेलम तहावी, अब तू सिर्फ चंद घंटों का मेहमान है।

[दरवाज़े पर दस्तक होती है। असाकीर जल्दी से दरवाज़ा खोलती है। सूमेदा एक बक्सा हाथ में लिए अन्दर आता है।]

सूमेदा : मैं शेख अलवान को ले आया हूं।

[बक्से को नीचे रखता है, और उसके पीछे-पीछे अलवान अदर आता है।]

असाकीर : (अलवान को अपनी बाहों में लेने के लिए अपनी बांहें फैलाकर उसकी तरफ जाती है) अलवान मेरे बेटे !

अलवान : (अपनी मां की पेशानी को चूमते हुए) मां !

असाकीर : (अलवान से कहती है) मबरूका चाची को आदाब करो बेटे !

अलवान : (उसकी तरफ मुखातिब होकर) आदाब, आप कैसी हैं चाची ?

मबरूका : अलवान बेटे, हम दोनों वैसी ही है जैसी तुम छोड गए थे, हमारी तमाम उम्मीदें अब तुम्ही पर हैं।

सूमेदा : अम्मा, चलो अब हम अपने घर चलें।

मबरूका . असाकीर, तुम्हारी तमाम उम्मीदें बहुत जल्दी ही पूरी होने वाली हैं।

[मबरूका अपने बेटे सूमेदा के साथ बाहर चली जाती है। स्टेज पर सिर्फ असाकीर और अलवान रह जाते हैं।]

असाकीर : अलवान बेटे, तुम्हें भूख नहीं लगी ? मैंने तुम्हारे लिए दही का कटोरा

रखा है।

अलवान : नही अम्मा, मुझे भूख नहीं है, गाड़ी पर कुछ अंडे और रोटी खा ली थी।

असाकीर : प्यास भी नही लगी?

अलवान : प्यास भी नही।

असाकीर : नही, तुम हमारी रोटी और पानी पीने के लिए नहीं आए हो। तुम आए हो उसका गोश्त और खून पीने।

अलवान : (जैसे वो कोई सपना देख रहा हो) अम्मा, मैं यहाँ बहुत कुछ करने को आया हूं।

असाकीर : मैं जानती हूं बेटे, जानती हूं, तुम यही ठहरो, मैं तुम्हें कुछ चीज़े दिखाना चाहती हूं जो तुमने पहले कभी नही देखी। (वो जल्दी से अन्दर वाले कमरे में चली जाती है।)

अलवान : (चारों तरफ नजर दौड़ाकर मकान को देखता है) अम्मा, मैं यह क्या देख रहा हूं! तुम्हारे घर में अभी तक वही जानवर, उनकी मेंगनी, इस पानी के गंदे मटकों से पैदा कीचड़, यह बड़ी-बड़ी जलाने के लिए लकड़ियां और वही फूस की छत जो कभी भी गिर सकती है!

असाकीर : (कमरे से बाहर आती है। उसके हाथ में खुर्जी है जो अपने बेटे के सामने लाकर डालती है) तुम्हें दिखाने के लिए मैंने इन सबको सत्रह साल से रखा है।

अलवान : (वहीं खड़ा-खड़ा खुर्जी देखकर) यह क्या है?

असाकीर : इसी बोरे में तुम्हारे वालिद की लाश गधे पर लादकर मेरे पास भेजी थी। इसमे सर था और बाकी में लाश जो कि टुकडे-टुकड़े मे काटी हुई थी। उन्होंने उसी को चाकू से मारा और लाश के साथ इसी बोरे में बन्द कर दिया। देखो यही वो चाकू है, आज दिन तक मैंने इसे खून से ऐसे ही लथपथ रखा। इसीलिए जंग लग गया है। मैंने तमाम चीजें संभाल कर रखी है, सिर्फ उस गधे के अलावा जो तुम्हारे वालिद की लाश लाया था। वो बूढ़ा होकर मर गया।

अलवान : और यह सब किसने किया?

असाकीर : सुवेलम तहावी ने।

अलवान : तुम कैसे जानती हो?

असाकीर : तमाम गांव जानता है।

अलवान : हां, यह तुमने मुझे बताया था। जब भी तुम काहिरा मेरे पास आती थी तो उसका नाम बार-बार बताती थीं। उस वक्त मैं बच्चा था। कुछ सोच नही सकता था। इसीलिए मैंने इसके बारे में तुम से

बहस नहीं की। मगर आज मैं सब कुछ जानना चाहता हूं। इसका क्या सबूत है? क्या कत्ल की तहकीकात की गई थी?

असाकीर : तहकीकात?

अलवान : हां, District Appooney ने क्या फैसला किया था?

असाकीर : District Appooney? शर्म करो। हम अजीजी भला डी० ए० के दफ्तर जाकर फरियाद करेंगे? कभी तहावीयों ने ऐसा किया है?

अलवान : District Appooney? ने तुम से कोई पूछताछ नहीं की।

असाकीर : पूछा था। हमने कह दिया हमें कुछ नहीं मालूम, हमने लाश को देखा तक नहीं। हमने चुपचाप से रात में तुम्हारे वालिद को दफना दिया।

अलवान : (जैसे अपने आप से बात करता हो) इसलिए कि हम बदला ले सकें।

असाकीर : उसी चाकू से जिससे तुम्हारे वालिद को मारा था।

अलवान : और कातिल कहां है?

असाकीर : जिन्दा है—अभी भी जिंदा है। ऐसी कोई शेख की मजार न होगी, कोई मस्जिद न होगी। कोई पीर न होगा, जिसकी दहलीज़ पर जाकर मैंने सिजदा न किया हो। हर जगह हर बार मैंने खुदा से यही इबादत की वो उसे जिन्दगी बख्शे, तेरे आने तक उसे जिन्दा रखे ताकि तू अपने हाथों से उसे मार सके।

अलवान : अम्मा, तुम्हें पूरा यकीन है कि उसी ने मारा है?

असाकीर : सिवाय तहावीयों के हमारा और कोई दुश्मन नहीं।

अलवान : और सही तौर पर तुम कैसे कह सकती हो कि सूवेलम तहावी ने ही मारा है?

असाकीर : इसलिए कि उसे पूरा यकीन है कि उसके वालिद को तुम्हारे वालिद ने मारा।

अलवान : और क्या वाकई में मेरे वालिद ने उसके वालिद को मारा?

असाकीर : खुदा जाने।

अलवान : इन दोनों कुनबों में यह दुश्मनी कब से चली आ रही है?

असाकीर : मुझे नहीं मालूम किसी को नहीं मालूम, बहुत पुरानी दुश्मनी है। बस हम सिर्फ यही जानते हैं कि हमारे और उनके बीच सदियों से खूनी दुश्मनी चली आ रही है।

अलवान : हमारे पड़दादा के बछड़े ने उनके पड़दादा के यहां पानी पी लिया होगा, और यहीं से यह दुश्मनी शुरू हो गई होगी।

असाकीर : इसकी जानकारी उस खुदा के पास है जो सब कुछ जानता है। लोग सिर्फ यह जानते हैं कि अजीजीयों और तहावीयों के बीच खून की नदियां बहती हैं।

अलवान : उनकी सिंचाई से कोई सब्जी और फल पैदा नही होते ।

असाकीर : (अलवान की बात को न सुनते हुए अपनी बात कहती चली जाती हैं) तुम्हारे वालिद के कत्ल के बाद उनका बहना बन्द हो गया । इसलिए कि तुम बहुत छोटे थे । साल गुजरते गए और नदियां सूखती गईं । लोग कानाफूसी करने लगे, अफवाहें फैलाने लगे । मैं गुस्से में तड़पती रही। इस दिन के इन्तजार में मैं अपने गुस्से को जब्त किए बैठी रही। वो दिन आज आ गया है । उठो बेटे, मेरे सीने में जो आग लगी है उसे बुझा दो, सूवेलम तहावी के खून से मेरी प्यास बुझा दो ।

अलवान : और सूवेलम तहावी के कोई बेटा है ?

असाकीर : हां । चौदह साल का ।

अलवान : तो मेरी जिन्दगी के कुल चार पांच साल ही बचे हैं ।

असाकीर : यह क्या कह रहे हो ?

अलवान : (अपनी बात को जारी रखते हुए) क्योंकि इतने में वो नौजवान हो जाएगा और फिर मेरे साथ वही सलूक करेगा जो मैं उसके वालिद के साथ करूंगा ।

असाकीर : अलवान, क्या तुम मौत से डरते हो ?

अलवान : और तुम, अम्मा, क्या तुम नही डरती ?

असाकीर : खुदा गवाह है बेटे, मुझे तेरी जिन्दगी कितनी प्यारी है ।

अलवान : अम्मा, तुझे मेरी जिन्दगी वाकई प्यारी है ?

असाकीर : अलवान, तेरे बगैर इस जिन्दगी में रखा ही क्या है, हर अजीजी तेरे ही लिए तो जिन्दा है । सत्रह साल तेरी हर एक सांस के सहारे हम सब जिन्दा रहे हैं ।

अलवान : (सर को झुकाए हुए) हां, मैं समझता हूं ।

असाकीर : कितनी शर्मनाक जिन्दगी हमें बितानी पड़ी । कितने सब्र से हम यह सब दुख-दर्द सहते रहे । जब भी तुम्हारी याद आती तो तुम्हारी शक्ल हमारे सामने से एक तस्वीर बन के गुजर जाती थी । उसे देखकर हमारी हिम्मत और बंध जाती । जीने के इरादे और बढ़ जाते, हम सब की उम्मीद तुम्ही तो थे ।

अलवान : (सिर झुकाकर जैसे कोई अपने आपसे बातें कर रहा हो) सच है, मेरी जिन्दगी पर तुम्हारा हक है ।

असाकीर : अलवान, तुम्हारे वालिद का जनाजा भी तुम्हारे लिए रुका हुआ है । यह जानवर भी कुरबानी के लिए तैयार है । मैं इतने बरसों तक रो भी न सकी । अपने आंसुओं को जब्त किए हुए बैठी हूं, सिर्फ तुम्हारी इन्तजार में । यह कपड़े भी आज दिन तक नही बदले । हम सब बेजान

हैं, जिन्दा लाश हैं, इसी उम्मीद मे जी रहे हैं कि कब तुम आओ और हमें एक नई जिन्दगी दो।

अलवान : (जैसे अपने आप से बातें कर रहा हो) क्या तुम नई जिन्दगी इसीलिए चाहती हो ?

असाकीर : हां अलवान, अब वो वक्त आ गया जिसका हमे इन्तजार था। अब और देर न करो। हमने बहुत बरसो तक इन्तजार किया है।

अलवान : (उसे हैरत होती है) कैसा वक्त ?

असाकीर : मैने सब तैयारी कर रखी है। इस जर लगे हुए चाकू पर धार देने के लिए मैंने पत्थर भी उस कमरे में छुपा रखा है।

अलवान : मैंने आज दिन तक सूवेलम को देखा नही, मैं भला उसे पहचानूगा कैसे ?

असाकीर : सूमेदा तुम्हारे साथ जाएगा, वो तुम्हे बता देगा कि सूवेलम कौन है।

अलवान : (अपने कपड़ों की तरफ देखकर) और यह काम मैं इन कपड़ों में करूंगा ?

असाकीर : यह कपडे उतार दो, तुम्हारे वालिद का आबा रखा है।

[वो अन्दर वाले कमरे की तरफ जाती है।]

अलवान : (उसे रोकते हुए) अम्मा, इतनी जल्दी भी क्या है ?

असाकीर : हर सांस जो सूवेलम ले रहा है वो तुम्हारी ही देन है।

अलवान : और इसमें हर्ज क्या है ?

असाकीर : इसलिए कि अगर वो जिन्दा है तो हमारी जिन्दगी के दिन कम होते हैं, हमारी खुशियो की घड़िया कम होती है, हमने मर-मर के उसको ज़िन्दा रखा है। देखो अपनी अम्मा को पास से देखो। अलवान, जब तुम्हारे वालिद का इन्तकाल हुआ था तो मैं जवान थी, देखो इस बेरहम जमाने ने मेरा क्या हाल किया है, ऐसा लगता है जैसे सत्रह साल नही चालीस साल गुजर गये हैं। जवानी का जोश ख़त्म हो चुका। मेरी हड्डियो मे कोई ताकत बाकी न रही, अगर मैं जिन्दा हूं तो सिर्फ उस याद के सहारे जिसे मै भुला नही सकती—उस संगदिल के सहारे जो बदला लेने के लिए धड़क रहा है।

अलवान : (जैसे अपने आप से बातें कर रहा हो) बदले की कितनी ऊंची कीमत देनी पड़ती है।

असाकीर : (वो बात को समझ नहीं पाती) क्या कह रहे हो अलवान ?

अलवान : मैं यही कहना चाहता था कि यह महाकाल की मेहरबानी थी कि वो बगैर कोई कीमत चुकाए हमारे सर से यह बोझ उठाना चाहता था।

असाकीर : (शक करते हुए) तुम क्या कहना चाहते हो ?

अलवान : कुछ नहीं—अम्मा, कुछ नहीं।

असाकीर : (हुक्म देते हुए) यह कपड़े उतार दो, मैं आबा लेकर आती हूं, और अपने हाथों से इस चाकू को तेज करती हूं।

अलवान : यहां नजदीक में कोई मस्जिद नहीं है ?

असाकीर : नहीं, शेख इसनवी के मदरसे के पास एक छोटा-सा इबादत के लिए कमरा है।

अलवान : (जाने के लिए तैयार होता है) नमाज पढ़ने मैं वहीं जाऊंगा।

असाकीर : अभी ?

अलवान : हां, सूरज अनकरीब ढल चुका है।

असाकीर : क्या तुम यह चाहते हो कि तमाम गांव तुम्हें वहां देखे ?

अलवान : मेरे मकसद को पूरा करने के लिए इससे बेहतर जगह और कोई नहीं हो सकती।

असाकीर : (उसकी तरफ घूर कर देखती है)अलवान, तुम पागल तो नहीं हो गए ?

अलवान : (अपनी बात को पूरा करते हुए) गांव वालों से मेरा मिलना बहुत जरूरी है। मैंने तुम्हें बताया नहीं था कि मैं एक बहुत जरूरी काम के लिए यहां आया हूं।

असाकीर : (ताना देते हुए) तुम गांव वालों को बताओगे कि तुम यहां किस काम के लिए आए हो ?

अलवान : उन सबको बताना बहुत जरूरी है।

असाकीर : मेरे बेटे, अलवान, यह मैं क्या सुन रही हूं ? तुम सचमुच इन्हें बताओगे ? तुम पागल तो नहीं ? तुम उन्हें क्या बताओगे ?

अलवान : (जैसे कोई सपना देख रहा हो) मैं उन्हें वो तमाम बातें बताऊंगा जो उन्हें कहने के लिए मैं यहां आया हूं। इतने बरसों से मैं गांव से बाहर जरूर रहा, मगर मैं हमेशा अपने गांव और वहां के रहने वालों के लिए सोचता रहा। जब पढ़ाई से फ़ुरसत मिलती, जब हम सब एक जगह बैठ कर अखबार पढ़ते, बातें करते, तब हम एक-दूसरे से अपने वतन के लिए पूछते थे कि हमारे हमवतन कब साफ-सुथरे मकानों में इन्सानों की तरह जिन्दगी गुजार सकेंगे, जहां जानवर उनके साथ खाना नहीं खायेंगे—कब उनके मकानों पर इस घास-फूस की छत की बजाय पक्की छत होगी, कब मकानों की दीवार पर कीचड़ और गोबर की बजाय अच्छा रंग रोगन होगा, कब यह मटके फेंके जायेंगे, कब पानी का नल लगेगा और साफ-सुथरा पानी आने लगेगा, कब इन लालटेनों की जगह बिजली आएगी ? क्या अपने गांव के भाइयों के लिए इन सब चीजों की ख्वाहिश करना बहुत ज्यादा है ? क्या औरों

की तरह इनको कोई हक नहीं है ?

असाकीर : (उसे कुछ समझ में नहीं आता है) अलवान, यह तुम क्या बके जा रहे हो ?

अलवान : गांव वालों को यह सब जानना बेहद जरूरी है, और हम सब जिन्होंने काहिरा जाकर तामील हासिल की है, हमारा फर्ज है कि हम उन्हें उनके हक की बाबत बतायें, उसे हासिल करना कोई मुश्किल नहीं, उन्हें एक होकर काम करना होगा। एक-दूसरे की मदद करनी होगी, एक काउंसिल बनानी होगी जो उन लोगों पर टैक्स लगाये जिनके पास पैसे हैं, जो नौजवान हैं—मजबूत और ताकतवर हैं, उनकी टोलियां बनाये जो फुरसत में एक-दूसरे से झगड़ने की बजाय, पुल, बांध और कई ऐसी चीजें बनायें, अगर सब मिलकर काम करें तो कोई ताज्जुब नहीं कि यह गांव एक model बन जाये और आस-पास के गांव भी इसे देखकर अपने गांव को सुधारें।

असाकीर : यह सब किताबी बातें हैं जो बाद में तुम शेख मोहम्मद अल इसनवी से कर सकते हो, इसकी समझ में भी आ जायेंगी। फिलहाल हमें इससे कहीं ज्यादा जरूरी काम करना है।

अलवान : (यह सुन कर वह चौंक जाता है) इससे ज्यादा जरूरी काम और क्या हो सकता है ?

असाकीर : हां, आज नमाज पढ़ने के लिए बाहर न जाओ, अगर चाहो तो यहीं पढ़ लो, उसके बाद तुम आबा पहनो और हम दोनों मिलकर चाकू को तेज करते हैं।

अलवान : या खुदा मुझ पर रहम कर—कर्मफर्मा—मुझे माफ कर।

असाकीर : क्या कह रहे हो, अलवान ?

अलवान : (अपना सर उठाते हुए) मैं यही कह रहा था कि मैं यहां तुम सबकी आंखें खोलने आया था। तुम्हे एक नई जिन्दगी देने आया था।

असाकीर : हम अजीजी सत्रह साल जिन्दा लाश की तरह, तुम्हारी इन्तजार में क्या इसी दिन के लिए जी रहे थे ?

अलवान : (सर झुकाये हुए धीरे से बोलता है) या खुदा, मैं इन लोगों के साथ क्या करूं ?

असाकीर : यू क्यों सर झुकाये हुए बैठे हो ? उठो, वक्त बरबाद मत करो, उठो।

अलवान : (हिम्मत करके—अपना सर उठाकर) अम्मा, मैं कत्ल नहीं करूंगा।

असाकीर : (अपनी दहशत को छुपाते हुए) मैं क्या सुन रही हूं ?

अलवान : मैं कत्ल नहीं करूंगा।

असाकीर : (फटी और भर्राई हुई आवाज से) तुम्हारे वालिद का खून।

अलवान : खून को सरकार से छुपा कर, अब्बा को धोखा तुमने दिया है—बदला वो लेते हैं जिनके हकूमत होती है।

असाकीर : (सुनी अनसुनी करती हुई) तुम्हारे अब्बा का खून !

अलवान : खुदा ने मेरे हाथ किसी की जिन्दगी लेने के लिए नहीं बनाए हैं।

असाकीर : (पागल-सी हो गई) तुम्हारे अब्बा का खून !

अलवान : (अपनी अम्मा की ऐसी हालत देकर घबरा जाता है) अम्मा, क्या हो गया है तुम्हें ?

असाकीर : (बेहोशी की हालत में—उसे कुछ नहीं मालूम कि उसके पास कौन है) तुम्हारे अब्बा का खून'''सत्रह साल'''तुम्हारे अब्बा का खून''' सत्रह साल'''!

अलवान : हिम्मत रखो अम्मा, मैं जानता हूं कि तुम्हे सदमा पहुंचा है, मगर यह भी तो समझने की कोशिश करो कि मैं एक अनपढ़ जल्लाद नहीं जो चाकू से लोगों की जिन्दगी लेता फिरूं।

असाकीर : (धीरे-धीरे बोलती है जैसे कोई भूत-प्रेत के काबू में हो) सत्रह साल'' तुम्हारे अब्बा का बदला'''सत्रह साल !

अलवान : (जैसे अपने आप से बातें कर रहा हो) मैं जानता हूं अम्मा, कि तुमने बहुत तकलीफ झेली है, बहुत बर्दाश्त किया है, अगर तुम्हारे सब्र का अंजाम अच्छा होता तो मैं तुम्हारे लिए आसमान से सितारे भी तोड़ कर ला देता—मगर तुम समझती क्यों नहीं !

असाकीर : (उसकी आवाज बंद होती जाती है) तुम्हारे अब्बा का खून !

अलवान : (जल्दी से जाकर उसे अपनी बांहों में ले लेता है) अम्मा ! अम्मा ! अम्मा !

असाकीर : (उसकी बांहों में अपने आपको थोड़ा-सा उठाती है) तुम कौन हो ?

अलवान : तुम्हारा बेटा—तुम्हारा बेटा अलवान।

असाकीर : (होश में आती है और चिल्लाती है) मेरा बेटा ? मेरा खुद का बेटा ? नहीं, कभी नहीं, कभी नहीं।

अलवान : (उसे ताज्जुब होता है) अम्मा !!

असाकीर : मैं तुम्हारी अम्मा नहीं हूं, मैं तुम्हें नहीं जानती, मेरी कोख से कोई बेटा नहीं पैदा हुआ है।

अलवान : अम्मा, समझने की कोशिश करो।

असाकीर : मेरे घर से बाहर निकल जाओ।

अलवान : अम्मा !

असाकीर : (चिल्लाकर) मेरे घर से बाहर निकल जावो वर्ना धक्के देकर बाहर निकलवा दूंगी, अभी भी अजीजीयों मे मर्द मौजूद हैं, मगर तुम मर्द

नहीं हो। चले जाओ—मेरे घर से बाहर निकल जाओ।

अलवान : (अपना बक्सा उठाते हुए) मैं स्टेशन जा रहा हूं, जहां से आया था वहीं वापस लौट जाने के लिए। मैं खुदा से दुआ मांगता हूं कि वो तुम्हारी रूह को सकून पहुंचाएं, यहां की आबोहवा से दूर, जब तुम मुझ से काहिरा में मिलोगी तो अपनी बात तुम्हें समझाने की कोशिश करूंगा, उस वक्त तक, अम्मा खुदा हाफिज।

[वो मकान से बाहर चला जाता है। असाकीर वहीं की वहीं चुपचाप बैठी रहती है। कुछ देर बाद सूमेदा आता है। अपना सर अंदर डालकर झांकता है फिर धीरे से दरवाजा खोलता है।]

सूमेदा : चाची, क्या तुम्हीं चिल्ला रही थी?

असाकीर : (अपने पर काबू पाने के बाद, जरा भरोसे के साथ) आओ सूमेदा!

सूमेदा : (इधर-उधर देखने के बाद) तुम्हारा बेटा अलवान कहां है?

असाकीर : मेरा कोई बेटा नहीं है, मेरे नसीब में कोई बच्चे नहीं थे।

सूमेदा : चाची, यह क्या कह रही हो तुम?

असाकीर : मेरा कोई बेटा होता तो वो अपने वालिद का बदला जरूर लेता।

सूमेदा : (कमरे में चारों तरफ देखकर) कहां गया वो?

असाकीर : स्टेशन, वापस काहिरा लौटने के लिए।

सूमेदा : मेरी मां ने ठीक ही कहा था, जब अभी हम बाहर जा रहे थे तो उसे देखकर उसने कहा, "यह शख्स सूवेलाम तहावी को नहीं मार सकता।"

असाकीर : ऐसे बेटे को जन्म देने से पहले मेरी कोख फट क्यों नहीं गई!

सूमेदा : चाची, तसल्ली रखो, अभी भी अजोजीयों में मर्द बाकी हैं।

असाकीर : सूमेदा, हमारी तमाम उम्मीदें तुम्हीं पर है।

सूमेदा : क्यों, बेटा नहीं तो भतीजा ही सही।

असाकीर : मगर बेटा जिंदा है, अपने वालिद के खून का बदला उसी को लेना चाहिए। वो जिंदा है, हट्टा-कट्टा लोगों में घूमता फिरता है।

सूमेदा : मान लो कि वो मर गया।

असाकीर : अगर दरअसल में वो बचपन में ही कुएं में गिर कर मर गया होता तो हम इस दबी हुई आग में इस तरह दुख पाकर इतने सालों तक इंतजार नहीं करते, अगर वो मर ही गया होता तो हमें इस कदर शर्म के मारे जिन्दा नहीं रहना पड़ता। मगर वो जिन्दा है, चारों तरफ यही खबर फैली हुई है। तमाम इलाके में, बाजार में, कि वो जिन्दा है : कितनी बेइज्जती, अपमान, कितनी शर्म!

सूमेदा : हिम्मत न हारो चाची !

असाकीर : सब कुछ सह सकती हूं सिवाय इस बेइज्जती के, जीना दुश्वार हो जाता है। मैं इस गांव में कैसे जिन्दा रह सकती हूं जब तमाम लोग यह जानते हैं कि मैं उसकी मां हूं। उसके नाम पर सब लोग थूकेंगे, चारों तरफ से आवाजें आएंगी, "इसी की कोख से वो निकम्मा पैदा हुआ था।" हां, इस कोख से। (अपने पेट को जोर-जोर से मारती है) गांव की तमाम औरतें, अपाहिज, गंवार, बांझ सभी मेरी कोख का मजाक उड़ाएंगी, हां, इस कोख का, इस कोख का !

सूमेदा : (उसे रोकते हुए) चाची, इस तरह से अपने आपको तकलीफ देने से कोई फायदा नहीं।

असाकीर : सूमेदा, मुझे चाकू दो—मैं इसे काट डालूंगी।

सूमेदा : पागल तो नहीं हो गई हो ?

असाकीर : सूमेदा—क्या तुम मर्द हो ?

सूमेदा : (उसकी तरफ गौर से देखते हुए) तुम क्या चाहती हो ?

असाकीर : जो कालिख तुम्हारे भाई के नाम पर लगी है उसे मिटा दो।

सूमेदा : कैसे ?

असाकीर : (जीन के बक्से में से चाकू निकालते हुए) उसे इस चाकू से मार कर।

सूमेदा : किसे मार कर ?

असाकीर : अलवान को। उसके सीने में यह चाकू झोंक दो।

सूमेदा : अलवान को मार दूं ? तुम्हारे बेटे को ?

असाकीर : हां, उसे मार डालो।

सूमेदा : चाची, होश की बातें करो।

असाकीर : मेरी और उसकी खातिर यह काम कर दो।

सूमेदा : उसकी खातिर ?

असाकीर : हां, हमारा इसी में भला है कि लोग यह कहें कि वो मारा गया, हमें यह तो नहीं सुनना पड़ेगा कि वो अपने बाप का बदला नहीं ले सका।

सूमेदा : मैं अपने भाई को ही मार डालूं ?

असाकीर : हां सूमेदा, अगर तुम मर्द हो तो उसे अजीजीयों के नाम पर धब्बा मत लगाने दो। आज के बाद तुम लोगों से सर उठाकर नहीं चल सकोगे। तुम्हारे नाम पर लोग हंसेंगे, तुम पर ताने कसेंगे, बाजार में तुम पर उंगली उठाकर कहेंगे कि देखो वो एक औरत जा रही है।

सूमेदा : (जैसे अपने आप से बातें कर रहा हो) एक औरत ?

असाकीर : अगर तहावीयों में ऐसा लड़का होता, तो वो उसे एक घंटे के लिए भी जिन्दा नहीं रहने देते।

सूमेदा : (जैसे अपने आप से बातें कर रहा हो)

असाकीर : हां तुम, जो कुछ हुआ है उसके बावजूद अगर अपने भाई को माफ करते हो तो।

सूमेदा : (पूरे भरोसे के साथ अपना हाथ बढ़ाते हुए) लाओ, चाकू मुझे दो।

असाकीर : (चाकू देते हुए) लो, नहीं ठहरो, मैं इसके ऊपर से जर और खून साफ कर दू।

सूमेदा : (बेसब्री से) लाओ मुझे दो—इससे पहले कि वो शाम की गाड़ी से कहीं भाग न जाए।

असाकीर : (उसे चाकू देते हुए) लो, खुदा करे कि उसके खून से, उसके बाप का खून जो इस पर सूख गया है धुल जाए।

सूमेदा : (चाकू लेकर जाते हुए) अगर मैं उसका कत्ल कर पाया, तो तुम्हें दफ्तर से मेरा गाना सुनाई देगा।

[वो जल्दी से चला जाता है। असाकीर अकेली रह जाती है। वो एक बुत कि तरह खड़ी रहती है। फटी-फटी आंखों से देखती हुई, मबरूका, अपने सर पर बर्तन रखते हुए मैं शेख अलवान के लिए मच्छी का गोश्त बना कर लाई हूं।]

असाकीर : (आहिस्ता से उसकी तरफ घूमती हुई) कोई मर गया है, मबरूका!

मबरूका : खुदा खैर करे—कौन?

असाकीर : अलवान।

मबरूका : तुम्हारा बेटा?

असाकीर : मेरा कोई बेटा नहीं है, उसकी मिट्टी मिट्टी से मिल गई।

मबरूका : यह तुम क्या कह रही हो असाकीर? अभी थोड़ी देर पहले उसे तुम्हारे पास छोड़कर गई थी—कहा है वो?

असाकीर : वो स्टेशन गया है, वहीं वापस लौट जाने के लिए जहां से आया था। अपने बाप का बदला नहीं ले सकता। इसीलिए मुह छुपाकर भाग रहा है।

मबरूका : (शर्म के मारे सर नीचे करके) मेरे दिल ने यही कहा था।

असाकीर : तुमने ठीक ही सोचा था, मबरूका।

मबरूका : काश, अच्छा होता अगर वो आता ही नहीं।

असाकीर : सत्रह साल हमने इस दिन का इन्तजार किया।

मबरूका : और हर साल तुम यह कहती रहीं कि "वो बड़ा हो गया होगा।" ठीक उसी तरह जैसे तुम बाजरे के सिट्टे को अपनी बालिश्त से नापती रही, उस दिन तक जब तुमने उसके पत्तों को हटाया तो मालूम हुआ कि उसमें दाने लगे ही नहीं।

असाकीर : यूं ही जंगली घास-फूस की तरह उगता तो उससे कोई उम्मीद भी न होती, और जल जाने से कोई दुख भी न होता। हमें कितना भरोसा था, कितनी उम्मीदें थी। हमारे खानदान के नाम पर जो कालिख लगी है उसे वो धो देगा। मबरूका, मुझे उस पर कितना गरूर था। कितनी बार तुम्हारे सामने मैंने डींगें मारी थी कि मेरा बेटा अपने खानदान का नाम रोशन करेगा, मगर नहीं, जिस बेटे को मैंने जन्म दिया, जिसे मैंने इतने बरसों तक छुपाकर रखा वो हमारे खानदान के नाम पर धब्बा है। जैसे रुई को कीड़ा लग जाता है वैसे, ए मेरे खाविन्द, तुम्हारी रूह को सकून मिले, मुझे माफ करना, मैंने ऐसे बेटे को जन्म दिया है जिसकी वजह से तुम्हारे दुश्मन तुम्हारे खानदान पर हंसेंगे, खुशियां मनाएंगे।

मबरूका : अजीज़ों की कितनी बेइज्जती।

असाकीर : हां, अगर वो और जिंदा रहता तो। बहुत जल्द उसे दफना दिया जाएगा।

मबरूका : (एक दम से पलट कर) सूमेदा कहां है ?

असाकीर : (रेलगाड़ी की सीटी की आवाज को बहुत गौर से सुनती है) खामोश, शाम वाली गाड़ी स्टेशन पर आ रही है।

मबरूका : असाकीर, बताओ सूमेदा कहां है ?

असाकीर : (सीटी की आवाज को गौर से सुनती हुई) खामोश ! खामोश ! यही वक्त है ठीक इसी वक्त...

मबरूका : (ताज्जुब से) इसी वक्त, क्या होगा ?

असाकीर : (जैसे अपने आप से बातें करते हुए) तुम क्या सोचती हो ? उसने गाड़ी पकड़ ली होगी या किसी और ने उसे पकड़ लिया होगा...?

मबरूका : वो स्टेशन गया है तो गाड़ी पकड़ ही लेगा, उसे बुरा-भला कहने से कोई फायदा नहीं।

असाकीर : मबरूका, तुम क्या सोचती हो, वाकई वो गाड़ी पकड़ लेगा ?

मबरूका : उसे रोकेगा भी कौन ?

असाकीर : (उस के मुंह से निकल ही पड़ता है) सूमेदा।

मबरूका : सूमेदा ? क्या वो उसे रोकने के लिए गया है ?

असाकीर : हां।

मबरूका : कब गया था वो ?

असाकीर : तुम्हारे आने से थोडी देर पहले।

मबरूका : मेरे ख्याल से वो उसे नहीं रोक सकता।

असाकीर : (लंबी सांस लेते हुए) तुम यह कैसे कह सकती हो ?

मबरूका : हां, अगर बहुत तेज दौड़ कर गया हो तो दूसरी बात है।

असाकीर : (सीटी की आवाज बहुत गौर से सुनते हुए) वो स्टेशन से गाड़ी जा रही है।

मबरूका : (उसे गौर से देखते हुए) असाकीर, तुम्हें क्या हो गया है? तुम्हारा मुंह पीला क्यों पड़ गया?

असाकीर : मबरूका, तुम्हार दिल क्या कहता है?

मबरूका : मेरा दिल कहता है कि वो चला गया।

असाकीर : चला गया? कहां चला गया?

मबरूका : जहां से आया था वही।

असाकीर : (दूर के देखते हुए) क्या मतलब तुम्हारा?

मबरूका : (उसे देखते हुए) तुम इतने जोर से सांस क्यों ले रही हो?

असाकीर : (धीरे से कहती है) जहां से आया था वही चला गया।

मबरूका : असाकीर, तुम्हे अब भी उससे कुछ उम्मीद है?

असाकीर : नही।

मबरूका : यही सोचकर तसल्ली करो कि वो पैदा ही नहीं हुआ था।

असाकीर : (अपने आप से बात कर रही हो जैसे) हां, उसके जिंदा रहने के राज से कहीं ज्यादा उसकी मौत का राज होगा।

मबरूका : खुदा का शुक्र है कि वो यहां से बहुत दूर रहता है।

असाकीर : (जैसे अपने आप से पूछ रही हो) क्या उसने गाड़ी पकड ली होगी?

मबरूका : किसे मालूम? शायद सूमेदा पहुंच गया हो, और उसे मना लिया तो अभी वापस आता ही होगा।

असाकीर : (जैसे कोई सपना देख रही हो) उसके साथ वापस आता ही होगा?

मबरूका : क्यो नही? अगर सूमेदा हवा की तरह गया होगा तो वो गाड़ी जाने से पहले पहुंच गया होगा।

असाकीर (धीरे से) उसके जाने से पहले पहुंच गया होगा?

मबरूका : मुमकिन है कि थोड़ी देर मे वो दोनो आते ही होगें।

असाकीर : (जैसे अपने आप से बात कर रहो हो) नही, इस बार सूमेदा अकेला ही आएगा।

मबरूका : (घबरा के उसकी तरफ सुनती है) असाकीर, तुम्हारा चेहरा देखकर मुझे डर लगता है।

असाकीर : (बहुत गौर से देखती है) खामोश, सुनो, जरा सुनो, तुम्हे कुछ सुनाई देता है?

मबरूका : नही, मुझे कुछ नही सुनाई देता, क्या सुनू मैं?

असाकीर : गाने की आवाज।

मबरूका : (सुनने की कोशिश करती है) नहीं, मुझे कोई गाने की आवाज़ सुनाई नही देती।

असाकीर : (लंबी सांस लेते हुए) मुझे भी सुनाई नही देती।

मबरूका : क्या सूमेदा ने तुम्हे बताया था कि वो गाना गाते हुए आएगा?

असाकीर : (घबराई हुई है, जैसे अपने आपसे बात कर रही हो) शायद वो अभी तक Diet office नही पहुंचा।

मबरूका : अभी तक तो उसे पहुंच जाना चाहिए था।

असाकीर : (और ज्यादा लंबा सांस लेती है) क्या? दफ्तर पहुंच गया होगा और गाना शुरू नही किया।

मबरूका : असाकीर, तुम्हारे चेहरे की रंगत उड़ क्यों गई?

असाकीर : (धीरे से) वो उसे पकड नही पाया।

मबरूका : असाकीर, तुम यही चाहती हो न कि वो लौटकर वापस नही आए, कि गाड़ी उसे इस गाव से कही दूर ले जाए? मैं तुम्हारी इस बात से सहमत हू। उसका काहिरा लौट जाना ही अच्छा है। अपने शेख और दोस्तो के पास, अब उसका और हमारा कोई वास्ता नही रहा। वो हम से गैर हो चुका। यह तो उसने अच्छा किया कि यहां ज्यादा दिन नही ठहरा, लोगों से मिला नही, किसी को भी उसके बारे मे कुछ मालूम नही होगा।

[असाकीर जो दूर से आवाज़ आती है।]

मबरूका : (असाकीर की तरफ घूमकर देखती हुई) असाकीर, जो मैं कह रही हूं, उसे तुम सुन नही रही? क्यों, जो मैं कह रही हूं वो ठीक है न?

असाकीर : (उसकी आवाज़ डरी-डरी-सी है, उसकी आवाज़ में खरखरापन है) नही, मुझे कुछ सुनाई नही देता।

मबरूका : (सुनती है) मगर यह तो सूमेदा के गाने की आवाज़ है (डर के मारे वो असाकीर की तरफ घूमती है) असाकीर! असाकीर! क्या हो गया है तुम्हें, या अल्लाह मुझे तो डर लग रहा है।

सूमेदा : "दोस्त कितने बहाने हमने बनाए
कितने इरादों को तोड़ कर पछताएं
फिर भी तुम्हारी शिकायतें यू ही रही
तो हमने अपने गरेबां को तार तार किया
जब भी सुना अपने वालिद के बारे में
शर्म के मारे मेरा सर झुक-झुक गया
मेरी इन फटी-फटी दोनों आंखों से
यू बेसाख्ता आंसू बहते रहे।"

असाकीर : (अपने आप पर काबू पाते हुए कि कहीं बेहोश न हो जाएं, मगर इसके बावजूद एक दबी-दबी-सी आवाज़ निकल ही पड़ती है) : मेरा बेटा!

भंवर



ईके ईकीडेह् (IKE IKIDDEH)

ईके ईकीडेह् पूर्वी नाईजेरीया में 1938 में पैदा हुए। वहां से घाना (Ghana) गये और अंगरेजी में B A. की डिग्री हासिल की। फिर लीड्स की यूनिवर्सिटी में M.A. किया और 1966 में घाना की यूनिवर्सिटी में अंगरेजी के लेक्चरर की पोस्ट पर नियुक्त हुए।

पात्र

आकोनेंडी
ओलेमू
आमोस
ऐलीसा
सैम्युल
खास मेहमान
पहला आदमी
दूसरा आदमी
तीसरा आदमी
नकेम

आकोनेडी : मेरा नाम आकोनेडी है। मैं जोगी हूं। मैं सितारों से आगे की भी बात जानता हूं। मैं इस समाधि में रहता हूं। मगर दुनिया की हवा के साथ चलता हूं। मैं नदी-नालों से गुजरता हूं और समन्दर की लहरों से खेलता हूं। मैं अन्धा हूं मगर फिर भी देख सकता हूं। रात को उल्लू की तरह और दिन में कौवे की तरह। इस वक्त मैं अपनी समाधि में बैठा साफ-साफ देख सकता हूं कि मेयर-मैन ओलेमू घर-घर जा रहा है। आओ मेरे मुल्क के बाशिन्दो, जो मैं देख रहा हूं वो तुम्हें भी दिखाऊं।

[दरवाजे पर दस्तक की आवाज ज़ोर-ज़ोर से आने लगती है।]

ओलेमू : खोलो—दरवाजा खोलो, मैं कहता हूं दरवाजा खोलो, आमोस तुम्हें सुनाई नहीं देता—तुम क्या चाहते हो, जब बाहर निकलो तो मैं तुम्हारा *जबाड़ा तोड़ दूं? तुम अच्छी तरह से जानते हो मैं* यह कर सकता हूं। क्या हुआ है तुम्हें? कहीं पागल तो नहीं हो गए? मुझे कोई बहाना नहीं चाहिए। और लोगों ने अपना-अपना किराया दे दिया है। शाम को मुझे और घरों पर भी जाना है।

आमोस : हजूर, मैंने पिछले हफ्ते आपको कहा था—मेरे पास···

ओलेमू : बकवास, तुम मुझे बेवकूफ बना रहे हो, कल ही तो तुम्हें तनख्वाह मिली थी। मैं कोई बहाना सुनने को तैयार नहीं—

आमोस : मेरी मां बीमार है—

ओलेमू : झूठ, तुम्हारी मां तुम्हारे साथ नहीं रहती—तुम पैसे बचाना चाहते हो ताकि उस लड़की पर खर्चा कर सको।

आमोस : नहीं हजूर, मुझे किसी लड़की से प्यार नहीं है। मैं भगवान की सौगन्ध खाकर कहता हूं मेरी मां अस्पताल में है।

ओलेमू : *अस्पताल में तो तुम्हें जाना चाहिए, अगर वहां पर झूठ बोलने का* इलाज हो सके तो। ज़रा अपने कमीज को तो देखो—बिलकुल नया कमीज पहन रखा है। चार पौंड में मिलता है। यह देखा

मेरा कमीज पन्द्रह शिलग में खरीदा था। और वही पुराना बहाना बनाते हो—मां बीमार है—बाप मर गया है…

आमोस : हजूर, मैं भगवान की सौगन्ध खाकर कहता हूं, मैं कोशिश करके सोमवार को किराया चुका दूंगा। भला मैं आपसे झूठ कैसे बोल सकता हू चेयरमैन साहब, मुझ पर दया करिए, अगर आपने मुझे घर से निकाल दिया तो मैं कही का न रहूंगा—बेघर हो जाऊंगा।

ओलेमू : तो तुम यह जानते हो ? सुनो, आमोस, तुम मेरा वक्त बरबाद कर रहे हो. तुम अच्छी तरह से जानते हो मैं दफ्तर में कितना काम छोड़कर आया हूं।

आमोस : हां हजूर, मैं जानता हूं।

ओलेमू : दफ्तर बंद होने से पहले जो तीन फाइलें आई थी उनको मैं छू भी नही सका—तीन फाइलें।

आमोस : मैं जानता हूं चेयरमैन साहब, आप सही फर्माते हैं।

ओलेमू : छुट्टी से दो घंटे पहले मुझे दफ्तर छोड़ना पड़ा। सिर्फ इसलिए कि जो लोग जकान्डे स्ट्रीट मे रह रहे हैं उन्हें वक्त पर पकड़ने के लिए। उनको आज तनखा मिली है न ? तुम सोच सकते हो उन्होंने दो महीने से किराया नही दिया है।

आमोस : जी हां, मैं जानता हूं। यह उन्होंने अच्छा नहीं किया।

आलेमू : तुम कुछ नही जानते हो। मैंने उनको घर से बाहर निकाल दिया है। किराया वसूल करने के लिए मुझे घर-घर नही जाना चाहिए। इस काम के लिए मेरे पास अफसर हैं। मगर तुम लोग उनके काबू में नही आते—

आमोस : सरकार मेरा तो एक ही महीने का किराया है और वो भी मां की बीमारी के कारण…

आलेमू : देखो आमोस, मैं तुमसे बहुत खुश हूं, मेरे दफ्तर में तुम सबसे अच्छे चपरासी हो। और इसीलिए मैंने तुम्हें यहां रहने के लिए मकान दिया—तुम अच्छी तरह से जानते हो कि जब बाकी किरायेदार मुझसे मिलने आते हैं तो मेरे लिए शराब लेकर आते हैं। या पांच पौंड फी की तरह देते हैं। मगर तुमसे मैं कुछ भी नहीं लेता।

आमोस : आपकी बड़ी मेहरबानी है सरकार, भगवान आपका भला करे।

आलेमू : यह भगवान-वगवान की बात छोड़ो। मैं तो यह कहना चाहता हूं कि तुम्हें महीने के पांच पौंड मिलते हैं, अगर सही तरह से रहो

तो उसमें तुम्हारा गुजारा हो सकता है। सोमवार को जब दफ्तर आओ तो पैसे लेकर जरूर आना। समझे कि नही।

थोमोस : जी हां चेयरमैन साहब—मगर—मगर···

ओलेमू : इसमें मगर वगर, की कोई बात ही नही—अपने भाई से उधार ले लो···मेरा मतलब उस टैक्सी ड्राईवर से—*क्या नाम है* उसका।

आमोस : जी सैम्युल—

ओलेमू : हां सैम्युल से। वो काफी पैसे बनाता है, अरे क्या टाइम हुआ। ओह हो साढ़े छ. बज गए—वो शाम को इबादान से ऐलीसा को लेकर आ रहा है। (पॉज)

आकोनेडी : मैं शिकारी कुत्ता तो नही हूं, मगर मेरी आंखें उस मोटर को तेज रफ्तार से आते देख सकती हैं, जिसमें एक लम्बे कद का लड़का बैठा है और इसके साथ है एक लड़की जो अपने बाप को दफना कर आ रही है।

[मोटर आती है और रुक जाती है]

ऐलीसा : (जमुहाई लेते हुए) सच्ची सैम्युल मैं बहुत थक गई हूं उस बकरे की तरह जिसको दस्त लग रहे हों।

सैम्युल : मुझे माफ करना मिस ऐलीसा, जब चेयरमैन साहब आपको थकान दूर करने के लिए शराब पिलाएंगे तो उसके बाद आप सुख-चैन से रात-भर सोएंगी !

ऐलीसा : (मुस्करा कर) अरे सैम्युल, तुम क्या जानो। जब वो पास होते हैं तो कहां सोने देते हैं। वो चीते की तरह हैं।

सैम्युल : अगर चीता बकरे को पैसा देता हो तो फिर फिक्र किस बात की।

ऐलीसा : हां, जहां तक पैसे का सवाल है, वो तो मुझे देता है। और यह मकान भी मुफ्त दिया है। तुमने वो बड़ा पलंग और रेडियोग्राम देखा है जो अभी पिछले महीने दिया था? दोनों की कीमत 150 पौंड है।

सैम्युल : देखा ! फिर शिकायत किस बात की? इस दुनिया में तो दुख हमारे जैसे पाते है। दिन में तीन-चार पौंड कमा लेने से क्या होता है जब तपती हुई धूप में काम करना पड़ता है !

ऐलीसा : एक दिन में चार पौंड काफी होते हैं। और फिर तुम तो घंटे के हिसाब से काम करते हो।

सैम्युल : आपकी समझ मे नही आएगा। आप क्या सोचती हैं तमाम पैसा मुझको मिलता है? ऐसा नही है। देखिए, मेरे बदन को देखिए। एक वक्त यह संगमरमर की तरह चिकना था। और अब यह कोलतार की खुरदरी सड़क की तरह है। खैर छोडिए। अब मैं चलू। मेरे बदन से पसीने की बू आ रही है। यू दुख तो पा रहा हूं, मगर जो भगवान ने जिन्दगी दी है उसका लाख-लाख शुक्र।

ऐलीसा : दुख तो मैं भी पा रही हू।

सैम्युल : जितना पैसा वो आपको देता है उसके बावजूद? आप मेरा मजाक उड़ा रही हैं। लाइए मुझे किराया दीजिए, मैं जाऊं।

ऐलीसा : सैम्युल, इस दुनिया मे पैसा ही सब कुछ नही है। मैं खुश नही हू।

सैम्युल : आपको कुछ काम नही करना पड़ता, सब कुछ मुफ्त मिलता है। और फिर कहती हैं कि आप खुश नही हैं। आप औरतों की बात मुझे बिल्कुल समझ मे नही आती।

ऐलीसा : तुम्हें मालूम है? चेयरमैन के अलावा मेरी जिन्दगी में मर्द और भी है, मगर यह सबसे ज्यादा पैसा देता है और इसीलिए मैं इसे छोड नही सकती।

सैम्युल : मगर जब इतना पैसा देता है तो उसे छोड़ना ही क्यूं?

ऐलीसा : मैं उससे प्यार नहीं करती सैम्युल, तुम देख नहीं सकते वो मेरे लिए बहुत बूढ़ा है। मैं इबादान जिससे मिलने गई थी मैं उससे प्यार करती हूं। मगर वो मेरे प्यार की कद्र नही करता और फिर पैसे वाला भी नही है। मैं क्या करूं मैं मजबूर हूं। मुझे मेरी मां, मेरे भाइयो और बहनों की देखभाल भी तो करनी पड़ती है।

सैम्युल : जो इबादान में रहता है क्या उसकी नौकरी नहीं है?

ऐलीसा : वो पुलिस में नौकर है।

सैम्युल : पुलिस, उससे तो दूर ही अच्छा—मुझे पुलिस वाले बिलकुल पसंद नही हैं। पैसों के लिए वो इधर-उधर बहुत सूंघते रहते हैं।

ऐलीसा : ओसटिन पैसे जमा नहीं कर सकता। बहुत ज्यादा पीता है। जब मैं वहां पहुंची तो उसके पास एक पैसा भी नहीं था, मुझे दो पौंड देने पड़े।

सैम्युल : उसके बारे में चेयरमैन को मालूम है?

ऐलीसा : चेयरमैन यह सोचता है कि मैं इबादान अपने बाप से मिलने जाती हूं। उन बिचारों को मरे ही चार साल हो गए। तब ही तो मुझे

कानवेंट छोड़ना पड़ा। मुझे बहुत डर लगता है कि एक न एक दिन चेयरमैन को मालूम पड़ ही जाएगा।

सैम्युल : डरने की कोई बात नही, कई तरकीबे हैं। यहां से सात मील दूर एक जोगी रहता है, मैं आपको उसके पास ले जाता हू। वो आपको ऐसी दवा देगा कि वो दोनों न कुछ देख पाएंगे न जान पाएंगे।

ऐलीसा : (भरोसा नहीं है) मैंने ऐसी कहानियां सुनी तो हैं।

सैम्युल : मैंने कई बार देखा है, चेयरमैन आपके ऊपर पानी की तरह पैसा बहाएगा और वो दूसरा आपको दीवाने की तरह प्यार करेगा।

ऐलीसा : सैमी, तुम सच कहते हो—तुम टैक्सी वालो का कोई भरोसा नही।

सैम्युल : अगर आप यह सोचती हैं कि मैं कोई चाल चल रहा हू, तो जाने दीजिए। वो मेरी बीवी की बहन के पति का भाई है। मैं झूठ नही बोल रहा। मैं उसे अच्छी तरह से जानता हू। उसके पास पहले भी बहुत सारे आदमियो को ले गया हूं। बिशप, मिनिस्टर अरे और भी कई लोग। तमाम मेरे शुक्रगुजार हैं।

ऐलीसा : अगर वो ऐसा कर देता तो मैं बहुत खुश होऊंगी। देखो मुझे देखो, मैं दुबले होने की बिलकुल कोशिश नही कर रही हू। मैं कुछ खा ही नही सकती।

सैम्युल : ठहरो, जब उससे मिलकर वापस आएंगे तो ऐसे खाओगी जैसे कोई भूखा जेल से छूटकर आया हो—मगर एक बात है, मुझे कमीशन देनी होगी—

ऐलीसा : मैं जरूर दूंगी, तुम्हारी बीवी झगड़ा नही करेगी तो मैं तुम्हारे पास आऊंगी।

सैम्युल : उसका इंतजाम कर लेंगे। मगर एक बात है, अगर चेयरमैन साहब खुद उस जोगी के पास जाएं तो दवा का असर ज्यादा होगा। और उस दूसरे आदमी के लिए, उसका अगर तुम्हारे पास फोटो है तो चलेगा।

ऐलीसा : वो मैं कर सकती हूं। अगर पैसे मिलने की उम्मीद हो तो चेयरमैन कही भी जाने को तैयार हो जाएगा। और आजकल वो ज़रा घबराये हुए भी है। इलेक्शन आ रहे है न। उन्हें यह मालूम होना चाहिए कि मैं सिर्फ उन्ही को प्यार करती हूं। किसी और को नही, तो मैं जो कहूंगी वो करने को तैयार है।

सैम्युल : हम जोगी से मिल लें तो फिर ले जाओ उसके पास।

ऐलीसा : सैमी, हम उसके पास कब जा सकते हैं? कल?

सैम्युल : मेरे हाथ की खुजली दूर हो जाए तो उस अंधे से आज ही मिल सकते हैं।

ऐलीसा : अंधा ? तो वो फिर देख कैसे सकता है ?

सैम्युल : उससे हमें क्या लेना है। लाओ आज का किराया दो ताकि मैं जाऊं। मेरी बीवी और बच्चों का पेट भरना है।

ऐलीसा : (प्यार से) कितने पैसे हुए सैमी ?

सैम्युल : तुम तो जानती हो तीन पौंड हुए—औरों से चार लेता।

ऐलीसा : पिछली बार तो तुमने इतने नहीं लिए थे।

सैम्युल : जब से बजट में कटौती हुई है सब कुछ बदल गया है।

ऐलीसा : मैं एक पौंड दूंगी सैमी—

सैम्युल : नहीं मिस ऐलीसा, एक पौंड से काम नहीं चलेगा—कम से-कम दो पौंड।

ऐलीसा : ठीक है, मैं देती हूं—यह लो—

सैम्युल : आपको क्या फिक्र है—चेयरमैन से पैसे मिल ही जाएंगे—अच्छा तो मैं चला—

आकोनेडी : जिस आदमी की आत्मा इंजन और मशीनरी में भटकती रहे जो मुलायम चद्दर ओढ कर सोये, और मकानों की छत पर अटकी हो, तो वो कहां जाने को तैयार नहीं होगा ? मगर इससे पहले उसे अपने दफ्तर में एक बहुत ही खास मेहमान से मिलना है।

ब० खा० मे० : यही मिस्टर ओलेमू का दफ्तर है ?

आमोस : आपका मतलब चेयरमैन साहब से है ?

ब०खा० मे० : हां, हाउसिंग कमेटी के चेयरमैन।

आमोस : चेयरमैन साहब को फुरसत नहीं है, वो आपसे अभी नहीं मिल सकते—आप कौन हैं ?

ब०खा० मे० : यूं ही एक मुलाकाती। वो जानते हैं। उन्होंने ही आज सुबह का अपोइन्टमेंट दिया था। तुम उनके चपरासी हो ?

आमोस : (जरा शान दिखाकर) मैं उनका क्लर्क हूं। मैंने कहा न आपसे। अभी आप उनसे नहीं मिल सकते, एक बजे वापस आना।

ब०खा० मे० : मेरे ख्याल से वो तो उनके खाने का वक्त है और फिर मुझे उस वक्त गाड़ी भी पकड़नी है। अन्दर जाकर कह दो कि उनसे कोई

मिलने आया है, लो यह लो छः पेंस।

आमोस : (इतनी छोटी घूस से उसकी इज्जत को ठेस पहुंचती है, थोड़ा दुखी होता है) बाबू साहब, दो शिलिंग दीजिए। (कुछ नहीं होता, थोड़ी देर रुकता है, फिर) अच्छा, देखता हूं तुम्हारी क्या मदद कर सकता हूं।

आमोस : आपसे कोई मिलने आया साब!

ओलेमू : (रोब से) अन्दर भेज दो—

आमोस : (ब० खा० मे० से) आइये।

ब०खा० मे० : नमस्कार साहब!

ओलेमू : नमस्कार, कहिए आपके लिए मैं क्या कर सकता हूं? बैठिये, नही उस पर नही, दूसरी कुर्सी पर।

ब०खा० मे० : विक्टोरिया क्वायर में जो एक जमीन का प्लॉट है उसके बारे में...

ओलेमू : एक मिनट : आप प्लॉट लेना चाहते हैं?

ब०खा० मे० : जी हां।

ओलेमू : ठीक है। वो आपको आज भी मिल सकता है। यू साल-भर लग जाए और हो सकता है कि कभी भी न मिले—यह तो आपके ऊपर है कि...

ब०खा० मे० : जी हा, मैं आपकी बात समझता हूं। मगर आजकल एक कोर्ट केस में फंसा हुआ हू और बड़ा खर्चा हो रहा है और फिर मेरी सबसे बडी दुकान में चोर घुस गए और सब कुछ ले गए।

ओलेमू : हर आदमी परेशान है। मेरी तीन ट्रक खराब हो गई हैं, चार मकान में मरम्मत करनी है और मेरा रसोइया पांच पौंड लेकर भाग गया। मैं अपने काम में मन ही नही लगा सकता।

ब०खा० मे० : मैं सोच रहा था कि अकेला मै ही मुसीबत मे फसा हूं। मेरे भाई ने कुछ आपसे कहा? मेरा मतलब मिनिस्टर ने?

ओलेमू : हां, मिनिस्टर साहब ने अभी तुम्हारे आने से पहले ही फोन किया था। वो पहले खुद भी इन मामलों में भुगत चुके हैं और खतरों से अच्छी तरह वाकिफ हैं। जमीन सरकारी है और टाउन कौंसिल ने अपने नाम करवा भी ली। इसका मतलब तुम अच्छी तरह से समझते हो, अगर फिर भी मैंने मिनिस्टर साहब को यकीन दिलाया है कि तुम्हें अपना खास आदमी समझकर काम करूंगा।

ब०खा० मे० : (चुपचाप से) कोशिश करके मेरा काम कर दीजिए—मैं छोटी-

मोटी कोला देने को तैयार हूं।

ओलेमू : भई तुम्हारे भाई की खातिर 75 पौंड होंगे। वैसे और लोग तो 150 पौंड तक देते हैं। तुम खुद जानते हो इस काम में कितना खतरा है। तुम बाहर जाओ और इधर-उधर कुछ कह बैठो तो मेरा तो पटरा साफ हो जाएगा।

ब०खा० मे० : चेयरमैन साहब, मैं ऐसा नहीं कर सकता। मैंने पहले भी बिजनेस किया है। मैं तीस पौंड देने के लिए तैयार हूं।

ओलेमू : ऐसा लगता है कि तुमने अच्छा बिजनेस नहीं किया। तुम जानते हो कि कमेटी में छः मेम्बर और हैं, उनका भी तो हिस्सा देना पड़ेगा।

ब०खा० मे० : मैं समझता हूं—आप कहते हैं तो अभी पचास पौंड देता हूं। चलिए सौदा तय करिए।

ओलेमू : अब तुमसे बहस करने से क्या फायदा। जो कुछ दे सको उस चपरासी को दे दो, अपना ही आदमी है कोई डरने की बात नहीं।

ब०खा० मे० : चेयरमैन साहब, एक काम और था, ओलूवा क्रैसेंट में जो मेरा मकान है उसकी बाबत आपसे कुछ कहना था। कौंसिल उसे तोड़ना चाहती है। उनका कहना है कि वो सरकारी कानून के खिलाफ बना है।

ओलेमू : हूं—कमरे कितने बड़े हैं?

ब०खा० मे० : आठ फुट लम्बे और छः फुट चौड़े।

ओलेमू : कुछ छोटे ही है। क्यों, बड़े क्यों नहीं बनाए?

ब०खा० मे० : प्लाट ही छोटा था, मजबूर था क्या करता छोटे बनाने ही पड़े। मगर रसोई काफी बड़ी है और अंग्रेजी स्टाइल का बाथरूम भी है।

ओलेमू : रसोई में?

ब०खा० मे० : यू रसोई में तो नहीं है मगर किराएदारों के लिए बीच में पर्दा डाल दिया है।

ओलेमू : दोस्त यह तो पेचीदा सवाल है, इस तरह के मकान बनाने की हम इजाजत नहीं देते हैं। हमने पॉलिसी बनाई है कि तमाम मकान एक से ही हों, ताकि सबका किराया एक-सा हो सके।

ब०खा० मे० : साहब, जिस मकान की मैं बात कर रहा हूं उसे देखिए तो बिल्कुल माडर्न है उसका नक्शा A Carpenter & Sons ने बनाया है।

ओलेमू : खैर अभी तो वक्त नहीं है। मैं देखूंगा कि इस मामले में क्या हो सकता है। काम तो हो जाएगा मगर कमेटी को कुछ देना पड़ेगा।

ब०खा० मे० : जी मैं जानता हूं।

ओलेमू : अच्छा तो नमस्कार, फिर कभी फोन कर लेना—काम हो जाएगा। बाहर चपरासी को मत भूलना।

ड०खा० मे० : नही भूलूंगा। अच्छा साहब, बहुत-बहुत धन्यवाद, मैं आपको फिर फोन करूंगा। (चला जाता है)।

ओलेमू : ओफ हो—वेवकूफ ने मेरे बीस मिनट खराब कर दिए।

[टेलीफोन बजता है।]

ओलेमू : हैलो—ओ ऐलीसा—तुम ? कहां से फोन कर रही हो ? मोगाम्ओ क्लब से ? वहां क्या कर रही हो ? तुम्हारा भाई···हां···हां··· हां मेरी जान, उसके बारे में मैं सोच रहा था तुम कितनी अच्छी हो, हां···हा···खासतौर पर मेरा ट्रांसपोर्ट बिजनेस···और फिर अगले महीने elections भी है। हा काम कर सकता है। मगर मेरी जान, एक बात सुनो, यह जोगी लोग जो होते हैं यह सिर्फ पैसे बनाते हैं। हां···मानता हूं। यह शायद काम का निकले। हां, मैं वो जगह जानता हू। आज शाम को मैं वहां जा सकता हू। ठीक है मगर तुम कब मिलोगी ? मेरी जान, सच मानो तुम्हे अपनी बांहो मे लेने को तड़प रहे हैं। काम में मन ही नही लगता। अच्छा सुनो वहां किसी और आदमी को छूने तक मत देना। हां वो तो मैं जानता हूं—तुम तो हमेशा से अच्छी रही हो। अच्छा तो फिर मिलेंगे। बाय-बाय (टेलीफोन रखता है) आमोस···आमोस।

आमोस : आया साहब !

ओलेमू : अबे वेवकूफ कहां है तू।

आमोस : जी मैं···

ओलेमू : फिर वही झूठ (धीरे से) उस वेवकूफ ने क्या दिया तुमको ?

आमोस : (पैसे गिनता है) जी उनचास, नही उनचास पौड दस···

ओलेमू : अरे वेवकूफ धीरे बोल।

आमोस : (बहुत धीरे से) माफ करना साहब गलती हो गई।

ओलेमू : क्यों पचास नही दिए थे। पचास पौड। चल मेरा वक्त बरबाद मत कर।

आमोस : जी आपने कहा था न दफ्तर के लिए एक झाड़न खरीदने को। उसी के लिए दस शिलिंग मैंने रख लिए थे।

ओलेमू : तू बहुत झूठा है। तमाम पैसे यहा मेज पर रखो। यह सब फाइल ले जाओ और कोई फोन आए तो कहना मैं काम से बाहर गया हूं।

आलोनेंडी : जब मेरी बाई आंख फड़कती है

तो यह इशारा है मेरी
कुटिया में किसी के आने को
वो आ रहे हैं श्रीमान् चेयरमैन ओलेमू
तो आवो मेरे मुल्क के बाशिन्दो
आगे की कहानी देखो।

ओलेमू : क्या आकोनेडी की समाधी यही है ?

आकोनेडी : हां बेटे, यही तो तीर्थस्थान है, इस कुटिया में तुम्हारा स्वागत है।

ओलेमू : मेरे पास ज्यादा वक्त नही है इसलिए जल्दी से आपको अपना काम बता देता हू। मुझे आपकी मदद चाहिए।

आकोनेडी : बच्चे तुम्हारे कहने की जरूरत नही। मैं तुम्हारी सब मुसीबतें जानता हू। तुम घर से चले थे उससे पहले ईश्वर ने मुझे सब कुछ बता दिया था।

ओलेमू : आपका मतलब आप जानते हैं कि मैं आपके पास किसलिए आया हू ?

आकोनेडी : हां और उसके अलावा और भी बहुत कुछ। तुम सरदार ओलेमू के सबसे बड़े लडके हो। जिसका इजेबू गाव में हुक्म चलता है। मगर तुम्हारे दुश्मन, तुम्हारी ताकत से जलते हैं। तुम्हारी गाड़िया खराब हो जाती हैं। तुम्हारे मकानों का किराया नही आता। तुम्हारी जिन्दगी धीरे-धीरे बिखरती जा रही है।

ओलेमू : (जिसे यह सब सुनकर बेहद ताज्जुब होता है) हां आप ठीक कहते हैं। ताज्जुब है आप यह सब कैसे जानते हैं। सुनिए, क्या आप बिजनेस मे मेरी मदद कर सकते है ? क्या आप मुझे यकीन दिला सकते हैं कि अगले महीने टाउन कौंसिल के इलेक्शन मे मैं जीत जाऊंगा ?

आकोनेडी : कामयाबी—सफलता—तुम यह चाहते हो न। यह भगवान उन्ही को देता है जो उन्हें खुश करता है। मगर एक बात सुनो—यह धरती जो घूमती रहती है यह उतनी ही गहरी और गंदी है जितना गहरा और गंदा कूड़े-करकट का गड्ढा होता है। यह मुमकिन है कि कामयाबी नाकामयाबी के दरवाज़े की चौखट पर पड़ी मिले। और इसी तरह उसी पेट से गरीबी और अमीरी थूक कर उगली जाती है।

ओलेमू : ...?

आकोनेडी : छोटे-छोटे चुज्जों पर बाज की तरह मत झपटो। उनकी माओं के रोने का कुछ तो ख्याल करो। जिन्हे तुम प्यार करते हो उन पर

पूरा भरोसा करना खतरनाक साबित हो सकता है। कछुवा यह जानता था, और इसीलिए उसने किसी पर भरोसा नहीं किया। और यही वजह थी कि वो अपनी बुद्धि से इस मतलबी और चालाक दुनिया में अपनी जिन्दगी बिता सका।

ओलेमू : सलाह के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद।

ओकोनेडी : अब उपदेश का वक्त खतम हो चुका। यह लाल कपड़ा आंख पर बांध लो। कितनी अजीब बात है कि इंसान भगवान की दी हुई आंखों के बिना देख सकता है। जब मेरी आंखें थी तो मैं सिर्फ सीधा ही देख सकता था। अंधा होने के बाद मैं तमाम दुनिया देख सकता हूं।

ओलेमू : मैंने कपड़ा बांध लिया है। हे भगवान, मुझे कुछ दिखाई नहीं देता अब मैं क्या करूं।

आकोनेडी : अपनी आत्मा की आंख को खोलो। और जहां हो वहां घूमते रहो, घूमते रहो। जब तक तुम यह देख सको कि दुनिया में सब कुछ कैसे घूमता है।

ओलेमू : (थक जाता है और घबरा भी जाता है) मैं थक गया, मुझे चक्कर आ रहे हैं, मैं गिर जाऊंगा। क्या मैं अब रुक नहीं सकता। मैं सात बार तो चक्कर खा चुका हूं—आप कहां है ?

आकोनेडी : सत्तर गुना सात दफा भी हो सकता है। यह इस पर निर्भर करता है कि तुम कितनी अच्छी तरह या खराब तरह दौड़ते हो। अब पट्टी खोल दो और अपनी जगह बैठ जाओ। अपने बाएं पाव के अंगूठे पर इस तेल से मालिश करो। यह तेल सप्तरिषी सितारों से लाया हुआ है।

ओलेमू : (हांफ रहा है) धन्यवाद—मुझे बहुत पसीना आ रहा है। मुझे किसी से मिलना है। अब मुझे जाना चाहिए।

आकोनेडी : अब रहा तुम्हारी दक्षिणा का सवाल सो भगवान की मर्जी पर है। अपने पीछे देखो और पढ़ो कि क्या लिखा है।

ओलेमू : (घबराकर पीछे देखता है) कोई लिख रहा है कौन है ?

आवाजें : (धीरे-धीरे मंत्र के उच्चारण की तरह)

सात कौड़ी सात मानीलास,
सात फौरदिंग, सात पेन्स
सात तोरोस, उतनी ही सोसी
सात शिलिंग सात पौंड
सात गोली सात जगह पर।

[इलेक्शन की मीटिंग हो रही है। वही शोरगुल जो ऐसी मीटिंग में होता है।]

पहला आदमी : इसके बाद कौन बोलेगा ?

दूसरा आदमी : शायद नेता ओलेमू।

तीसरा आदमी : ओह—वो नेता कब से बन गया ?

पहला आदमी : दोस्त नेता तो तुम भी बन सकते हो, दो पौंड एक बकरा और एक बोतल शराब दो। यह बताओ तुम अपना वोट इसको दोगे ?

तीसरा आदमी : यह तो इस बात पर निर्भर करता है कि वो नेता है या नहीं।

दूसरा आदमी : नेता है या नहीं उसे छोड़ो यार—किराए की सोचो—

और आवाजें : शश शश—वो बोलने जा रहे हैं ?

ओलेमू : अब देखने-समझने का वक्त आ गया है। और मैं आप सबसे यह अपील करूंगा कि आप लोग यह देखें कि हर एक उम्मीदवार ने क्या-क्या काम किया है। (तालियों की गड़गड़ाहट) आज मैं मानव जाति के अधिकारों की रक्षा पर बोलूंगा। (तालियां और जोर से बजती हैं)वो दिन गुजर गए, वो जमाना बीत गया, जब हमारे शहर, शहर तो क्या तमाम मुल्क तमाम महाद्वीप की आर्थिक, सामाजिक और दैनिक दशा का गला साम्राज्यशाही के हाथों से दबाया जा रहा था(तालियां और भी जोर से बजती हैं) मेरी पार्टी का उद्देश्य यही है कि इंसान के हाथों इंसान का शोषण हमेशा-हमेशा के लिए खत्म कर दिया जाए। इसी को मद्देनजर रखते हुए और हमारे लोगों के जनजीवन मे सुधार लाने के लिए हमने एक शक्तिशाली कमेटी बनाई है जो अपनी निगरानी में अच्छे मकान बनवाएगी और किराया ऊंचा न बैठे इस पर ध्यान रखेगी और यह कमेटी तमाम लोगों की हर खुशी के लिए काम करेगी।

[तालियां और शोर काफी जोर से होता है फिर धीरे-धीरे बंद हो जाता है।]

ऐलीसा : आज शाम को आपकी स्पीच बहुत अच्छी थी। मुझे यकीन है कि आपको काफी लोग वोट देंगे।

ओलेमू : मैंने अपनी ड्यूटी कर दी। अब यह उनके ऊपर है कि कल जब वोट देने जाएं तो लोगों के बहकाने में न आएं। मेरी जान, आओ

जरा तुम्हें अपनी बांहों में ले लूं।

ऐलीसा : जरा ठहरिए—मैं यह रेडियोग्राम बन्द कर दूं।

ओलेमू : अच्छा काम देता है ?

ऐलीसा : हां—आप थक गए होंगे।

ओलेमू : हां, थक तो गया हूं मगर चैन कहां ? तुम्हारे यहां से जब जाऊंगा तो जो जमीन कल खरीदी थी उसे देखने जाना है—

ऐलीसा : नया प्लाट लिया है ? आपने मुझे बताया नहीं। किसने बेची ?

ओलेमू : किसी को बताना मत। सरकारी जमीन है। खास इंतजाम करना पड़ा।

ऐलीसा : आप तो अच्छी तरह से जानते हैं मैं कभी नहीं बताऊंगी।

ओलेमू : जरा खिड़की बन्द कर दो ऐलीसा, मुझे सरदी है—मुझे आज भी किराया लेने जाना है।

ऐलीसा : जरा आराम करिए—अपना काम करने के बाद फिर आ जाइए।

ओलेमू : (थोड़ा-सा नाराज होता है) तुम आराम की बात कर रही हो—मुझे इतने काम करने हैं कि जब सोचता हूं तो सर चक्कर खाता है। तुम्हें मालूम है सात बजे अपनी बीवी के साथ मुझे नामकरण समारोह में जाना है। और नामकरण मुझे ही करना है। इसका मतलब कि मैं देर से नहीं जा सकता और फिर···

ऐलीसा : आपकी बीवी भाग्यवान है। मुझे तो आप जब ही याद करते हैं जब आपको खिड़की बंद करने की जरूरत महसूस होती है।

ओलेमू : ऐलीसा ऐसा न कहो। तुम अच्छी तरह से जानती हो कि मैंने यहां कितनी रातें गुजारी हैं। मगर यह दो हफ्ते (प्यार से) मैं तुम्हारे बगैर रह भी तो नहीं सकता। तुम कितनी प्यारी हो।

ऐलीसा : (खुद की तारीफ सुनकर खुश होती है) हां, बातें बनाना तो कोई आपसे सीखे।

ओलेमू : नहीं ऐलीसा, मैं सच कहता हूं। मगर तुम यह खिड़की क्यों नहीं बंद करती ?

ऐलीसा : बस मैं सिर्फ उसी काम के लिए तो हूं।

ओलेमू : नहीं, नहीं। मेरे इलेक्शन कैंमपेन में तुमने मेरी कितनी मदद की है।

ऐलीसा : कुछ मुझे मिलेगा या नहीं ?

ओलेमू : कितना चाहिए ? पहले दरवाजा तो बंद करो।

ऐलीसा : सिर्फ सात पौंड।

ओलेमू : जरूर दूंगा। पहले अपना दिल बहला लूं फिर। तुम तो जानती

हो मैं तुम्हें किसी चीज के लिए ना नहीं कर सकता। मगर आज मुझे पांच पौंड नामकरण समारोह के लिए रखने होंगे।

ऐलीसा : पांच पौंड? यह तो बहुत ज्यादा है।

ओलेमू : मैं जानता हूं ऐलीसा, यह सब कुछ करना पड़ता है। नहीं तो इलेक्शन में चांसस् खराब हो जाएंगे। मैं जहां-जहां जाता हूं वहां-वहां पैसे देने पड़ते हैं। मेरा तमाम पैसा इसी में जाता है। यह दुनिया ही ऐसी है।

ऐलीसा : दूसरे लोग आपकी तरह घर-घर नहीं जाते हैं।

ओलेमू : मगर पोलिटिक्स और बिजनेस में यह सब कुछ करना पड़ता है। और यह परेशानियां रोजमर्रा की जिन्दगी में भी घुस जाती है और ठीक वैसे ही परेशान करती है जैसे एक बदचलन औरत।

ऐलीसा : क्या उस वक्त भी लोग एक दूसरे को प्यार करते है?

ओलेमू : हां, अगर वफादार नहीं हैं तो। तुम यह सवाल-जवाब बन्द नहीं करोगी। आओ अब और न सताओ; तुम्हारी दूरी सही नहीं जाती। आ जाओ···आओ···आओ···

आकोनेडी : पिछली पूर्णमासी के दिन वो टैक्सी उस जवान औरत को मेरे दरवाजे पर लेकर आई थी। आज वो उसके दरवाजे पर है। सो दोस्तो, जिन्दगी का पहिया घूम रहा है, कहानी अभी खत्म नहीं हुई।

[दरवाजे पर दस्तक की आवाज]

ऐलीसा : सैम्युल

सैम्युल : मिस ऐलीसा, क्या हाल है? चुहेदानी मे चूहा फंसा या नही?

ऐलीसा : कौन-सा चूहा?

सैम्युल : अरे वही बड़ा चूहा जो तमाम जमीन में बिल खोद रहा है और सारा अनाज खा रहा है।

ऐलीसा : तुम्हारा मतलब चेयरमैन से है? अरे चालाक चूहे को फांसना आसान नहीं।

सैम्युल : हा···हां···चालाक आदमी को भी मौत आती है—दफनाया उसको भी जाता है।

ऐलीसा : (गोपनीय तौर पर) वो कहता है कि उस अन्धे ने उससे बहुत

ज्यादा पैसा ऐंठ लिया, उस दिन से बहुत नाराज है।

सैम्युल : उसको किस बात की फिक्र है। हर महीने इतनी तनखा लेता है कि टोपी भर जाए। और जो ऊपर की आमदनी मकानों के किराये से, ट्रक और ट्रैक्टरों से होती है वो और।

ऐलीसा : उसका दीवाला निकल गया है।

सैम्युल : यह तो उसका कहना है। तुम्हें बेवकूफ बनाने के लिए। मैं उस जोगी के पास जाकर मेरा कमीशन मांगता हूं।

ऐलीसा : तुम्हे मालूम। जब से उस जोगी के पास से आए है, रोज उसका अपनी बीवी से झगड़ा होता है।

सैम्युल : तुम्हारे लिए तो अच्छा है, फिर ऐसा ही तो होना था।

ऐलीसा : मुश्किल तो यह है कि अब हर रात यहीं बिताता है। मुझे सोने भी नहीं देता। (जम्हाई लेती है)

सैम्युल : ठीक है सो जाओ आराम करो—मैं तो जोगी के यहां जा रहा हूं।

ऐलीसा : मैं भी तुम्हारे साथ चलूंगी।

सैम्युल : तुम्हारी मर्जी। ऐसा लगता है कि बारिश होने वाली है।

ऐलीसा : हां, हो तो रही है।

सैम्युल : जल्दी करो। मैं नही चाहता कि चेयरमैन साहब मुझे यहां पर देखें।

ऐलीसा : वो इस वक्त यहां नही आते, चलो चलें—सैमी वो छाता ले लेना।

आकोनेडी : मैं सुन सकता हूं
उन बूटों की आवाज
जो दफ्तर के पास पहुंच रही है।
उसके मुंह से शराब की बू आ रही है
उसकी आंखें बाज की सी हैं
जो अपनी शिकार की तलाश में है।
वो रुका—दरवाजे पर दस्तक दी
यह सब कुछ यूं ही तो नही होता।
कुछ जरूर होने वाला है।

अंधेरा

[दरवाजे पर दस्तक की आवाज]

नकेम : (शराब के नशे में) मिस्टर ओलेमू, हाउसिंग कमेटी के चेयरमैन, यह जरूर उसी का दफ्तर है। मगर तो हरामजादा है कहां? मैं क्लब में एक बोतल और पी सकता था। मेरा वक्त यूं ही बरबाद किया। (टेलीफोन बजता है) हैलो, हां चेयरमैन का दफ्तर है, कैसी घूस? ओ तुम्हारे मकान के मामले में जो मदद की थी। तीस पौंड। यहां लाने के लिए। नहीं, सुनो, तुम ग्यारह बजे मोगाम्बो क्लब आ सकते हो? ठीक है। मेरे साथ मेरा भाई होगा, मगर घबराने की कोई बात नहीं। हां, मैं जानता हूं तुम मिनिस्टर के भाई हो। हां, हम तुम्हें मदद करने की पूरी कोशिश कर रहे हैं। ठीक ग्यारह बजे रात को। क्या मेरी आवाज। यूं ही जरा थका हुआ हूं। अच्छा ठीक है—नमस्कार।

ओलेमू : ओह क्या आप ही पुलिस इन्सपेक्टर हैं? माफ करना आपको मेरा इन्तजार करना पड़ा, मुझे किसी काम से बाहर जाना पड़ा।

नकेम : कोई बात नहीं मिस्टर ओलेमू—मुझे जगह मिल गई और काम शुरू करने से पहले मैं आपसे मिलना चाहता था।

ओलेमू : तुम शायद जानते हो उस चालाक जोगी की बाबत। मैंने पुलिस में स्टेटमेंट दे दिया है।

नकेम . जी हां, आपकी रिपोर्ट के बाद हेड क्वाटर ने मुझे इबादान से बुलाया है।

ओलेमू . मुझे उम्मीद है कि उससे पैसा वापस लेने में आप मेरी पूरी मदद करेंगे। माफ करना आपका नाम...?

नकेम : नकेम ओसटिन नकेम।

ओलेमू . मिस्टर नकेम, आप मेरे भाई की तरह है। मैं कई महीनों से ओवर ड्राफ्ट पर जिन्दा हूं और यू ही फिजूल में साठ पौंड गंवा दूं यह मैं सह नहीं सकता।

नकेम : आप खुशकिस्मत हैं कि आपको ओवर ड्राफ्ट मिल तो जाता है। मुझे तो बियर के पैसे भी नहीं देते।

ओलेमू : अगर मुझे पैसे वापस मिल गए तो हम साथ पियेंगे और तुम्हें मैं कुछ कोला भी दूंगा।

नकेम : कोला की बात बाद में करेंगे, और रही पीने की सो इतना इन्तजार कौन करे—आज मोगाम्बो क्लब में इन्तजाम नहीं हो सकता? यही साढ़े दस बजे।

ओलेमू : हां-हां, क्यों नहीं।

नकेम : तो ठीक है उस वक्त तक मैं अपना भी पूरा कर लूंगा, आपसे एक सवाल पूछना था, इस जोगी से पहली बार आप कैसे मिले ?

ओलेमू : तुम तो जानते ही हो यह कैसे होता है, मेरी जान-पहचान की एक औरत है उसके सामने किसी बेवकूफ ने उस जोगी की तारीफ की और उसने मुझसे बताया । मैं मानता हूं कि मैं बेवकूफ था कि उसकी बातों में आ गया ।

नकेम : अच्छा। आप क्या सोचते है वो आदमी और औरत उसके खिलाफ गवाही देंगे ।

ओलेमू : उसका तो नही मालूम मगर वो ना नही करेगी । मैंने बताया न वो मेरे काफी नजदीक है । यू ही समझ लो कि वो मेरी दूसरी बीबी ही है । तुम चाहो तो तुम्हें अभी ले जा सकता हूं मिलाने के लिए ।

नकेम : नही, अभी नहीं ।

ओलेमू : तो तुम जरूर यह चाहोगे कि मैं समाधि पर तुम्हारे साथ चलू ।

नकेम : मिस्टर ओलेमू । मैं पांच साल से डिटेक्टिव का काम कर रहा हूं । मैं अपना काम आपकी मदद के बगैर कर सकता हूं । आज शाम को मोगाम्बो क्लब में मिलेंगे । नमस्कार ।

ओलेमू : क्या मजाल है ? (जोर से पुकारता है) आमोस, तुम कहां थे जब वो यहा आया था ? और किराया लाये हो ?

आमोस . जी, किराए के लिए आपने कहा था कि मैं दो घन्टे मे ला दू ।

ओलेमू : क्या बकवास करता है, इधर आ साले बताता हूं चुज्जे कही के ।

आमोस : सरकार, माफ करिये सरकार—लो आपको चोट लग गई ।

ओलेमू : (गालियां देता है गुस्से में) मेरा सर—मेरा सर—साले बदमाश कही के पछतायेगा साले ।

आवाजें : (गूंजती है ऐको आता है) उठो—हिम्मत से काम लो ।

ओलेमू : मैं अन्धा हो गया हूँ । मुझे कुछ नही दिखाई देता ।

आवाजें : कुछ नही हुआ, तुम्हारी आंख के उपर थोड़ा-सा कट गया है । यह सब तुम्हारा ही कसूर था ।

आमोस : सरकार माफ करिये—मैं थोड़ा-सा पानी लेकर आता हूं ।

ओलेमू : (बड़बड़ाता है) मेरी आंखों पर खून ही खून है । इतना खून—मैंने उसको चुज्जा कहा । हां मैंने चुज्जा कहा—उसने मुझ से यह क्यों कहा था "बाज की तरह चुज्जों पर मत झपटो ?" (जल्दी और तेज बोलता है) उस अन्धे ने यह क्यू कहा ? मगर बाज कौन है, मैं या वोह ?

आवाजें : मिस्टर ओलेमू आप घबरा रहे है। उस लड़के को क्यों नही छोड़ देते ? हम अम्बुलेंस मंगवायें, या तुम्हे उस जोगी के पास ले जायें ?

ओलेमू : (बड़बड़ाता है) यह लड़का उस चुज्जे के बारे में क्या जानता था, मुझे पैसे देने की बजाय आवारापन कर रहा है। (जोर से बोलता है) वो क्या जानता है। (फिर बड़बड़ाता है)। मेरी आंखों पर लाल पट्टी बांध दी···और जोर-जोर से चक्कर लगवाए···(जोर से बोलता है) और इस बीच मेरे पैसे लूट लिए —चोर कही का बदमाश—मैं चुज्जे की तरह उसकी गर्दन मरोडकर रख दूगा। मेरे पैसे—मेरे पैसे वसूल करने के लिए मुझे अभी जाना चाहिए—मुझे आज ही वसूल करने हैं।

आवाजें : (गूंजती है) मिस्टर ओलेमू थोडी देर रुक क्यो नही जाते ? मिस्टर ओलेमू जरा सोच-समझकर काम कीजिए।

आमोस : (पास आता है) सरकार, मैं आपके लिए पानी लाया हू।

ओलेमू : (गुस्से में) हरामजादे किराया भी लाया है ?

आमोस : नही-नही, चेयरमैन साहब।

ओलेमू : आज रात के आठ बजे तक का वक्त देता हूं। और उस वक्त मैं कहां होऊगा यह तुमको जानना होगा।

[गाने बजाने का शोर। कुछ लोग बातें कर रहे हैं। मोगाम्बो क्लब का सीन—पास में अंधेरे में कुछ आवाजें आती हैं]

ऐलीसा : (धीरे से) सैमी बताओ—क्या वो अन्धा हमेशा उस पिंजरे में छुपा रहता है।

सैम्युल : वो उसे कभी नही छोड़ता—वही खाता है, वही सोता है—तमाम काम वही करता है।

ऐलीसा : लाख-लाख शुक्र है उस भयानक समाधि से हम बाहर निकल आए। मैं यहां अकेली कभी नही आऊगी। ऐसा लगता है जैसे वो इस दुनिया का नही—

सैम्युल : उसकी दुनिया चांद के चारों तरफ है। मगर वो हमारी दुनिया को हमसे अच्छी तरह जानता है। तुम्हें याद है ? उसने कहा था कि आज हमें कोई खतरा हो सकता है। हमें दिन रहे शहर पहुंच जाना चाहिए।

ऐलीसा : उसने तुम्हें कितना दिया, सैमी ?

सैम्युल : यह मेरा निजी मामला है।

ऐलीसा : (नाराज होकर) तुम्हारा निजी मामला ! क्या मतलब ? उसमें से कुछ मुझे नहीं दोगे ?

सैम्युल : (जोर से बोलता है) तुम औरतों को समझना मेरे लिए मुश्किल है। एक तो तुम्हारी मदद करूं, अरे अहसान मान ना तो दूर शुक्रिया तक नहीं। तुम जानती हो अगर चेयरमैन को आज किराया नहीं दिया तो वो मेरे भाई आमोस को धक्के देकर मकान से निकाल देंगे।

ऐलीसा : (गुस्से में जवाब देती है) तो मैं क्या करूं—एक तो तुम्हारे साथ यहां आई, और···अरे बाप रे···यह तो चेयरमैन की मोटर है। सैमी, हम यहां से चले क्यों नहीं गए ?

ओलेमू : (उनके पास आता है)। ऐ तुम दोनों यहां पर क्या कर रहे हो ? ऐलीसा, तुमको यहां पर किसने भेजा ?

ऐलीसा : (बात टालती हुई) । ओफ ओ—चेयरमैन साहब, आपकी आंख को क्या हुआ ?

ओलेमू : (उसकी बात अनसुनी करके) मैं यह पूछ रहा हू तुम यहां क्या कर रही हो ?

ऐलीसा : हम आए थे—मुझे सैमी लेकर आया···

ओलेमू . क्या बड़बड़ा रही हो। सैमी कौन है। मैं इस समाधि पर आया हूं अपना पैसा वापस लेने। और देखता क्या हू कि तुम यहां पर एक टैक्सी ड्राइवर से इश्क कर रही हो।

ऐलीसा : (यह बात बुरी लगती है) कौन इश्क कर रहा है ?

सैम्युल : ऐसी कोई बात नहीं है, सरकार—इस अन्धे आदमी से मिलने आए थे।

ओलेमू : (गुस्से में) चुप रहो—यह सब क्या है ऐलीसा ? ठहरो, अभी तुम दोनों का दिमाग ठिकाने करता हूं।

नकेम : (उन सब के पास आते हुए) मिस्टर ओलेमू—आप यहां ? मैंने तो आपको कहा था न कि परेशान होने की कोई जरूरत नहीं। अरे यह आख पर पट्टी कैसी ? एक्सीडेंट ? कैसे हुआ ?

ओलेमू ' कोई खास बात नहीं मिस्टर नकेम—

नकेम : यहां यह सब क्या हो रहा है ? अरे लोजी, तुम यहा क्या कर रही हो ?

ऐलीसा : (उसके हाथ-पांव ठंडे पड़ जाते हैं) ओस्टिन मैं···मैं···मैं।

नकेम : अच्छा लीजी, अपना बटुवा निकालो (दोस्ती में) मैं किसी जांच-पड़ताल के लिए यहां शहर आया था। मोगाम्बो क्लब में कुछ शराब पी तो देखा कि पैसे ही खत्म। यह लो तुम्हारे लिए तीन शिलिंग छोड़ देता हूं। ठीक है ना?

ओलेमू : (उन दोनों की दोस्ती देखकर दुख होता है) मिस्टर नकेम, तुम इसको जानते हो?

नकेम : (यूं ही लापरवाही से) किसे? लीजी को? हां, मेरी मंगेतर है, चाहो तो मेरी बीवी समझ लो, इबादान में अच्छी नौकरी नहीं दिलवा सकता इसीलिए इसको यहां मजबूरन एक घटिया कंपनी में जो पलंग बनाती है काम करना पड़ता है। मगर मिस्टर ओलेमू, आप यहां क्यों आए? आप समझते हैं न आपके यहां होने से मेरा काम बिगड़ सकता है।

ओलेमू : (गुस्से में) मैं यहां क्यों आया—वाह क्या सवाल पूछा है! मुझे मालूम पड़ा कि मेरे पैसों का ज्यादा हिस्सा तुम्हारे पास पहुंचता है। और यह औरत तुम से और उस टैक्सी ड्राइवर से इश्क करती है। और तुम मुझसे पूछते हो कि मैं यहां क्यों आया…

नकेम : ऐ—क्या नाम है तुम्हारा—जहां हो वहीं खड़े रहो, वर्ना मुश्किल होगी।

सैम्युल : (दूर खड़ा है) मैं तो टैक्सी ड्राइवर हूं साहब, यही मेरा काम है।

ऐलीसा : (रोती हुई) सैमी—सैमी, मुझे छोड़कर मत जाओ सैमी।

नकेम : (ऐलीसा से) चुप रहो तुम! (ओलेमू से) चेयरमैन, यहां जो भी कुछ हो रहा है मेरी समझ में बिल्कुल नहीं आ रहा है, या तो आज दुनिया बहुत तेजी से घूम रही है—या फिर सब नशे में हैं।

ओलेमू : (दुखी है) सच है, ओछे लोगों को मुंह नहीं लगाना चाहिए। यह औरत मेरे पैसे पर जिन्दा है और…

नकेम : (ताज्जुब होता है) तुम्हारे पैसे पर? ऐलीसा?

ओलेमू : (बेहद गुस्से में ऐलीसा को मारने के लिए उठता है) और उस पर तुर्रा यह कि मुझसे इस अन्धे के यहां पर चक्कर लगवाये—और फिजूल में मेरे पैसे खर्च करवाए—मुझे अब मालूम पड़ा कि मेरे पैसे चारों तरफ कहां-कहां खर्च होते हैं, यहां तक कि इबादान में तुम्हारे पास भी पहुंचते हैं। (ऐलीसा से) बदजात औरत।

ऐलीसा : (मदद के लिए चिल्लाती है) ओस्टिन। ओस्टिन।

नकेम : (हुक्म देता है) ओलेमू—खबरदार जो लड़की के हाथ लगाया। यह मेरी मंगेतर और फिर तुम जानते हो, मैं यहां ड्यूटी पर हूं।

ओलेमू : ड्यूटी ! जब तुम मेरे दफ्तर में आए थे तो नशे में धत्त थे, मैं तो उसी वक्त जान गया था कि पैसे वसूल करना तुम्हारे बस का रोग नहीं।

नकेम : मैं अपनी ड्यूटी अच्छी तरह से जानता हूं।

ओलेमू : कैसी ड्यूटी ! मैं तुम्हें बता रहा हूं कि इस कुतिया को आज रात उस मकान से धक्के देकर निकाल दूंगा जिस मकान का किराया मैं देता हूं।

ऐलीसा : (रोती हुई) कुतिया कौन है, तुम्हारी बीवी ? तुम्हारी मां··· या···

नकेम : सुनो गाली देकर अपने केस को और मत बिगाड़ो। काश कि तुम जानते कि तुम कितने बुरे फंसे हुए हो। अगर थोड़ी भी अक्ल है तो जबरदस्ती करने की कोशिश मत करना।

ओलेमू : (उसकी बात को परवाह न करते हुए)। बकवास ! मेरा हाथ छोड दो। यह कुतिया है।

ऐलीसा : (अभी भी रो रही है) मैं तो मकान से निकल जाऊंगी—मगर तुम्हारा भांडा फोड़ कर रहूंगी, जो तुम कोला लेते और देते हो उसका क्या है—और वो सरकारी जमीन अपने नाम कैसे करवा ली—

नकेम : लीजी, तुम चुप रहो—जाओ मोटर मे जाकर बैठो।

आमोस : (आता है, सांस फूली हुई है) सरकार—मैं—अपना किराया ले आया हू। सैम्युल से मालूम पड़ा कि आप कहां मिलेंगे।

नकेम : लड़के तुम्हे क्या तकलीफ है ?

आमोस : (डरा और घबराया हुआ है) जी मेरा नाम आमोस है—चेयरमैन साहब ने कहा था कि आज रात आठ बजे से पहले मैं अपना किराया चुका दू···मै।

नकेम : ठीक है, तुम एक तरफ खड़े हो जाओ—तुम्हारे चेयरमैन के पास पैसा बहुत हो गया है। उनका सर फूल गया है। मिस्टर ओलेमू जिस तरह आप गाली-गुफ्ता से पेश आये हैं आपको मेरे साथ चलना ही होगा। मैं किसी भी तरह से आपको माफ नही कर सकता।

ओलेमू : मगर तुम से माफी चाहता कौन है ?

नकेम : आपको अभी मालूम हो जाएगा कि मैं आपके बारे मे क्या-क्या जानता हूं, चलो।

ओलेमू : क्या जानते हो तुम, यह सब झूठ है, बकवास है, इसके पास क्या

सबूत है।

नकेम : नही, तुम्हारी मोटर मे नही, मेरी मोटर में—तुम गिरफ्तार कर लिए गये हो।

ओलेमू : कैसी गिरफ्तारी ?

नकेम : तुम्हारी हरकतों का सबूत मोगाम्बो क्लब मे मिलेगा।

ओलेमू : कैसा सबूत ?

नकेम : मिस्टर ओलेमू, अंजान बनने की कोशिश मत करो—एक महीने पहले जो एक खास आदमी तुम्हारे दफ्तर में आया था उसको भूल गए क्या ? क्यों ? उसके मकान की बाबत तुमने उसकी मदद भी की थी न ?

ओलेमू : सो क्या कहता है वो ?

नकेम : तुम्हारे लिए तोहफा लेकर मोगाम्बो क्लब में तुम्हारा इंतजार कर रहा है। उसे मैंने ही वहां बुलाया है। जब हम दफ्तर में मिले थे तो तुमने सोचा कि मै नशे में था, मगर तुमने गलत सोचा। मैं उतना नशे में नही था। जब तुम दफ्तर मे थे तो एक टेलीफोन आया था, और मैंने ही उठाया था।

ओलेमू : मैं कुछ नही कहना चाहता।

नकेम : चलो जल्दी से चलो।

आवाजें : (Echo/गूंज) जिस तरह दीमक लकड़ी को खोखला बनाकर छोड़ देती है वही हाल तुम्हारी जिन्दगी का भी है।

आवाजें : (Echo) बाज की तरह चुज्जों पर मत झपटो।

आवाजें : बाज की तरह चुज्जों पर मत झपटो।

आवाजें : (Echo) यह धरती जो घूमती रहती है यह उतनी ही गहरी और गंदी है, जितना गहरा और गंदा कूड़े-करकट का गड्ढा होता है।

शर्त



कुलदीप सोंधी (KULDEEP SONDHI)

कुलदीप सोंधी का जन्म लाहौर में 1924 में हुआ। कीनीया(Kenya) में तालीम हासिल की और अमेरिका में ऐरोनोटीकल इंजीनियरिंग में M.Sc. की डिग्री हासिल की। नाटक शौकिया लिखते हैं—इनका एक और नाटक UNDESIGNATED छप चुका है।

पात्र

सावित्री
देव
नजेरोग
सिनयोया
मोहन

दृश्य-1

[देव के मकान की बैठक। देव एक पत्र पढ़ रहा है। सावित्री एक छोटी-सी तस्वीर जो फ्रेम में लगी हुई है, लेकर अन्दर आती है। उसे एक नजर से देखकर मेज़ पर रख देती है। देव बहुत ही ध्यान से पत्र पढ़ रहा है। सावित्री खुश नज़र आ रही है।]

सावित्री : क्यों ऐतबार नही होता ?

देव : सच पूछो तो नहीं।

सावित्री : नही (पत्र को लेती है उसे देखती है) क्यों नहीं ? उसके दस्तखत हैं। अमेरिका की टिकट लगी है। और साफ-साफ लिखा है कि "मैं दस हजार पौंड दूंगा, अगर तुम्हारा लड़का मोहन शादी करके अगले बारह महीने में एक वारिस पैदा करे।"

देव : वारिस पैदा करे !! उसे समझ क्या रखा है, वो कोई खुदा है !

सावित्री : बेकार की बातें मत करो, हमने भी तो यह कई बार सोचा है कि अब उसे शादी करनी चाहिए। वो मोहन के भले के लिए ही तो कर रहा है।

देव : मोहन के भले के लिए !! आज दिन तक वो मोहन से मिला तक नहीं है, तुम जानती हो यह सब कुछ क्या है ?

सावित्री : क्या है ?

देव : यह (पत्र को दिखाते हुए) यह अनुदान है जिससे बहुत सारी शर्तें जुड़ी हैं।

सावित्री : अच्छा ? तो तुम्हारे ऊपर कोई जबरदस्ती तो नहीं कर रहा। तुम अगर यह अनुदान नहीं चाहते हो, तो मत लो।

देव : इतनी बड़ी रकम के लिए यह कहना कि 'मत लो' इतना आसान नही है। यह अनुदान जो हमें दिया जा रहा है, इसे हम मानें या न मानें, मगर आज से हमारी जिन्दगी हमारी नही रहेगी, हम उसके हाथों में कठपुतली बन के रह जाएंगे।

सावित्री : तुम इस बात से खुश नहीं हो क्योंकि इससे तुम्हारे अभिमान को ठेस लगी है, अगर मोहन मेरे भाई सुबोध जैसा निकल जाए तो मुझे बेहद खुशी होगी।

देव : बकवास, वो दोनों एक जैसे हो ही नहीं सकते। मोहन एक केमिस्ट है, एक पढ़ा-लिखा इंसान है, तुम्हारे भाई ने सिर्फ फल बेच-बेचकर पैसे बनाए थे, उसने अपना फोन नम्बर भी दिया है, कि अगर हम उसके सुझाव से खुश हों तो फोन पर बात कर सकें।

सावित्री : देव, यह बहस छोड़ो मेरे तो सर में दर्द होने लगा। मैं तो एक बात जानती हूं कि हमें काफी बड़ी रकम भेंट में मिल रही है, उसे लें या न लें यह हम पर है। मुझे तो ऐसा लगता है जैसे मेरा सपना पूरा हो गया। अब मोहन को दहेज मिले या न मिले मुझे इसकी फिक्र नहीं। बस एक अच्छी पढ़ी-लिखी लड़की मिल जाए, मेरी तो तमाम मुश्किलें आसान हो गई।

देव : नहीं, तुम्हारी मुश्किलें आसान नहीं हुई। यह मत भूलना कि अब से तुम्हारी आत्मा तुम्हारी नहीं रहेगी, इस सौदेबाजी में वो बिक जाएगी।

सावित्री : मुझे नहीं मालूम कि सुबोध भाई आत्माएं खरीदते हैं।

देव : यह और तरह की आत्मा है।

सावित्री : तुम बहुत किताबें पढ़ते हो, इसलिए तुम्हारे ख्याल उलझे हुए हैं। देखना जब मोहन को यह मालूम होगा तो वो कितना खुश होगा।

देव : हां, क्यों नहीं, इतना पैसा मिले तो कौन खुश नहीं होगा, मगर शायद वो इसकी कीमत देने को तैयार न हो।

सावित्री : कीमत !! (टेलीफोन की घंटी बजती है, रिसीवर उठाती है) हैलो, ओ—मोहन कहां से बोल रहे हो, अपनी फ्लैट से, मोम्बासा के लम्बे सफर से थक गया होगा न, नहीं टैक्सी मत बुलवा, मैं आ रही हूं (पॉज) यही पन्द्रह मिनट में, मोहन तुझे एक अच्छी खबर सुनानी है। नहीं, फोन पर नहीं, जब मिलूंगी तब बताऊंगी (फोन रखती है, देव से कहती है) उसने अपनी गाड़ी धोने के लिए दी है।

देव : अच्छा? तुम्हारे बेटे के साथ सबसे बड़ी तकलीफ यह है कि उसे अपनी जिन्दगी की कोई फिक्र नहीं। नेरोबी के बीचोबीच उसकी इतनी अच्छी दूकान है मगर वो वहां बैठता कब है, जब देखो तब बाहर, जरा तफरीह छोड़कर अपने ग्राहकों पर ध्यान दे तो

अच्छा-खासा बिजनेस कर सकता है। पिछली साल वो समुद्र के किनारे दस बार गया होगा।

सावित्री : उसका बिजनेस है वहां।

देव : क्या बिजनेस है ? कभी पूछा है भी उससे ?

सावित्री : हां, कुछ कह तो रहा था कि दवाइयों के साथ-साथ मरीजों को भी देखना पड़ता है।

देव : हां, उनके जिस्मों को। खैर, तुम उसकी मां हो, अगर इन पैसों के लालच में शादी कर ले तो शायद कहीं भला हो जाए। वैसे समुद्र के किनारे पर अपनी समाज के कई परिवार हैं। अगर उनमें से किसी लड़की पर उसकी नजर है तो अच्छा ही है।

सावित्री : अगर लक्ष्मण की लड़की उसे पसंद आ जाए तो अच्छा हो। वो पैसे वाले भी हैं और फिर वीणा खूबसूरत भी है।

देव : हां, जोड़ी अच्छी रहेगी, मुझे याद है एक वक्त वो उसे चाहता भी था, शायद अभी भी चाहता हो। उस लड़के का कुछ नहीं कह सकते (घड़ी देखकर) तुम ज़्यादा देर मत लगाना। तुम्हें मालूम है आज शाम नजेरोरा आने वाला है, अगर वो अपनी भतीजी को साथ लेकर आया तो तुम्हारा यहां होना जरूरी है।

सावित्री : कौन वही जो हाल ही में इंग्लैंड से आई है ?

देव : शायद, मैं अभी उससे मिला नहीं हूं, वो अच्छे लोग हैं और नजेरोरा भी तुजुर्बेकार आदमी है। सावित्री, यह जो मैं नया बिजनेस करने जा रहा हूं, उस पर मुझे बहुत उम्मीद है।

सावित्री : जो नजेरोरा के साथ करने जा रहे हो ?

देव : हां (पाज़) तुम्हें उसके बारे में कुछ शक है ना ? क्यों ?

सावित्री : नहीं, बिजनेस के बारे में नहीं।

देव : अच्छा, तो फिर ?

सावित्री : देव, मैं जानती हूं कि नजेरोरा की और तुम्हारी अच्छी दोस्ती है, मगर क्या तुम उस पर भरोसा कर सकते हो ?

सावित्री : हां, तुम सच कहते हो, मैं नहीं भूल सकती, और भूलू भी क्यों ? तुम क्या सोचते हो कि वो यह भूल गया कि तुम एक हिन्दुस्तानी हो या एक एशियन जिस नाम से वो तुम्हें बुलाता होगा।

देव : वो मुझे किसी और नाम से नहीं पुकारता, सिर्फ देव कहता है।

सावित्री : मैं उसे बुरा-भला नहीं कहती सिर्फ यह जानना चाहती हूं कि तुम उसे कितनी अच्छी तरह से जानते हो।

देव : (कंधो को उचका कर एक तरफ से दूसरी तरफ घूमता है—कुछ

सोचता रहता है और साथ कहता जाता है) जैसे किसी और को जानता हूं—शायद इसे थोड़ा बेहतर ही जानता हूं। पन्द्रह साल पोस्ट और टेलीग्राफ के डिपार्टमेंट में एक साथ काम किया, वो भी मेरी तरह सुपरिनटेण्डेंट की पोस्ट से रिटायर्ड हुआ। हम दोनों एक ही उम्र के हैं, एक ही देश के हैं। इससे ज्यादा तो मैं क्या जान सकता हूं—जब तक कि हम में से कोई अपना रंग बदल न ले।

सावित्री : रंग बदलने के लिए कौन कहता है, मैं तो सिर्फ यह कहना चाहती हूं कि तुम उस पर विश्वास करते हो? उस पर भरोसा है? तुम जानते हो वो क्या सोचता है? उसके ख्यालात क्या हैं?

देव : कभी-कभी तो सावित्री मुझे यह भी नहीं मालूम कि तुम क्या सोचती हो। जब नजेरोग और मैं साथ होते हैं तो हम रंग-भेद को भूल जाते हैं। इससे ज्यादा विश्वास और क्या हो सकता है?

सावित्री : नहीं, यह विश्वास नहीं तुम्हारे ख्यालात हैं, देव! तुमने यह कभी सोचा है कि तुम अपनी जिन्दगी की कमाई का अच्छा-खासा हिस्सा इस बिजनेस में लगा रहे हो?

देव : हां, मैंने कई बार सोचा है, सावित्री। मैं समझता हूं कि मैं ठीक ही कर रहा हूं। नजेरोग अफरीकन है और अगर मुझे यह बिजनेस ठीक से चलाना है, सफलता पानी है, तो मुझे एक अफरीकन पार्टनर लेना ही होगा। यह मत भूलो कि यह देश उसका है।

सावित्री : यह देश तो हमारा भी है, मोहन यहीं कीनिया में पैदा हुआ। हमारा सब कुछ यहीं तो है, मगर यह सब बेकार है। नजेरोग के भरोसे पर अगर तुम पैसा गंवाना चाहते हो तो यह सब तुम्हारे काम नहीं आएंगे।

देव : मगर सावित्री, उस पर मेरा पूरा भरोसा है, अगर वो हिन्दुस्तानी होता तो मैं इससे ज्यादा उस पर भरोसा नहीं कर सकता था। और फिर बिजनेस भी तो मामूली-सा है, हमें सिर्फ कुछ मोटरें चाहिए, और ट्यूरिस्ट ऐसोसियेशन से एक अच्छा-सा कोनट्रैक्ट, बस और फिर दस हजार पौंड भी तो जल्दी ही मिलने वाले हैं।

सावित्री : अभी मिले कहां हैं। और फिर अपनी आत्मा को मत भूल जाना। (अपने बैग में से गाड़ी की चाबी निकालती हैं) बस अब और बहस नहीं। मोहन मेरा इन्तजार कर रहा है।

देव : आज तुम्हारा मिजाज कुछ चिड़चिड़ा-सा है। (दरवाजे की घंटी बजती है, देव जाकर दरवाजा खोलता है, नजेरोग और उसकी

भतीजी अन्दर आते हैं) आओ नजेरोग, आओ ! तो यह है तुम्हारी भतीजी ?

नजेरोग : हां, यही है सिनथीया, लंदन से कल रात को आई है।

[सब एक-दूसरे से हाथ मिलाते हैं, सिनथीया खूबसूरत और सभ्य है, आत्मविश्वास है, मगर खामोश रहती है।]

देव : कैसी हो सिनथीया, मुझे खुशी है कि यह तुम्हें अपने साथ ले आया, यह मेरी पत्नी है।

सिनथीया : (हाथ मिलाती है) नमस्कार।

नजेरोग : देव, मैं जरा जल्दी चला आया, मगर तुम्हारे लिए खबर लाया हूं।

देव : अच्छी खबर है ना ?

नजेरोग : खबर अच्छी है या बुरी यह फैसला तो तुम्ही करो, खबर यह है कि मुझे यह मालूम हुआ है कि ट्यूरिस्ट ऐसोसियेशन का एक डाइ-रेक्टर मेरा पुराना दोस्त है जो मेरे साथ स्कूल में पढ़ता था। यहां आने से पहले मैंने उसे फोन किया था, उसने मुझे फौरन अपने घर आने को कहा है। तुम मेरे साथ चलोगे ?

देव : हां जरूर, यह तो बड़ी अच्छी खबर है, अब तो काम जल्दी होगा। मगर थोड़ी देर बैठो तो, सिनथीया के आने की खुशी में एक ड्रिंक तो ले लें। इतने में सावित्री मोहन को भी ले आती है, फिर हम चलते हैं।

सावित्री : आप लोगों को जल्दी जाना है, मैं मोहन को अभी ले आती हूं।

देव : हां, यह ठीक है, वो तैयार भी हो गया होगा।

[सावित्री चली जाती है, देव ड्रिंक बनाता है।]

नजेरोग : मोहन पास ही रहता है ना ?

देव : हां, दूर नहीं है, इस सड़क के उस किनारे पर।

सिनथीया : क्या हाल हैं उसके ?

देव : (इसे ताज्जुब होता है) क्यों, ठीक ही है।

नजेरोग : तुम मोहन को जानती हो ?

सिनथीया : पिछली साल इंगलैण्ड जाने से पहले मिली थी, मैंने आपको बताया भी था।

नजेरोग : मुझे याद नहीं।

सिनथीया : जब मैं मोम्बासा के जनरल अस्पताल में काम करती थी तब उससे मिली थी। वो वहां पर दवाइयां बेचने आता था।

देव : (मुस्कराता है) अच्छा तो वो वहां काम से जाता था ?

सिनथीया : आप क्या कहना चाहते हैं, मुझे नहीं मालूम, मगर अस्पताल से उसे काफी ऑर्डर मिले थे।

नजेरोग : उस लड़के के बारे में काफी किस्से सुनाई पड़ते हैं, मगर मेरी मानो वो बहुत तेज और साहसी लड़का है। अगर तफरीह के लिए वो इधर-उधर घूमता फिरता है तो इसमें हर्ज ही क्या है! कभी-कभी तो मैं यह सोचता हूं कि काश मेरा भी उस जैसा एक बेटा होता।

देव : (उसे खुशी होती है) सच्ची !!

नजेरोग : हां···उसमे किस बात की कमी है ?

देव : बीवी की।

नजेरोग : (हंसता है।) हां यह सच है, मगर वो चाहे तो इस कमी को भी दूर कर सकता है।

देव . अगर चाहे तो।

नजेरोग : देव, तुम पुराने ख्यालों के आदमी हो, आजकल यह नौजवान शादी तभी करते हैं, जब उससे इन्हें कोई फायदा होता हो। मुझे यह बात सिनथीया के सामने नहीं कहनी चाहिए।

सिनथीया : क्यों नहीं ? मैं सोचती हूं कि जो आप कह रहे हैं वो ठीक भी है। शादी करने से क्या मतलब अगर उससे कोई फायदा न होता हो ?

देव : अगले बारह महीने में, नहीं बारह नहीं, तीन महीने में अगर मोहन ने शादी नहीं की तो उसे काफी नुकसान होगा।

नजेरोग : क्या तुम उसके भविष्य की कोई योजना बना रहे हो ?

देव : नहीं, मैं नहीं, तुम्हें बाद में बताऊंगा। क्यों सिनथीया, कीनिया कैसा लग रहा है ?

सिनथीया : बहुत अच्छा। मैं वापस नहीं जाना चाहती, मगर मजबूर हूं, जाना ही पड़ेगा।

नजेरोग : सिनथीया नर्स बनना चाहती है, अभी डिगरी के लिए एक साल और बाकी है।

देव : यह तो बहुत अच्छी बात है, तो फिर तुमसे मुलाकात होती रहेगी।

सिनथीया : हां जरूर, मैं एक महीने के लिए यहां हूं।

[बाहर कुछ लोगों की हंसी सुनाई देती है, मोहन और सावित्री अन्दर आते हैं।]

मोहन : गुड ईवनिंग मिस्टर नजेरोग, हैलो सिनथीया (उसके हाथ मिलाने

के लिए अपना हाथ बढ़ाता है—उन दोनों की आंखें मिलती हैं)
तुमने इनको बताया कि नही कि हम एक-दूसरे को जानते हैं ?

सिनथीया : हां, बताया।

देव : मोहन, क्या पीयोगे ?

मोहन : अगर एक कप चाय मिल जाए तो बहुत अच्छा।

सावित्री : मैं अभी बना के लाती हूं।

मोहन : ऐसी कोई जल्दी नही है मां ! तो सिनथीया, तुम वापस आ गई ?

सिनथीया : (मुस्कराती हुई) हां मोहन, देख लो वापस आ ही गई।

[सावित्री यह समझ नही पाती कि इन दोनों के बीच कैसा सम्बन्ध है। एक-दूसरे की तरफ देखकर मुस्कराती है।]

देव : (बहुत बेफिक्र हैं और बेतकल्लुफी से नजेरोग की ओर अपनी सिगरेट को जलाते हुए) क्यों सिनथीया, तुम्हें इंग्लैंड और यहां में काफी फर्क लगा होगा न ?

सिनथीया : कुछ बातों मे, मगर मेरे काम में कोई ज्यादा फर्क नहीं दिखाई दिया। कहीं भी चले जाओ, बच्चे और मां तो एक ही तरह के होते हैं।

[सब हंसते हैं]

नजेरोग : मगर सिनथीया, वहां के लोग तो अलग होंगे।

सिनथीया : इंसान-इंसान में कोई फर्क दिखाई दिया नही, हां रीत-रिवाज तो अलग हैं, मगर उनका दिल से क्या लेना-देना।

सावित्री : ऐसा कहना मन को बहलाने के लिए ठीक है।

नजेरोग : मिसेज देव, मैं आपकी बात से सहमत हूं। सिनथीया, तुम मानो या न मानो, वहां के लोग हमसे हैं अलग। यही देख लो, हम सब दोस्त हैं मगर क्या हममें कोई फर्क नही है ?

सिनथीया : सिवाय रंग के मुझे तो कोई फर्क नजर नही आता।

देव : (मुस्कुराता है) चलो तुम इतना तो मानती हो कि कुछ फर्क तो है !

सिनथीया : हां जरूर, थोड़ी देर के लिए सोचिए कि अगर हम सबमे कोई फर्क नही होता, सब एक तरह के ही होते, तो यह दुनिया कितनी नीरस होती ! आप देखते हैं मोहन में और आप मे कितना फर्क है।

मोहन : भई बड़ी खुशी की बात है, ऐसा लगता है कि इंगलैंड में काफी मन लगाकर काम कर रही हो, एक साल में तुम काफी सीख गई हो।

सिनथीया : जी हां, मैं तो मन लगाकर काम करती ही थी, मगर अभी-अभी

तुम्हारे पिताजी बता रहे थे कि आजकल तुम काफी मन लगाकर काम कर रहे हो। (सब हंसते हैं)

देव : मोहन, जरा सोच-समझकर बात करना, सेर को सवा सेर अब मिला है।

सावित्री : औरतों के साथ सबसे बड़ी मुश्किल यह है कि अगर वो कोई नौकरी या सर्विस करती हैं तो शादी के बाद उसे छोड़ना पड़ता है और तमाम ट्रेनिंग बेकार जाती है, और शादी नहीं करती हैं तो वो औरतों के तमाम गुण खो बैठती हैं।

सिनथीया : घर में बैठे-बैठे सड़ जाने से तो यह जोखिम उठाना बेहतर है।

देव : (हंसते हुए) हां...हां, तुम ठीक कहती हो। मोहन, तुम्हारे क्या इरादे हैं? सर्विस वाली चाहिए या घर में चूल्हा-चाकी देखे वो?

मोहन : फिलहाल तो किसी का भी नहीं है।

देव : खैर, जो भी इरादा हो, जल्दी मालूम हो जाए तो अच्छा है। चलो भई देर हो रही है।

नजेरोग : मिसेज देव, जब तक हम वापस आएं सिनथीया को आपके पास छोड़ दूं?

सावित्री : हां-हां, जरूर।

नजेरोग : शुक्रिया! (देव के साथ बाहर चला जाता है)

सावित्री : सिनथीया, मसाले वाली चाय पीयोगी, मोहन को बहुत पसंद है।

सिनथीया : हां, मैं पहले भी पी चुकी हूं, मुझे बहुत अच्छी लगती है।

[सिनथीया बैठ जाती है, सावित्री रसोई से चाय बनाने जाती है। जैसे ही सावित्री चली जाती है, सिनथीया एकदम से उठती है। मोहन जो खड़ा-खड़ा सिगरेट पी रहा था, सिनथीया की तरफ घूमता है और सिगरेट को बुझाता है।]

मोहन : सिनथीया, ऐसा लग रहा था कि यह हमें अकेला छोड़ेंगे ही नहीं।

सिनथीया : लग तो मुझे भी यही रहा था, तुम जानते हो मोहन पूरा एक साल हो गया है।

मोहन : मेरी जिन्दगी का सबसे लम्बा साल।

सिनथीया : सचमुच? मैं तुम्हारी आवाज सुनने के लिए बेचैन थी। तुम्हें याद है, हर हफ्ते की आखिर में तुम मुझे फोन किया करते थे।

मोहन : मुझे सब कुछ याद है।

सिनथीया : सब कुछ?

मोहन : हां, क्यों?

सिनथीया : मिस्टर लक्ष्मण की लड़की भी याद है ?
मोहन : यह क्यों पूछ रही हो ?
सिनथीया : एक वक्त तुम्हारी और वीणा की काफी अच्छी दोस्ती थी।
मोहन : तुमसे मिलने के पहले।
सिनथीया : मैं जानती हूं, मुझे यूं ही ईर्ष्या होने लगती है। मैं अब कोई अफवाहें नहीं सुनूंगी, मेरे लिए वही सच होगा जो तुम कहोगे। मगर मोहन '''एक बात बताओ, क्या तुम सचमुच शरीफ बनकर रहे ?
मोहन : हां'''मगर किसी को यकीन नहीं होता। तुम्हारे जाने के बाद पहली बार मोम्बासा गया था और वो भी बिजनेस के लिए। तुम्हारी याद बराबर आती रही और मैं यह सोचता रहा कि तुमने मेरी जिन्दगी को क्या बना दिया है।
सिनथीया : मैंने तुम्हारी जिन्दगी को क्या बना दिया ?
मोहन : तुम नहीं जानती ? तुम्हारी ही वजह से मैं इन परम्पराओं को तोड़ रहा हूं। मेरे दिल और दिमाग की तमाम खिड़कियां तुमने खोल दी हैं। मेरे लिए रंगभेद और यह तमाम छोटे-छोटे विचार, जिनमें यह दुनिया जकड़ी हुई है, अब कोई मायने नहीं रखते। मैं इन सबसे आजाद हो गया हूं। इन सबकी जिम्मेदार तुम ही हो या नहीं।
सिनथीया : मैं अपना जुर्म कबूल करती हूं।
मोहन : ठीक है, तुम आज से तमाम उम्र मेरी हिरासत में रहोगी।
सिनथीया : मोहन, क्या यह तुम और लड़कियों से भी कहते हो ?
मोहन : नहीं, और लड़कियां हैं भी नहीं।
सिनथीया : अगर यह सच है तो मुझे तुम्हारा फैसला कबूल है, मगर मोहन''' क्या तुम्हारे माता-पिता हमारे बारे में जानते हैं ?
मोहन : उनको अभी मैंने बताया नहीं है।
सिनथीया : हमें उनको जल्दी ही बताना चाहिए, इस तरह उनको बेखबर रखना ठीक नहीं।
मोहन : सिनथीया, मैं तुमसे कुछ कहना चाहता हूं।
सिनथीया : क्या ?
मोहन : मैं चाहता हूं कि तुम यहीं रहो, तुम्हारी जुदाई अब मैं सह नहीं सकूंगा।
सिनथीया : मैं यहां एक महीने रहूंगी, हम रोज मिल सकते हैं।
मोहन : वो तो ठीक है—मगर यह सब क्या बकवास है ?
सिनथीया : कैसी बकवास ?

मोहन : हम एक-दूसरे से प्यार करते हैं, यह कोई पाप तो नहीं है, फिर हम इसे छुपाएं क्यो ? मै तुमसे फौरन शादी करना चाहता हूं।

सिनथीया : (खुश है) तुम्हारा मतलब, अभी, इसी वक्त ?

मोहन : हां।

सिनथीया : ओह, मैं आज कितनी खुश हू ! मोहन, मुझे तुम पर हमेशा थोड़ा-सा शक था, मगर आज वो बिलकुल दूर हो गया। अब हमें कोई भी एक-दूसरे से जुदा नही कर सकता। मेरी बात मानो, थोड़े दिन और रुकने मे कोई हर्ज नही है।

मोहन : यह बात मेरी समझ मे नही आती। भला हम क्यों रुकें ? मैं आज रात ही अपने माता-पिता से कहूंगा, उन्हे इस बात पर राजी होना ही पड़ेगा।

सिनथीया : अगर तुमने जोर-जबरदस्ती की तो वो ना भी कर सकते हैं।

मोहन : अब हमें वक्त नही गंवाना चाहिए, बस तुम अपनी तरफ संभालो मैं अपनी तरफ।

सिनथीया : मोहन, तुम्हे बड़ी जल्दी पड़ी है। मुझ पर भरोसा करो, मैं कल सुबह भाग कर नही जा रही।

मोहन : मै जानता हू तुम तो भाग कर नही जा रही, मगर वक्त भागा जा रहा है।

सिनथीया : मोहन, क्या कोई ऐसी बात है जो तुम मुझ से कहना चाहते हो ?

मोहन : क्या मतलब ? क्या कहना चाहती हो ?

सिनथीया : मैं क्या सोचती हूं, बताऊं ?

मोहन : हा, हां, जरूर।

सिनथीया : मुझे ऐसा लगता है कि तुम्हारे माता-पिता तुम्हारी शादी कही और करना चाहते हैं, और तुम इस जल्दी मे हो कि वो तय करें उससे पहले तुम मुझ से शादी कर लो। क्यो ठीक है ना ? तुम हंस क्यों रहे हो ?

मोहन : तुम्हारे ऊपर। हो सकता है कि तुम ठीक सोच रही हो, इसीलिए मैं कह रहा हूं कि तुम इंगलैंड जाओ उससे पहले हम शादी कर लें। इसमे हर्ज ही क्या है ?

सिनथीया : नही, इसमें हर्ज तो कुछ भी नही, और अब तुम मेरे साथ हो तो फिर किस बात का डर; मगर मै यह चाहती हूं कि हमारी शादी उनकी मर्जी से हो। मैं अपने चाचा की मर्जी के खिलाफ शादी नही करना चाहती। मेरे माता-पिता के स्वर्गवास के बाद उन्होंने ही मुझे बड़े प्यार से पाला है, कभी भी यह महसूस नही होने

दिया कि मैं अनाथ थी। मैं नहीं चाहती कि मेरी वजह से उनको किसी बात का दुख हो।

मोहन : सिनथीया, तुम्हारे चाचा शायद यह न जानते हों, मगर वो उतने ही पुराने ख्यालों के हैं जितने मेरे माता-पिता।

सिनथीया : मैं जानती हूं। मुझे इसी बात का डर है, वो मेरी शादी एक मिनिस्टर से करवाना चाहते हैं।

मोहन : मिनिस्टर से ?

सिनथीया : हां।

मोहन : कौन-सा मिनिस्टर ?

सिनथीया : कोई-सा भी मिनिस्टर हो, यह उनका सपना है जो पूरा करना चाहते हैं।

मोहन : तो वो अब सपना लेना बन्द कर दें। तुम्हारा हाथ कोई मिनिस्टर नहीं पकड़ सकता, मैं खुद मिनिस्टर बन जाऊं वो बात दूसरी है (फोटो की तरफ देखकर) वैसे मैं मिनिस्टर जितना धनी बनने ही वाला हूं।

सिनथीया : (मोहन को फोटो की तरफ देखते हुए देख लेती है) क्या मतलब तुम्हारा ?

मोहन : कुछ नहीं।

सिनथीया : नहीं मोहन, मैं जानना चाहूंगी। तुम्हारे पिताजी भी कुछ छुपा रहे थे और अब तुम भी, क्या बात हैं, हम दोनों से मतलब रखती हैं क्या ?

मोहन : यह मेरे मामू है, इन्हें मैं कभी मिला भी नहीं हूं, मगर इनको एक फिजूल की सनक आ गई है। उन्होंने लिखा है कि बारह महीने के अन्दर-अन्दर मैं शादी करूं और एक बच्चा पैदा करूं तो हमारे परिवार को वो दस हजार पौंड देंगे।

सिनथीया : ओह'''तो यह बात है, तुमने मुझे यह पहले क्यों नहीं बताया ?

मोहन : वक्त ही कहां था, कुल मिलाकर दस मिनट तो अकेले में रहे हैं।

सिनथीया : समझ में आया। इसलिए शादी करने की जल्दी पड़ी है।

मोहन : नहीं, यह बात कतई नहीं है, मैं चाहता हूं कि'''

सिनथीया : कि तुम्हें पैसा मिले।

मोहन : मैं पहले कह चुका हूं—मैं तुम्हें चाहता हूं, अगर उसके साथ पैसा भी मिले तो क्या हर्ज है।

सिनथीया : क्या हर्ज है ? यह सौदा तुम किसी और से कर सकते हो। मुझे तुम इतनी घिनौनी बात में अपने साथ घसीट रहे हो !

मोहन : इसमें घिनौनापन कहां से आ गया? मैं जानता था यह बात तुम्हारी समझ में नही आयेगी।

सिनथीया : हमने पहले यह तय किया था कि हम अभी शादी नही करेंगे, मगर जब से तुमने मुझे देखा है तुमने बराबर शादी की रट लगा रखी है। मैं बेवकूफ थी कि यह सोच बैठी कि तुम मुझ से मोहब्बत करते हो।

मोहन : मगर मैं तुम से वाकई में मोहब्बत करता हूं। तुम समझती क्यों नही?

सिनथीया : मैं कुछ समझना नही चाहती। मैं पैसे-वैसे से कोई सम्बन्ध नही रखना चाहती।

मोहन : मगर सिनथीया, इतनी बड़ी रकम को यूही ठुकरा देना बेवकूफी है।

सिनथीया : मैं कोई बिकाऊ चीज नही हूं।

मोहन : देखो सिनथीया, अगर मुझे पैसों का ही लालच होता तो मैं किसी से भी शादी कर सकता था।

सिनथीया : तुम्हारा मतलब वीणा से है। तो शादी करते क्यों नहीं?

मोहन : सिर्फ इसलिए कि मैं उससे शादी करना नहीं चाहता, मैं तुमसे शादी करना चाहता हूं।

सिनथीया : इस शर्त पर कि मेरी शादी से तुम्हें पैसा मिले?

मोहन : बिल्कुल नही, मगर हां, मैं यह भी नही चाहता कि इतनी बड़ी रकम खो बैठूं।

सिनथीया : नही, तुम्हे रकम खोने की जरूरत ही क्या है? जाओ, उस हिन्दुस्तानी लड़की से शादी करो।

मोहन : नहीं-नही, सिनथीया, तुम सब कुछ गलत समझ बैठी हो; तुम समझने की कोशिश क्यों नहीं करती?

सिनथीया : समझने की कोशिश क्यों नही करती!! तुम्हारी यह मजाल कि तुम मुझसे यह कह रहे हो?

मोहन : मुझे माफ कर दो सिनथीया, मेरे कहने का यह मतलब नही था।

सिनथीया : बस बहुत हो गया, मैं और कुछ सुनना नही चाहती। 'अच्छा हुआ मुझे वक्त पर सब कुछ मालूम हो गया। मैं कोई बच्चे पैदा करने की मशीन नही हूं कि तुम्हारे परिवार के लिए वारिस पैदा करती रहूं। इस बकवास के लिए तुम्हें और कोई मुबारक।'

मोहन : सिनथीया, जरा शांति से मेरी बात सुनो तो सही।

सिनथीया : नही, मैं कुछ नही सुनना चाहती । अगर हमें शादी करनी है तो मेरी ट्रेनिंग के बाद, नहीं तो नही, मगर मैं समझती हूं कि अच्छा यही होगा अगर तुम किसी और से शादी कर लो, तुम उसे पैसों से खरीद सकते हो मुझे नही ।

मोहन : सिनथीया—रुको भी—

[सिनथीया कमरे से बाहर भागकर चली जाती है । मोहन वही खड़ा रहता है, सावित्री धीरे से पीछे चाय की ट्रे हाथ मे लिए अन्दर आती है ।

(पर्दा)

दृश्य 2

[एक हफ्ते के बाद—शाम का वक्त । देव और मोहन के बीच ड्राइंग रूम में बहस हो रही है ।]

देव : (ज़ोर से बोलते हुए) आखिर मैं तुम्हारा बाप हूं, मुझे यह कतई मंजूर नही है।

मोहन : मैं अब कोई बच्चा नही हू, आप समझने की कोशिश क्यों नही करते ?

देव : समझने की ? तुम्हारे कहने का मतलब है कि हमने अभी तक समझ से काम नही लिया ? तुम्हे पालपोस कर बड़ा किया, पढ़ाया-लिखाया, बिजनेस मे लगाया, यह सब तुम्हारे ख्याल मे नासमझी है ?

मोहन : नही, मैंने यह नही कहा···

देव : नही, तुम यही कहना चाहते थे, तुम आजकल के बच्चे सब एहसान-फरामोश हो, तुम लोग अपने बडों की और अपनी परंपरा की इज्जत करना नही जानते ।

मोहन : मैं···

देव : इतनी बड़ी दुनिया में तुम्हे वही एक लड़की मिली ?

मोहन : मगर···

देव : कोई हिन्दुस्तानी लड़की नही है जिससे तुम शादी करो ।

मोहन : मैं आप से यही कहना चाह रहा था कि दूसरी और कोई लड़की नही है । मैं उससे प्यार करता हूं ।

देव : प्यार ! मैं शादी की बात कर रहा हूं, यू प्यार तो तुमने बहुत-सो से किया है, क्या इन सबसे शादी की थी, बोलो ।

मोहन : नहीं, वो और बात थी।

देव : यह तो तुम हमेशा कहते हो।

मोहन : पिताजी, आपने फिजूल में जिद् पकड़ रखी है, मैं आपको इजाजत मांगने आया हूं।

देव : मैं इस बात की इजाजत नही दे सकता। यह शादी तुम समाज के खिलाफ कर रहे हो, तुम इस शादी से कभी भी खुश नही रह सकते। तुम एक हिन्दुस्तानी हो और तुम्हें एक हिन्दुस्तानी लड़की से शादी करनी चाहिए।

मोहन : यह कौन से कानून मे लिखा है कि मैं एक हिन्दुस्तानी लड़की से ही शादी कर सकता हूं?

देव : समाज का यही कानून है और हमें उसको मानना होगा।

मोहन : तो मैं ऐसे समाज मे नही रहना चाहता।

देव : अच्छा तो अब तुम अपना नया समाज बनाओगे? कहां बनाओगे? भई मोम्बासा और नेराबी के बीच या हिन्द महासागर में कहीं?

मोहन : आप मजाक कर रहे हैं।

देव : मैं मजाक कर रहा हूं? समाज क्या होता है, यह तुम जानते हो?

मोहन : जो भी कुछ हो, मैं उसमे अपने लिए जगह बना ही लूगा।

देव : तुम्हारी इन हरकतो से, वो जगह इज्जत की तो नही होगी। समाज किसी एक के ख्यालों की दुनिया नही होती, समाज तुमसे और मुझसे कही ज्यादा जीता-जागता होता है, उसकी हजारों आंखें हमेशा हम सब को देखती रहती हैं। एक बार वो हमे दोषी ठहरा दे तो हम वो धब्बा उम्र-भर धो नही सकते, क्या तुम इस महाशिह से जूझ सकते हो?

मोहन: मैं किसी से जूझना नही चाहता। मगर आप लोगो को यह नहीं भूलना चाहिए कि हम किस देश मे रह रहे हैं! वक्त बहुत जल्दी बदल रहा है।

देव : मगर उतना जल्दी नही जितना तुम बदल रहे हो। जिस तरह की बात कर रहे हो वो सिर्फ क्लब मे हैं। दरअसल में हिन्दुस्तानी, अफरीकन और यूरोपियन तीनों अलग-अलग जाति है। यह मैंने या तुमने नही भगवान ने बनाई हैं। यह ठीक है कि हम बगैर किसी जाति-भेद के एक साथ मिल-जुलकर रहें, मगर भगवान के लिए शादी-ब्याह को इन सबसे दूर रखो।

मोहन : मुझे यकीन है कि भगवान ने यह कभी नहीं कहा।

[सावित्री आती है और चुपचाप बैठ जाती है।]

देव : भगवान को इस मामले में क्यों घसीटते हो? तुम मेरे पास उस लड़की से शादी करने की इजाजत मांगने आए हो। मैं और तुम्हारी मां इस बात की इजाजत नहीं दे सकते। सावित्री, तुम समझाना इसे। इससे बहस करते-करते तो मेरे सर में दर्द हो गया है। सिनेमा देख-देखकर वैसी ही बातें करना सीख लिया है। क्या नरेन्द्र को यह सब मालूम है?

मोहन : शायद, अभी तक तो मालूम हो जाना चाहिए और वैसे वो आपके दोस्त हैं।

देव : इसके बाद नहीं रहेगा।

सावित्री : मोहन, तुम हमें गलत समझ रहे हो। हमें उस लड़की से कोई नाराजगी नहीं है, उससे शादी करने का ख्याल जो है वो गलत है।

मोहन : मैं ख्याल से नहीं लड़की से शादी कर रहा हूं। बस हमारे और आपके सोचने में यही फर्क है।

देव : मोहन, ज्यादा चालाक बनने की कोशिश मत करो। तुम सिर्फ अपनी ही सोच रहे हो, तुम यह समझने की कोशिश नहीं कर रहे हो कि इससे हमारे जीवन पर क्या असर होगा!

मोहन : आपके जीवन पर?

देव : हां, हमारा जीवन। तुम क्या समझते हो, जो तुम करने जा रहे हो उससे हम अपने आपको बचा पाएंगे! इस शादी के बाद हम समाज में मुंह दिखाने के काबिल नहीं रहेंगे। इस समाज में मेरी इज्जत है, साख है, क्या तुम यह सब बरबाद कर देना चाहते हो?

मोहन : नहीं पिताजी, मैं कुछ भी बरबाद करना नहीं चाहता। मैं समझता हूं कि हमें और बहस नहीं करनी चाहिए। आप ठीक कहते हैं। अब हम एक-दूसरे को समझ नहीं सकते। मुझे उम्मीद थी कि हम समझ पाएंगे, मगर यह मेरी बदनसीबी है कि मैं गलत समझ बैठा। नहीं, अब हम एक-दूसरे को नहीं समझ सकते।

सावित्री : बेटे, तुम्हारी मां तुम्हारी परेशानियों को समझती है। कल तुम और मैं, हम दोनों हिन्दुस्तान चले जाएंगे।

देव : हां ठीक है और आठ घण्टों में तुम इन तमाम फिजूल की बातों से दूर हो जाओगे।

मोहन : समझा और वहां पहुंचने के आठ घण्टे बाद मेरी शादी जाएगी। यही न? मां, मैं अब और बहस नहीं करना

चाहता

मैंने अपना इरादा बना लिया है।

देव : सावित्री, इससे बात करना फिजूल है। इसने यह तय कर लिया है कि यह उससे प्यार करता है और उसके लिए तमाम दुनिया से लड़ने के लिए तैयार है।

मोहन : मैं किसी से लडाई नही करना चाहता। और खास करके आपसे। मैं जा रहा हूं और उम्मीद करता हूं कि आपके विचार बदलें। (वो बाहर चला जाता है।)

देव : यह लड़का पागल हो गया है। ऐसी बातें करते हुए मैंने इसे पहले कभी नही देखा।

सावित्री : वो लड़की इसे अपनी उंगलियों पर नचा रही है।

देव : मगर इतनी बड़ी दुनिया में उसे हमारा लड़का ही मिला! हम तबाह हो जाएंगे।

सावित्री : हमारी किस्मत का इससे कोई लेना-देना नही है। वो मोहन के प्यार को आजमाना चाहती है। जितना त्याग और कुर्बानी वो करेगा उतनी ही उसकी जीत होगी और आखिर में या तो वो मोहन को हमेशा के लिए अपना बना लेगी नही तो उसको ठुकरा देगी, हम इस सबमें कही नही आते।

देव : हे भगवान, हमने कौन-सा पाप किया है जिसकी सजा हमें मिल रही है? इन सब बातों का मतलब यह हुआ कि या तो हम अपने लड़के से हाथ धो बैठें और अगर वो किसी और से शादी करने के लिए ना कर दे तो फिर पैसों को खो दें।

सावित्री : मगर ऐसा भी हो सकता है कि हम लड़के और पैसे दोनो से हाथ धो बैठें। देव, अगर हमें इन दोनों के बीच पड़े तो मेरी बात मानो, पैसों को जाने दो।

देव : जाने दूं। क्या कह रही हो तुम! मैंने पाई-पाई का हिसाब लगा लिया है कि किस तरह और कहां मैं इन्वेस्ट करूंगा। हमारा भविष्य उसी पर निर्भर करता है।

सावित्री : नही, इस पत्र के आने से पहले हमारा भविष्य तुम्हारी बचत और पेन्शन पर ही निर्भर करता था।

देव : मगर पत्र आया और उससे हमें मालूम हुआ कि हमें पैसे मिल सकते हैं। यह तमाम बातें मोहन समझता क्यों नही। पागल कही का!

सावित्री : मेरी बात मानो देव, इस वक्त अगर तुम उस पर और जोर डालोगे तो कोई फायदा नही होगा। सिर्फ वो और जिद पकड़ेगा।

थोड़े दिन ठहर जाओ, देखते हैं क्या होता है ?

देव : इतनी बड़ी रकम का सवाल है । थोड़े दिन और कैसे ठहर जाऊं ! क्या उस लड़के को कोई समझा नहीं सकता ?

सावित्री : सिर्फ वो लड़की समझा सकती है । वो इतना तकाजा करे, इसे परेशान करे कि यह तंग आ जाए और इसके तमाम सपने टूट जाएं । यह जान जाए कि वो कितनी बड़ी गलती कर रहा था । बस हमारे लिए सिर्फ यही उम्मीद बाकी है । (मकान की घंटी बजती है) तुमने किसी को बुलाया है क्या ?

देव : नहीं तो । शायद नजेरोग आया हो ।

सावित्री : मैं इसका मुंह नहीं देखना चाहती । इस मनहूस की वजह से ही हमें परेशानियां हुई हैं । (कमरे के बाहर चली जाती है । देव दरवाजा खोलता है । नजेरोग अन्दर आता है ।)

देव : आवो नजेरोग, अन्दर आ जाओ ।

नजेरोग : तुम शायद जानते हो कि मैं क्यूं आया हूं ।

देव : हां ।

नजेरोग : मैं तुम्हें साफ-साफ बता देना चाहता हूं कि मैं बिल्कुल खुश नहीं हूं और मैं इस बात की कभी इजाजत नहीं दूंगा । मैं अपनी भतीजी की शादी कहीं और करना चाहता हूं ।

देव : तो इस बात से तुम भी खुश नहीं हो ।

नजेरोग : बिलकुल नहीं । सिनथीया एक पढ़ी-लिखी अफरीकन लड़की है, और उसका भविष्य बहुत उज्ज्वल है ।

देव : तुम्हारे ख्याल जानकर मुझे बहुत खुशी हुई । भविष्य तो मेरे लड़कों का भी उज्ज्वल है ।

नजेरोग : मगर मैं उसकी शादी अपनी भतीजी से नहीं होने दूंगा । मैं मोहन के खिलाफ नहीं हूं । मगर वो इस शादी के लिए ठीक नहीं ।

देव : नजेरोग, बहस करने से कोई फायदा नहीं । इस रिश्ते के खिलाफ जितने तुम हो उतना ही मैं हूं ।

नजेरोग : मैं तो बिल्कुल खिलाफ हूं । सिनथीया की शादी एक एशियन से हो, ऐसा तो हो ही नहीं सकता । तुम्हारे लड़के ने उस पर जादू किया है । तुम्हें उसको समझाना होगा ।

देव : मैंने उसे समझाने की बहुत कोशिश की । मगर तुम्हारी लड़की ने उस पर कुछ ऐसा जादू किया है कि वो कुछ भी समझने को तैयार नहीं था । चलो छोड़ो ये सब बातें । तुम मुझे यह बताओ कि सिनथीया ने तुमसे क्या कहा ।

नजेरोग : उसने सिर्फ यह कहा कि "मैं मोहन से शादी करने जा रही हूं ।"

मैंने उसे बहुत समझाया मगर वो बार-बार यही कहती रही, मेरी समझ में तो कुछ नहीं आता। उसे सिनथीया को छोड़ना ही होगा। मुझे माफ करना देव, मगर मेरे ख्याल से मोहन एक शरीफ आदमी की तरह पेश नहीं आया।

देव : तुम क्या सोचते हो, यह सिनथीया की शराफत थी जो उसने तुमसे सब कुछ छुपा कर रखा।

नजेरोग : (बैठ जाता है, गुस्से और बेबसी की हालत में टेबिल पर जोर-जोर से मुक्के मारता है) नहीं, नहीं, यह बात नहीं होनी चाहिए। मैंने चाहा था कि उसकी शादी किसी बड़े सरकारी अफसर से हो।

देव : नजेरोग, मुझ पें गुस्सा करने से कोई फायदा नहीं। अभी-अभी मोहन से मेरा झगड़ा हो चुका है। मैं तुम्हें एक बात बता दूं, अगर हम इसी तरह से चिल्लाते रहे और आपस मे झगड़ते रहे तो वो दोनों चुपचाप कहीं जाकर शादी कर लेंगे। बताओ, अगर तुम उनकी जगह होते तो क्या करते?

नजेरोग : मै ऐसा करता, यह नहीं जानता, मगर इतना जानता हूं कि मोहन ऐसा कर सकता है।

देव : हां, जरूर, मगर सिनथीया की मदद से।

नजेरोग : ठीक है, ठीक है। सो वो दोनों एक ही रंग में ढले हुए हैं। यही न? नहीं-नहीं, मेरे कहने का यह मतलब नहीं। मेरी समझ में नहीं आता कि मैं क्या कह रहा हूं। मगर तुम समझते हो न कि मैं क्या कहना चाहता हूं?

देव : मैं सब समझता हूं। मगर उन्हें रोकने की तुम एक भी तरकीब बता दो तो मैं तुम्हारी तमाम बातें सुनने को तैयार हूं। वर्ना तुम मेरी सुनो। यह इतनी मामूली-सी बात नहीं है कि वो अपने मां-बाप की मर्जी के खिलाफ शादी करना चाहते हैं।

नजेरोग : तुम क्या कहना चाहते हो?

देव : पहले मुझे यह बताओ कि तुम सिनथीया को शादी करने से रोक सकते हो?

नजेरोग : अगर सच पूछो तो मैं नहीं रोक सकता। मुझे ऐसा लगता है कि इस पर मेरा कोई अधिकार नहीं रहा। मैं इस बात से बेहद परेशान हूं।

देव : तुम ठीक कहते हो। मगर मैं तुम्हारी यह बात मानने को तैयार नहीं कि तुम्हारा और मेरा अपने बच्चो पर कोई अधिकर नहीं रहा। अधिकार है और अगर हमने उन पर काफी दबाव डाला

तो इतना हो सकता है कि वो कुछ दिनों के लिए अपनी शादी को टाल दें।

नजेरोग : क्या हम इतना भी कर सकते हैं ?

देव : इतना तो कर ही सकते हैं। एक साल की मोहलत दे दो, यह मालूम पड़ जाएगा कि वो एक-दूसरे को कितना प्यार करते हैं। मगर हम इस बात पर जोर देंगे कि एक साल तक उनकी मंगनी नहीं होगी। इस दौरान वो एक-दूसरे को समझने की कोशिश करें, समाज को समझें।

नजेरोग : हां, यह तो हो सकता है।

देव : जरूर हो सकता है। मुझे पूरा यकीन है कि इस बात को लेकर उन दोनों के बीच भी बहस हुई है। तुम देखते नहीं इतना प्यार जताने के बाद भी वो कुछ दबे-दबे-से हैं। (पॉज)

नजेरोग : यह सब कुछ मेरे साथ क्यों होना था। सिनथीया की शादी मेरी जिन्दगी का सब से खुशी का दिन होता और अब मैं कहीं का न रहा। इसने मुझे धोखा दिया है।

देव : धोखा तो मुझे भी मेरे लड़के ने दिया है। मगर मुझे एक बात का और अफसोस है कि मैं एक भारी रकम से हाथ धो बैठूंगा। मैं तुमसे यही कहना चाह रहा था कि यह इतनी मामूली बात नहीं है।

नजेरोग : यह तो बड़े अफसोस की बात है।

देव : यह पैसा हमें मिल जाता तो हम अपने टूरिस्ट बिजनेस को और अच्छी तरह से शुरू कर सकते थे। मगर यह हम अभी भी कर सकते हैं, मैं हिम्मत नहीं हारा हूं। मोहन ने अपने माता-पिता की मर्जी के खिलाफ काम किया है। मगर मैं भी उसको सबक सिखाऊंगा।

नजेरोग : कैसे ?

देव : मुझे अभी ख्याल आया कि जो कुछ भी हुआ है उसके बारे में मैं सावित्री के भाई सुबोध को लिखकर साफ-साफ बता दूं। वो बुजुर्ग है और हमारी मजबूरी को समझ पाएगा।

नजेरोग : समझेगा भी ?

देव : हां, मुझे पूरा भरोसा है कि वो समझेगा।

नजेरोग : उनसे अलग-अलग बात करके तो देख लिया मगर देव, मैं अभी भी यह सोचता हूं कि अगर उन दोनों से साफ-साफ बात की जाए तो कुछ हल निकल सकता है। वैसे मैं यहां आने से पहले सिनथीया

से कहकर आया था कि अगर वो मोहन के साथ यहां आ जाती तो अच्छा होता, क्योंकि उन दोनों से दिल खोलकर बात हो जाती।

देव : इससे पहले, मैं चाहता हूं कि सुबोध को तमाम बात समझा दूं। मुझे पूरा भरोसा है कि वो हमारी मजबूरी को समझ पाएगा। सुनो, क्यों न मैं टेलीफोन पर उससे बात ही कर लूं।

नजेरोग : अभी करना चाहते हो।

देव : हां, अगर हो सके तो।

नजेरोग : अगर फोन मिल जाए तो हो सकती है। फोन करोगे। (फोन की तरफ इशारा करता है)

देव : नहीं, यहां से नहीं। यहां कोई भी आ सकता है। चलो मेरे आफिस में चलते हैं, वहां से बात करेंगे।

नजेरोग : नम्बर मालूम है ?

देव : हां (कुछ इधर-उधर ढूंढ़ता है) उसकी चिट्ठी में है। मगर वो सावित्री के पास है।

नजेरोग : ठीक है। तुम नम्बर लेकर आओ, इतने में टेलीफोन ऐक्सचेंज के सुपरिंटेंडेंट से कहता हूं कि वो जल्दी से जल्दी केलीफोरनिया फोन लगा कर दे।

देव : बहुत अच्छा, अगर अभी न मिले तो न सही, कम-से-कम कॉल बुक तो कर ही सकते हैं। मेरा दफ्तर खुला है, मैं अभी सावित्री से बात करके आता हूं।

नजेरोग : ठीक है। (बाहर आता है, दफ्तर की तरफ)

देव : (लिखने की मेज पर कुछ कागजात में ढूंढ़ता है, इतने में सावित्री अंदर आती है) ओह, अच्छा हुआ तुम आ गई, मैं सुबोध की चिट्ठी ढूंढ़ रहा था।

सावित्री : मुझे मालूम है। मैंने सब कुछ सुन लिया है।

देव : ठीक है, अगर सुन ही लिया है तो तुम क्या सोचती हो। जितना मुझसे हो सकता है मैं कर रहा हूं।

सावित्री : मैं जानती हूं। मगर मेरी समझ में नहीं आ रहा कि इन सबका अन्त क्या होगा। तुम कहो तो मैं अपने भाई सुबोध से बात करूं ?

देव : नहीं, तुम यहीं रहो, मैं नहीं चाहता कि तुम उससे बात करो। अगर हमें फोन मिल गया तो मैं चाहता हूं कि मेरे बाद नजेरोग उससे बात करें, ताकि उसको हमारी बात पर भरोसा हो

जाए। और फिर तुम्हारे साहिबजादे और उनकी मेहबूबा अभी यहां आने वाले हैं। चाहे कुछ भी हो जाए टेलीफोन वगैरा की बात उन्हें मत बताना।

सावित्री : नहीं, मैं नही बताऊंगी, मैं उससे कोई बात ही नही कर सकती, वो तो अपने आपको बहुत होशियार समझती है।

देव : धीरज रखो सब ठीक हो जाएगा। वो चिट्ठी कहां है?

सावित्री : यह रही।

देव : मैं नजेरोग के पास जाता हू, अगर तुम उस लड़की से बात नही करना चाहती तो कुछ बहाना बनाकर रसोई में चली जाना। (दरवाजे पर दस्तक की आवाज आती है) देखो कौन आया शायद वही हो। (कमरे से बाहर चला जाता है)

सावित्री : (दरवाजा खोलती है) अन्दर आ जाओ मोहन।

सिनथीया : (दरवाजे के पास रुकती है) चाचा नही आए क्या?

मोहन : (अन्दर आते हुए) वो दोनो कहां हैं?

सावित्री : तुम्हारे चाचा मोहन के पिताजी के साथ बाहर गए है—अभी आने ही होंगे। अन्दर आओ। बैठो।

मोहन : आओ सिनथीया, हम उनका यहीं इन्तजार करेंगे।

सावित्री : आओ बैठो, उन्हें मालूम है कि तुम आ रहे हो। मोहन, तुम्हारी मनपसन्द की चाय बनाऊं?

मोहन : हां, मां, तुम्हें नही मालूम वो कहा गए हैं?

सावित्री : यही कही पास ही गए है, मैं चाय बना के लाती हू। (चली जाती है।)

सिनथीया : मेरे यहां आने से तुम्हारी मा खुश नही हैं मोहन! मुझे नही आना चाहिए था।

मोहन : मगर क्यो नही। हमें एक साथ देखने की अब उन्हे आदत डालनी चाहिए।

सिनथीया : उनके ख्याल में यह सब अभी बहुत जल्दी है।

मोहन : मगर मैं उनके ख्यालों की कोई खास परवाह नही करता।

सिनथीया : अपने माता-पिता के लिए ऐसा कहना ठीक नहीं।

मोहन : शायद न हो। मगर वो अपने ख्यालों को बदलना ही नही चाहते। सच पूछो तो इस उम्र में वो बदल भी नही सकते। मगर इसमे हमारी क्या गलती है? हम कर ही क्या सकते हैं?

सिनथीया : मोहन, अभी तक आज का दिन इतना अच्छा बीता है, ऐसी बातें करके इसे खराब न करो।

मोहन : हां, ठीक है। चलो कुछ और बात करें। आज सुबह की सैर तुम्हें कैसी लगी ?

सिनथीया : बहुत अच्छी। रुकने का जी ही नहीं करता था। ऐसा लग रहा था जैसे कि हम दोनों चलते ही जाएं। मुझे उन दिनों की याद आ रही थी जब तुम मोम्बासा मुझसे मिलने आते थे।

मोहन : वो दिन कितने अच्छे थे ! मुझे ऐसा लगता था जैसे तमाम दुनिया हमारे कदमों मे बिछी हो।

सिनथीया : मोहन, तुम क्या समझते हो वो खुशियां वापस लौट आएंगी ?

मोहन : हां, क्यों नही ? अगर वही हालात फिर से पैदा किए जाएं तो।

सिनथीया : मुझे नही मालूम। वो दिन कितने खूबसूरत थे ! हमने कितने सपने बुने थे ! क्या उन सपनों में से कुछ सपने पूरे होंगे ?

मोहन : अगर एक-दूसरे पर हम भरोसा रखें तो हमारे सपने जरूर पूरे होंगे। और हम ज्यादा कुछ चाहते भी तो नही।

सिनथीया : मुझे अच्छी तरह से याद है, उन दिनों हमें किसी और बात की जरूरत नही थी। हम सिर्फ यही चाहते थे कि एक-दूसरे के साथ रहें।

मोहन : वो तो हम अब भी चाहते हैं। मगर क्या तुम और कुछ नही चाहती ?

सिनथीया : और क्या ?

मोहन : यही, सबसे पहले तुम जरूर चाहती होगी कि एक अच्छा-सा घर हो।

सिनथीया : सबसे पहले मुझे किसी चीज की जरूरत नहीं, सिवाय तुम्हारे प्यार के।

मोहन : वही तो मैं कहना चाहता हूं।

सिनथीया : नही मोहन, तुम यह नही कहना चाहते। मैं इसी बात से परेशान हूं, दुखी हूं। तुम उस पैसे को अपने दिमाग से नही निकाल सकते। जब से वो चिट्ठी आई है तुम वो मोहन नही रहे।

मोहन : यह महज तुम्हारा ख्याल है, कोई पैसा मेरे प्यार को बदल नही सकता। तुम्हें यकीन क्यों नही होता ?

सिनथीया : मुझे यकीन है मोहन, अगर यकीन नही होता तो मैं यहां नही आती। मगर इससे जिस हालात मे हम हैं उसमें कोई फर्क नही पडता। यह पैसे जो तुम्हे भेंट मे मिल रहे हैं, वो हमारी गर्दन में एक फंदा हैं। जरूर तुम्हारे मामा एक बहुत निर्दय आदमी होंगे।

मोहन : इतना तो बता सकता हूं कि टेलीफोन पर जो बात हुई उससे तो

निर्दय मालूम नहीं पड़े, यहां तक कि टेलीफोन के बिल के पैसे देने को भी कहा। मैंने तमाम बातें उनको बता दीं, और वो चुपचाप बगैर किसी सवाल-जवाब के सुनते रहे। और फिर वादा किया कि सोचने के बाद हमें तार देंगे।

सिनथीया : और हम सब बेबस उसका इन्तजार करते रहे। मुझे उन पैसों से सख्त नफरत हो गई है मोहन। एक बहुत भयानक रोड़ा बनकर उसने हमारी जिन्दगी को बदल दिया है। किसी को क्या हक है कि इस तरह से दूसरों की जिन्दगी में दखल दे, इसीलिए मैं कहती हूं कि तुम्हारे मामा बहुत ही निर्दय आदमी है।

मोहन : देखो सिनथीया, मेरी बात सुनो, हमें आपस में यह तय कर लेना चाहिए कि हम क्या चाहते हैं, वर्ना हमारे माता-पिता जो तय करेंगे उसे मजबूरन मानना पड़ेगा। उन्होंने हमे सिर्फ चाय पीने के लिए नहीं बुलाया है।

सिनथीया : यह मैं जानती हू और मैंने तय भी कर लिया है।

मोहन : तय कर लिया है?

सिनथीया : हां, हम तुम्हारे मामाजी के तार का इन्तजार करेंगे। अगर उस भेंट के साथ कोई भी शर्त न हुई तो हम उसे कबूल कर लेंगे। वर्ना मुझे उन पैसों मे से एक पाई भी नही चाहिए। और जब तक वो पैसा हमारी जिन्दगी पर मंडराता रहेगा, मैं तुमसे शादी भी नहीं करूंगी।

मोहन : सिनथीया, तुम खामखा जिद्द कर रही हो।

सिनथीया : नहीं, मैं जिद्द नही कर रही, यही हालात रहे तो यह हमारी तमाम जिन्दगी में जहर घोल सकते हैं। हम दोनों बहुत खुश हैं और मैं किसी भी तरह का समझौता करने के लिए तैयार नहीं।

मोहन : समझौता करने के लिए कौन कहता है? मै तो सिर्फ यही कहना चाहता हूं कि जिन्दगी की असलियत से आंख क्यों चुराती हो?

सिनथीया : जिन्दगी की छोटी-छोटी जरूरतों के लिए मैं अपना आत्मसम्मान खो नही सकती। मोहन, हम दोनों के ख्याल अलग-अलग हैं। इसके बारे मे और बात करें और सब कुछ भूल जाएं तो अच्छा होगा।

मोहन : सब कुछ भूल जाएं?

सिनथीया : हां।

मोहन : अच्छा, चलो भूल जाते हैं। (फोटो उठाकर) हरामजादा कहीं का। (जमीन पर फेंककर इसे तोड़ देता है) यह सब इसी का दोष है।

[नजेरोग और देव कमरे में आते है, टूटी हुई तस्वीर और

उन दोनों की नाराजगी देखकर वहीं रुक जाते हैं।]

देव : (जरा सावधानी से) मोहन, तुम्हारी मां यहां नहीं हैं ?

मोहन : हैं, रसोई में चाय बना रही हैं।

देव : तो फिर उसके लिए ठहरना पड़ेगा। माफ करना, तुम्हें यहां बुलाकर हमें बाहर जाना पड़ा। एक बहुत जरूरी काम था।

मोहन : (व्यंग्य से) खतम कर लिया आपने ?

देव : (जरा मजाकिया ढंग से) पूरी तरह से तो नहीं। मुझे खुशी है सिनथीया कि तुम भी आ गईं। जब से आई हो मुलाकात ही नहीं हुई, सब ठीक हैं न ?

सिनथीया : जी हां, शुक्रिया।

नजेरोग : (इस दौरान में फोटो को उठाकर वापस मेज पर रखता है) बड़ी तेज हवा का झोंका आया होगा। (सावित्री चाय लेकर आती है। नजेरोग उससे चाय की ट्रे लेते हुए) मिसेज देव, लाइए मैं आपकी मदद करूं।

सावित्री : शुक्रिया। (पॉज)

देव : *अब हम सब यहां पर मौजूद हैं तो***

मोहन : हां, आपको जो भी कहना है कहकर खत्म करिए।

देव : मोहन, तुम आज बहुत बेचैन हो। हम सब यहां इकट्ठे हुए हैं समस्या को हल करने के लिए। उसे अच्छी तरह से समझने के लिए।

मोहन : मैं यहां कोई बात समझने के लिए नहीं आया हूं। और न ही सिनथीया।

देव : क्या मतलब तुम्हारा ?

मोहन : आपने हमें बुलाया है हमसे सौदा करने के लिए। क्यों ठीक है न ?

नजेरोग : सौदा ?

मोहन : इसे अगर सौदा नहीं कहना चाहते हो तो न सही। मगर आप लोग यहां इकट्ठे हुए हैं, हर बात को अपने हित में तय करने के लिए।

देव : मोहन, ऐसी बात नहीं है, हम तो तुम्हारा ही भला चाहते हैं।

सावित्री : सिवाय उसके हम और कुछ नहीं चाहते।

नजेरोग : सिनथीया, मुझ पर भरोसा करो, मैं सिर्फ तुम्हारा ही भला चाहता हूं।

सिनथीया : (आहिस्ता से) मैं जानती हूं चाचा !

नजेरोग : (उसे यह सुनकर खुशी होती है) मैं जानता था, तुम यही कहोगी। मैं सबके सामने साफ-साफ कहना चाहता हूं कि अगर तुम अपनी

ही जाति मे शादी करती तो मुझे बहुत खुशी होती।

मोहन : जी हां। आपकी खुशी तो ठीक मगर इसकी खुशी का क्या होगा ?

नजेरोग : इसे खुशी अपने ही लोगों मे मिलेगी, किसी…किसी…विदेशी से शादी करके नही।

मोहन : मैं विदेशी नही हूं—मैं यही पैदा हुआ था।

नजेरोग : ठीक है तुम यहां पैदा हुए थे। मगर इसका यह मतलब नही कि तुम अफरीकन हो।

मोहन : तो क्या अफरीकन मुझसे बेहतर हैं ?

नजेरोग : मैंने यह तो नही कहा।

मोहन : तो फिर आप कहना क्या चाहते है ? क्या आप यह कहना चाहते हैं कि हम दोनों तेल और पानी की तरह हैं जो कभी मिल नही सकते ? या मेरा रंग आपकी आंखों में खटकता है ?

नजेरोग : मोहन, तुम मुझ पर जाति-भेद का इल्जाम लगा रहे हो।

मोहन : नही मिस्टर नजेरोग, मैं आप पर किसी भी बात का इल्जाम नही लगा रहा, मैं तो सीधा-सादा सवाल पूछ रहा हूं कि मुझमे क्या खराबी है ? अगर मेरी जाति से आपको कोई ऐतराज नहीं है तो क्या आपकी नजरों मे मेरा चालचलन खराब है, या आप यह सोचते हैं कि मेरे अन्दर कोई ऐसी बीमारी है जो शादी के बाद भड़क उठेगी ?

नजेरोग : नही, मैं यह सब कुछ नही सोचता।

सिम्थीया : मेरी समझ में नही आता कि आप लोगों को जो भी कहना है साफ-साफ कहकर बात को हमेशा के लिए खत्म क्यों नहीं कर देते !

देव : मगर…(कुछ कहना चाहता था मगर रुक जाता है। एकदम से चारों तरफ देखता है)

मोहन : ऐसा लगता है कि आप लोगों के पास कहने के लिए कुछ नहीं है। अगर इजाजत दें तो आपकी तरफ से मैं कुछ कहूं ?

देव : नहीं, मैं नही चाहता कि तुम कुछ कहो, क्योंकि तुम्हें अपने आप पर बहुत भरोसा है न ? तुम यह सोचते हो कि हम खुदगर्ज हैं, हमारे ख्याल पुराने और थोथे हैं ? इस वक्त हमारी एक बात भी तुम्हें अच्छी नहीं लगती है न ? क्यों ? यह सच है न ? क्या तुम इसे इंकार कर सकते हो ? तुम यह मानने को बिल्कुल तैयार नहीं कि हमारे भी असूल हैं जिन्हें हम तोड़ना नहीं चाहते। और जो कुछ भी हम करना चाहते हैं वो तुम्हारे लिए ही है। अगर तुम सोचते हो कि हम नए जमाने के लिए हमारे ख्याल पुराने हैं तो ठीक है

…

क्योंकि तुम जवान हो और यह जमाना तुम्हारा है। मगर इसका यह मतलब नही कि तुम हमसे अच्छे हो। अगर इसमे किसी को तकलीफ है, दुख है तो वो हमे है, क्योंकि हमारी दुनिया, हमारा जमाना जिसे हम जानते थे, पहचाते थे, वो हमारी आंखों के सामने ही खत्म हो रहा है। मैं यह मानने के लिए तैयार नही कि जो भी नया है वो पुराने से अच्छा है। मुझे यकीन है कि वो अच्छा नही है। इस तरह की शादियां नये जमाने का चलन हो सकता है मगर आज दिन तक लोग जाति और धर्म के छोटे-छोटे बन्धनों को तोड़ नही सके हैं।

नजेरोग : देव, जो कुछ भी तुमने कहा वही मैं भी कहना चाहता था, बस मैं सिर्फ एक बात उसमें और जोड़ना चाहता हू, वो यह कि कौम, जाति, परम्परा यह सब खराब नही हैं, इनको बनने में सदियां लगती हैं, महज इन जवान छोकरों की खुशी के लिए हम इन्हे ठुकरा नही सकते, हमारे बुजुर्गों ने बहुत सोच-विचार कर इन्हे बनाया है, वो बुद्धिमान थे, यह जान सकते थे कि भविष्य मे क्या होगा, मैं उन्ही के बताए हुए रास्ते पर चलूगा, (मोहन की तरफ देखकर) तुम्हारे नए ख्याल मुझे बहका नही सकते। (सिनथीया से) और तुम सिनथीया, मैं तुम्हे बता देना चाहता हू कि इस आदमी से शादी करके तुम कभी खुश नही रह सकोगी। इसे देखो, इस छोटी-सी उम्र मे यह अपनी सभ्यता और परम्परा सबको भुला देना चाहता है, मगर तुम्हें यह सब करने की कोई जरूरत नही। तुम अफरीकन हो और तुम्हें इस बात पर गर्व होना चाहिए।

सिनथीया : मुझे इस बात पर गर्व है, और मैं आपको बता देना चाहता हू कि मोहन को भी इस बात पर गर्व है कि वो हिन्दुस्तानी है।

नजेरोग : बहुत अच्छा। यही तो मैं कह रहा हूं और इसीलिए तुम दोनों खुश नही रह सकते।

सिनथीया : मगर हम खुश हैं—मेरा मतलब''' (औरो से मुंह फेर लेती है) हम खुश थे।

देव : (थोड़ी देर की खामोशी के बाद) मैं सोचता हूं कि हम सबको जल्दी नही करनी चाहिए, जो भी हम करें सोच-विचार के बाद करें। सिनथीया, तुम्हें किसी बात का शक या शुबहा हो तो उसमें शरमाने की कोई बात नही। सोचना-समझना तो एक पढ़े-लिखे इंसान की निशानी है।

नजेरोग : मगर मेरे दिमाग में कोई शक नही है। सिनथीया तुम इस लड़के

को गलतफहमी में नही रख सकती। इसमे तुम दोनों की भलाई नही है। जो भी कुछ फैसला करना है तुम दोनों को जल्दी करना होगा। तुम्हारे देर करने से इस परिवार को काफी नुकसान हो सकता है। जहां तक मैं सोचता हू तुम फैसला तो कर ही चुकी हो।

सिनथीया : जहां तक मेरा ताल्लुक है मोहन विलकुल आजाद है, वो जो कुछ भी करना चाहे कर सकता है।

नजेरोग : मै इस फैसले से खुश हूं।

मोहन : मगर मै इस फैसले से खुश नही हूं। मैं मानता हूं कि मैंने जल्द-बाजी की, मगर इतनी वडी रकम देखकर कोई भी यह गलती कर सकता था।

नजेरोग : तो तुम यह मानते हो कि तुमने गलती की?

मोहन : हा, मै मानता हू, मैंने कई गलतियां की है, मगर एक हिन्दुस्तानी परिवार मे जन्म लेना गलती नही है, और सिनथीया से शादी करना भी गलती नही है, अगर सिनथीया इसे गलती समझती है वो ऐसा कह सकती है। (खामोशी)

नजेरोग : इसने तुम से एक सवाल पूछा है और हम सब उसका जवाब सुनना चाहते हैं।

सिनथीया : मै अपना जवाव दे चुकी हूं और वो अच्छी तरह से जानता है कि मैं इस सबके वारे मे क्या सोचती हूं और महसूस करती हूं।

देव : ज्यादा बहस करने से कोई फायदा नही। तुम्हारे चाचा ने जो कुछ तुम्हारे भविष्य के लिए सोचा है वो तुम्हारे लिए अच्छा ही है।

नजेरोग : जब तुम दोनों और बडे हो जाओगे तो अपने आप जान जाओगे कि हमने जो कुछ भी किया वो तुम्हारी भलाई के लिए ही था।

मोहन : कुछ हम भी तो सुनें कि आप क्या षड्यन्त्र रच रहे है।

नजेरोग : क्या मतलब तुम्हारा?

मोहन : यही कि हमारे लिए आप लोगों ने क्या योजना बनाई है।

देव : नही मोहन, ऐसी कोई योजना नही बनाई है, तुम दोनों अभी जवान हो, हमने सोचा कि एक साल के लिए ठहर जाओ तो अच्छा होगा।

नजेरोग : विलकुल ठीक, ऐसी गम्भीर समस्या को समझने और सुलझाने के लिए एक साल का वक्त काफी है, तुम्हें सिर्फ अपने लिए ही नही सोचना है, वो क्या अफरीकन होंगे, हिन्दुस्तानी होंगे, क्रिश्चियन

होंगे या हिन्दू होंगे ? क्या होंगे कौन-सी जाति के होंगे ?

मोहन : मैं उम्मीद करता हूं कि वो एक ऐसी महान जाति के होंगे जिसमें रंग-भेद, जाति-भेद यह सब कुछ नही होगा ।

नजेरोग : मनुष्य जाति के इतिहास मे आज दिन तक ऐसी जाति तो पाई नही जाती ।

मोहन : अभी मनुष्य जाति के इतिहास का अन्त तो नही हुआ, हां हो जाएगा, अगर हमने अपने ख्यालों को बदला नही तो, इसान को इसलिए तो नहीं बनाया गया था कि वो अलग-अलग जाति के तबकों में बट के रह जायें । अगर यही था, तो हम सब को खुश होना चाहिए, मगर क्या हम खुश हैं ? आप लोग भी अपने अंध-विश्वास की वजह से इन पुराने ख्यालों से अभी तक जुड़े हुए हैं कि ऐसा करने से मनुष्य जाति का अन्त हो जाएगा । हमारे बच्चे इन अंधविश्वासो से कही दूर एक नई दुनिया में पैदा होंगे जहां पर सब लोग एक समान होगें । वो दुनिया रंगभेद के बन्धनों से मुक्त होगी । आप फिजूल डर रहे हैं कि हमारे बच्चे अफरीकन होगे या हिन्दुस्तानी, क्रिश्चियन होगें या हिन्दू वो उस खूबसूरत दुनिया के नागरिक होगें जहां यह सब कुछ बेमानी होगा ।

नजेरोग : वो कैसी दुनिया के नागरिक होंगे मैं नही जानता, मै तो सिर्फ इतना जानता हू कि वो दिखने मे मेरे जैसे हों । मैं सोचता हू कि तुम्हारे पिताजी भी यह सोचते होंगे, कि उनके पोते तुम्हारे जैसे हों, मगर हां उनके ख़यालात तुम्हारे जैसे न हों, यह सब कहने की बातें हैं कि ऐसा होगा, वैसा होगा । मगर कभी कुछ बदलता नहीं, कम-से-कम तुम इतना तो कर ही सकते हो कि अपने मां-बाप के कहने पर एक साल के लिए रुक जाओ ।

देव : मोहन, एक क्रान्तिकारी की तरह यह जोशीली स्पीच जो तुम ने दी है, मुझे बिलकुल पसन्द नही, मैं कोशिश करूंगा कि जो कुछ भी तुमने कहा है, उसे मैं भूल जाऊं । बस, अब मैं तुमसे सिर्फ यह चाहता हूं कि तुम वादा करो कि तुम दोनों एक साल तक शादी नही करोगे ।

मोहन : मैं ऐसा कोई वादा नही कर सकता, हां सिनथीया को यह मंजूर है तो मुझे मजबूरन एक साल के लिए रुकना ही होगा ।

[मकान के दरवाजे की घंटी बजती है । मोहन जाता है, एक टेलीग्राम लेकर आता है, अपने आप मुस्कराता है । टेलीग्राम सावित्री को देता है । सावित्री उसे पढ़ती है, दुख से

अपना सर ठोक कर कुर्सी पर बैठ जाती है। देव उसके पास जाता है। सबको ताज्जुब है कि क्या हो गया। मोहन टेलीग्राम उठा कर पढ़ता है।]

देव : क्या लिखा है मोहन ?

मोहन . मर गये।

देव : मर गये ?

नजेरोग : कौन मर गए ?

मोहन : (तस्वीर की तरफ इशारा करते हुए) यह मर गए। आज सुबह हार्ट-अटैक से।

देव : (हक्का-बक्का रह जाता है) नही, ऐसा नही हो सकता।

सावित्री : (दुख में) वो बहुत बीमार थे। मुझे जिस बात का डर था वही हुआ।

देव : अगर पहले टेलीफोन करने की सोची होती तो मैं उनसे बात कर सकता था। कौन जाने इस सबके पीछे क्या था, वो दरअसल में क्या चाहते थे।

मोहन : वो क्या चाहते थे, हम कभी नही जान पायेंगे।

सावित्री : (उठते हुए) मैं जानती हूं, वो बहुत नेक आदमी थे। अगर उन्होंने कोई गलती की है तो इतना बड़ा दान देकर। तुम सब क्या सोचते हो, क्या तुम सब दूध के धुले हो, वो कैसे थे, क्या चाहते थे, इसके बारे मे कहने का यहां किसी को कोई अधिकार नही है।

[वहां से चली जाती है]

देव : (भौचक्का है) वो बड़ा अनोखा आदमी होगा, जीते जी तो बड़ा था ही, मगर अपनी मौत के बाद वो और महान हो गया। (वो भी सावित्री के पीछे-पीछे चला जाता है।)

सिनथीया : यह खबर सुनकर मुझे बहुत दुख हुआ मोहन। तुम्हारी मां ठीक कहती हैं, हमें कोई हक नही कि हम उनके बारे में कुछ कहे। मेरे ख्याल में वो भला ही चाहते थे।

मोहन : मगर यह बताने के लिए उन्हें मर जाना पड़ा। चलो हम उनकी याद में तमाम पुरानी बातें और शर्तें भुला दें और नये सिरे से जिन्दगी शुरू करें।

सिनथीया : (मुस्कराती हुई मोहन के हाथ अपने हाथों में लेते हुए) हां।

[नजेरोग जो दूर अकेला खड़ा उनको देख रहा था, अपना सर हिलाता है और चुपचाप बाहर चला जाता है।]

मोहन : (कुछ देर बाद अपने चारों तरफ देखता है, तब उसे मालूम होता

है कि सब लोग अकेला छोड़कर चले गए हैं) सब लोग हमें छोड़कर चले गए। हम अकेले हैं।

सिनथीया : हां। हमें कुछ दिन और अकेले ही रहना पड़ेगा।

[पर्दा]

अवसर...



आर्थर मैईमेने (ARTHUR MAIMANE)

आर्थर मैईमेने का जन्म दक्षिण अफ्रीका मे 1932 में हुआ। पत्रकार हैं—पूर्वी अफ्रीका में Reuter के correspondent रह चुके हैं। कुछ समय घाना(Ghana) मे भी काम किया और फिर वहा से लदन चले गए। अभी BBC में current affairs मे commentator की हैसियत से काम कर रहे हैं। इन के कई नाटक Beast भी हुए हैं और कहानियां पत्रिकाओं मे छपी हैं।

पात्र

मिनिस्टर
सोलोमन
ऐमा
मोनिका
जोज़ेफ

दृश्य-1

[विदेशमंत्री का दफ्तर, दरवाजे पर खटखटाने की आवाज]

मिनिस्टर : (रोब से) अंदर आ जाओ—अरे सोलोमन—बिल्कुल सही वक्त पर आए।

सोलोमन : (बड़ी इज्जत के साथ) नमस्कार मिनिस्टर साहब !

मिनिस्टर : अरे क्या सोलोमन, तुम भी मिनिस्टर कहकर बुलाते हो। इतने बरसों से एक-दूसरे को जानते है। देश की आजादी के लिए एक साथ काम किया। आओ बैठो।

सोलोमन : (थोड़ा-सा हंसता है) शुक्रिया, मगर फेड्रिक अब तुम मिनिस्टर बन गए हो न ? जो मिनिस्टर को इज्जत देनी चाहिए वो तो मुझे देनी ही होगी।

मिनिस्टर : (मजाक में) ओह तो फिर मुझे भी तुम को मिस्टर ओरगनाईजीग सेक्रेट्री कह के बुलाना होगा।

सोलोमन : मिनिस्टर साहब, वो तो पार्टी मे एक मामूली-सी पोस्ट उतनी महत्त्व-पूर्ण नही जितनी आपकी है।

मिनिस्टर : मगर सोलोमन, तुम तो जानते हो कि प्रधानमंत्री पार्टी को कितना महत्त्व देते है।

सोलोमन : (बहुत धीरे से) मगर पार्टी ने अपना काम कर दिया है न ? हम एक महीने में आजाद हो जाएगे।

मिनिस्टर : मगर इसका यह मतलब नही कि प्रधानमंत्री तुम्हे भूल गए हैं।

सोलोमन : फेड्रिक, मैं जानता हूं कि पार्टी को कितना महत्त्व दिया जाता है, मगर अब तो केबिनेट भी बन गया, मेरे जैसे लोगों के लिए क्या बाकी रह गया है।

मिनिस्टर : सोलोमन, अभी भी बहुत सारे पोस्ट बाकी हैं। तुम नैशनल बैंक के चैयरमैन हो सकते हो।

सोलोमन : (थोड़ा-सा नाराज होकर) मै बैंक के बारे मे कुछ नही जानता।

मिनिस्टर : तुम पोलिटिक्स मे रहना चाहते हो। यही न ?

सोलोमन : वैसे तो मिनिस्टर साहब, मैं किसी भी पोस्ट पर देश की सेवा करने

को तैयार हूं मगर मैं पालिटिक्स में बहुत दिनों से हूं—काफी बरसों से।

मिनिस्टर : सोलोमन, मैं जानता हूं—हम सब जानते हैं—प्रधानमंत्री भी जानते हैं और इसीलिए मैंने आज तुम्हें अपने ऑफिस में बुलाया है, समझे सोलोमन ?

सोलोमन : (धीरे से) आप तो विदेशमंत्री हैं—सो···

मिनिस्टर : मैं तुम्हे राजदूत बनाना चाहता हूं। राजदूत।

सोलोमन : क्या ?

मिनिस्टर : (हंसकर) भई, पार्टी में तो मैं तुम्हारा जूनियर था मगर अब तो तुम्हारा अफसर बन जाऊंगा। इसके बारे में क्या ख्याल है तुम्हारा ?

सोलोमन : मिनिस्टर साहब, यह आप कभी मत सोचिएगा कि मैं यह समझता हूं कि आप इस पोस्ट के काबिल नही हैं, और फिर आप मुझ से ज्यादा पढ़े-लिखे भी तो हैं।

मिनिस्टर : (नाराज होकर) मगर तुम यह समझते क्यों नही कि मै तुम्हारे लिए क्या कर रहा हूं ?

सोलोमन : (थोड़ा-सा घबरा जाता है) नही-नही, ऐसी बात नही है, मैं समझता हूं मैं आपका शुक्रगुजार हूं—मैं सिर्फ यह बताना चाह रहा था कि···

मिनिस्टर : मैं सब जानता हूं सोलोमन, तुम्हे बताने की जरूरत नही (थोड़ी देर रुक कर) सोलोमन, एक बात पूछूं ? तुम्हारा क्या ख्याल है, शिक्षा बहुत जरूरी है ?

सोलोमन : मेरे ख्याल तो आप अच्छी तरह से जानते हैं। मैं समझता हूं शिक्षा का होना बहुत जरूरी है। इसलिए तो मै कोई शिकायत···मैंने इसीलिए मोनिका को विलायत पढने के लिए भेजा है। मै तो खुद एक मामूली प्राइमरी स्कूल टीचर था, मगर मै अच्छी तरह से जानता हूं कि शिक्षा का होना कितना जरूरी है।

मिनिस्टर : मुझे खुशी है कि तुम मुझ से सहमत हो कि शिक्षा जरूरी है। तुम्हारी बात और है—तुम्हे अनुभव भी तो है और यही वजह है कि हम सोचते हैं कि तुम एक अच्छे और सफल राजदूत बनोगे—फिर तुम भाषण भी तो अच्छे देते हो (हंसते हुए) वो भाषण जो तुम दिया करते थे याद है न 'हमें हमारी आजादी चाहिए।'

सोलोमन : 'भाषण ?' मगर राजदूत को कहां भाषण देने होते हैं।

मिनिस्टर : युनाइटेड नेशन्स ? दुनिया का सबसे बड़ा प्लेटफार्म।

सोलोमन : क्या ? मैं ?

मिनिस्टर : (हंसता है) हां, तुम सोलोमन, तुमने भाषण देकर हमें आजादी

दिलाई। अब भाषण देकर हमारा नाम इतिहास मे अमर करो।

सोलोमन : युनाइटेड नेशन्स—मैंने तो सपने में भी नही सोचा था।

मिनिस्टर : तो क्या तुम यह पोस्ट लेने के लिए राजी हो ?

सोलोमन : हां।

मिनिस्टर : सोलोमन, मैं खुद भी चाहता हू कि तुम वहां जाओ (थोड़ी देर रुक कर) मगर कुछ अड़चनें हैं।

सोलोमन : (नम्रता से) अडचने ? कैसी अड़चने ?

मिनिस्टर : अभी-अभी हम शिक्षा की बात कर रहे थे न ?

सोलोमन : हा।

मिनिस्टर : तुम्हारी पत्नी वो पढ़ी-लिखी नही है।

सोलोमन : समझा।

मिनिस्टर : तुम इस बात को तो शायद मानोगे कि राजदूत की पत्नी का महत्व उतना ही होता है जितना कि राजदूत का। उसे लोगों से मिलना-जुलना होता है। अपने घर पर पार्टी वगैरह देनी होती है और इन सबके लिए पत्नी का पढा-लिखा होना जरूरी है। तुम मेरी बात समझ रहे हो न, सोलोमन ?

सोलोमन : शायद—ऐसा मैंने कभी सोचा नही था।

मिनिस्टर : मैं जानता हू। मैंने अपनी आंखो से देखा है, इन आजाद अफरीकन देशों मे कई मिनिस्टर ऐसे हैं जिनकी शादी बहुत साल पहले हुई थी। उनकी पत्निया अनपढ हैं। जब वो काकटेल पार्टी मे उनके साथ जाती है तो किसी और से बात नही कर सकती, मिल नही सकती, वो सब की सब एक कोने मे चुपचाप बैठी रहती हैं, न कोई उनसे बात करता है न कोई उनसे मिलता है। हम यह नही चाहते कि ऐसा हो।

सोलोमन : (धीरे से) क्या मुझे मिनिस्टर का पद इसीलिए नही मिला था ?

मिनिस्टर : (नर्मी से) नही सोलोमन, कम-से-कम ऐसा मै तो नही सोचता और फिर यह सत्र तो प्राइम मिनिस्टर के ऊपर है (जरा खुश होकर) उनका पढा-लिखा होना या न होना घर मे तो कोई फर्क नही पडता, मगर राजदूत और उनकी पत्नी अपने देश की प्रगति के प्रतीक होने चाहिए, अगर वो ही अनपढ़ हों तो यह अंग्रेज लोग हमें जंगली समझेंगे।

सोलोमन : (थोड़ी देर चुप रहता है) तो इसका मतलब मुझे यह पोस्ट नही मिल सकती है ?

मिनिस्टर : वह तो तुम्हारे ऊपर है, सोलोमन।

सोलोमन : कैसे ?

मिनिस्टर : तुम अपनी पत्नी को न्यूयार्क अपने साथ नही ले जा सकते।

सोलोमन : फ्रेड्रिक, यह बहुत मुश्किल है। हमारी शादी हुए तीस साल हो गए हैं, मैं वहां उसके बगैर जाऊं और साल में सिर्फ एक बार उससे मिल सकूं तो हमारी शादी बेमानी हो जाएगी।

मिनिस्टर : (उस पर इस बात का कोई असर नहीं होता) मगर तुम वहां बगैर पत्नी के नही जा सकते?

सोलोमन : क्या मतलब? यह कैसे हो सकता है कि मैं अपनी पत्नी को यहां छोड़ूं और फिर भी...

मिनिस्टर : तुम्हे दूसरी शादी करनी होगी। किसी पढ़ी-लिखी औरत से—

सोलोमन : तुम्हारा मतलब, मुझे अपनी पत्नी को तलाक देना होगा?

मिनिस्टर : वैसे तुम्हारी शादी भी तो पुराने रस्मो-रिवाज से हुई थी इसलिए दरअसल में इसे तलाक तो नही कह सकते।

सोलोमन : *अच्छा...*

मिनिस्टर : तो ऐसा करोगे? इसी मे देश की भलाई है, और तुम तो हमेशा कहा करते थे कि देश की भलाई के लिए तुम कुछ भी कुर्बानी कर सकते हो। तुम्हें देश की सेवा इसी तरह से करनी होगी।

सोलोमन . वो तो ठीक मगर इतने कम वक्त मे एक पढ़ी-लिखी जवान पत्नी कहां से ढूंढ कर लाऊं?

मिनिस्टर : मेरे दोस्त, चिराग तले अंधेरा होता है।

सोलोमन : क्या मतलब तुम्हारा?

मिनिस्टर : पार्टी हैड क्वार्टर्स में जो सेक्रेट्री है उसका क्या ख्याल है?

सोलोमन . कौन-सी?

मिनिस्टर : अब मुझ से साफ-साफ क्यों कहलवाना चाहते हो सोलोमन, यह बातें छुपी नही रहती।

सोलोमन : तुम्हारा मतलब वेरोनीकर से है। मैंने तो छुपाने की लाख कोशिश की थी।

मिनिस्टर : हां वही, अगर उसी का नाम वेरोनीका है।

सोलोमन : इतने सालों के बाद मैं अपनी पत्नी को यू ही तलाक कैसे दे दू? मेरे बच्चे क्या सोचेंगे?

मिनिस्टर : सोलोमन, तुम तो एक पोलिटिशियन हो और अच्छी तरह से जानते हो कि पोलिटिक्स में अवसर को हाथ से कभी नही जाने देना चाहिए। यह अवसर तुम्हें मिला इसे छोडो मत और फिर हम सब को देश के लिए कुरबानियां करनी होंगी।

सोलोमन : मगर इतनी बड़ी कुर्बानी—क्या प्रधानमंत्री की यही मर्जी है?

मिनिस्टर : यह मेरी मर्जी है सोलोमन—विदेशमंत्री मैं हूं। जहां तक मेरे मंत्रालय

को ताल्लुक है, प्रधानमंत्री मेरी सलाह ही मानते है।

सोलोमन : तो प्रधानमंत्री से बात करना बेकार है।

मिनिस्टर : (बेदर्दी से) अगर तुम बात करोगे तो मेरे लिए बेकार हो जाओगे, (जरा खुले दिल से) सोलोमन सुनो, मैं यह बिल्कुल नहीं चाहता कि तुम्हारे ऊपर किसी तरह का दबाव डालूं। (थोड़ी देर ठहर कर) तो ?

सोलोमन : मै सोचकर बताऊंगा।

मिनिस्टर : हां जरूर" मगर सोलोमन, इस बात का ख्याल रखना कि युनाइटेड नेशन्स में तुम्हें फैसले जल्दी लेने होंगे। हमे ऐसे आदमी की तलाश है जो ज्यादा सोच-विचार में वक्त बरबाद न करे।

सोलोमन : (उदास-उदास) हां, हां मैं समझता हूं।

मिनिस्टर : तो ठीक है, मैं उम्मीद करता हूं कि अगले हफ्ते तुम अपना फैसला मुझे बता दोगे। अच्छा सोलोमन, नमस्कार।

सोलोमन : नमस्कार मिनिस्टर साहब !

दृश्य-2

[सोलोमन का घर—बैठक और डाइनिंग रूम]

ऐमा : सोलोमन, रात बहुत बीत चुकी है। अभी तक यहा क्यों बैठे हो ? चलो सोने चलो।

सोलोमन : (उदास है) मैं अभी आता हू ऐमा ?

ऐमा : तीन रात हो गई तुम ऐसे ही बैठे रहते हो—तुम्हें क्या परेशानी है ?

सोलोमन : (बहुत थका हुआ) कुछ परेशानी नही ऐमा—यूं ही कुछ सोच रहा था।

ऐमा : सोलोमन, मैं तुम्हे बहुत अच्छी तरह से जानती हूं।

सोलोमन : (आहें भरते हुए) कभी-कभी बहुत मुश्किल फैसले भी करने होते हैं।

ऐमा : अगर तुम यह जानो कि क्या ठीक है और क्या गलत, तो फैसला करने में मुश्किल नहीं होती।

सोलोमन : अगर उससे तुम्हे दुख भी पहुंचता हो तो ?

ऐमा : तुम्हारा मतलब दुख मुझे पहुंचेगा या उसे जो फैसला लेगा ?

सोलोमन : तुम्हे, उन्हे, मुझे —सबको।

ऐमा : अगर तुम जानते हो कि सही क्या है तो फैसला तुम लो।

सोलोमन : उसी तरह से जैसे डिस्ट्रिक्ट-कमिश्नर ने मुझे टीचर की नौकरी से निकाल दिया था क्योंकि मैं पोलिटिक्स में था।

ऐमा : और तुमने देश को आजादी दिलाने में मदद की, ठीक है न ? अगले महीने हम आजाद हो जाएंगे।

सोलोमन : तुम्हारे कहने का मतलब जब मैं महीनों बेकार था तो तुम मुझसे नाराज नहीं थी।

ऐमा : तुम्हारा फैसला ठीक था और मैं तुम्हारे फंसने से खुश थी।

सोलोमन : इसलिए कि मैं आजादी की लड़ाई में मदद कर रहा था और अब अगर मैं तुमसे यह कहूं कि मुझ को तुम्हें इसी आजादी की वजह से छोड़ना होगा तो तुम क्या करोगी ?

ऐमा : मुझे छोड़ना होगा ? कैसे छोड़ना होगा ?

सोलोमन : (बहुत दुखी होकर) मेरा मतलब तलाक देना होगा।

ऐमा : कैसी बातें करते हो ! बच्चे सुनेंगे तो क्या सोचेंगे ?

सोलोमन : ऐमा, मैं मजाक नहीं कर रहा। वो लोग मुझे राजदूत बनाना चाहते हैं। चाहते हैं कि यूनाइटेड नेशन्स में भाषण दूं।

ऐमा : वो तो बहुत बड़ी पोस्ट है, है न ?

सोलोमन : (बहुत दुखी है) हां ऐमा, है तो बहुत बड़ी, इसीलिए चाहते हैं कि मैं तुम्हें तलाक दूं क्योंकि तुम अनपढ़ हो।

ऐमा : वो यह सोचते हैं न कि मैं राजदूत की पत्नी के काबिल नहीं हूं।

सोलोमन : हां।

ऐमा : इतनी बड़ी जगह है मैं तो खो जाऊंगी, कहीं अमेरिका में है न ?

सोलोमन : न्यूयार्क में।

ऐमा : (सोचती है) हां, न्यूयोर्क में। तुम जाना चाहते हो न ?

सोलोमन : यह मेरे लिए बहुत बडा अवसर है, अगर ना कर दूं तो'''खैर'''कुछ समझ में नहीं आता।

ऐमा : तुमने देश के लिए बहुत बड़े-बड़े काम किए हैं।

सोलोमन : मैंने देश के लिए बहुत दुख सहे हैं। बेरोजगारी का सामना करना पड़ा और जेल भी गया।

ऐमा : अब दुख सहने की मेरी बारी है।

सोलोमन : (उसे ताज्जुब होता है मगर उसके साथ थोड़ी-सी खुशी भी) तो क्या ऐमा तुम इस बात से खुश हो ?

ऐमा : नहीं सोलोमन, मैं खुश तो नहीं हूं, मगर तुम जाना चाहते हो और मैं तुम्हारे साथ जा नहीं सकती। मेरे मां-बाप ने तुमसे मेरी शादी करवाई थी। अब यह तुम्हारे ऊपर है तुम जो ठीक समझो वो करो।

सोलोमन : मगर मेरे ख्याल मे यह ठीक नही है।

ऐमा : मगर तुम जाना चाहते हो न सोलोमन, मैं तुम्हें बहुत अच्छी तरह से जानती हूं, जब तक तुम्हारी मन की चीज तुम्हें मिल न जाए तुम चैन नही लेते। तुम हम दोनों को जिंदगी हराम कर दोगे।

सोलोमन : ओह ऐमा, क्या मैं इतना बुरा हूं ? मैं क्या चाहता हूं तुम्हें साफ-साफ क्यों नही बता पाया। मुझे माफ करना ऐमा !

ऐमा : माफ करना ? सोलोमन, तुम यह भूल जाते हो कि मैं शहर की रहने वाली नही, मैं गांव में पैदा हुई थी जहां पर सारे फैसले मर्द लेते हैं।

सोलोमन : जब बच्चों को तलाक का मालूम होगा तो क्या कहेंगे ? और खासकर के मोनिका ?

ऐमा : वो अंग्रेजों से भी बदतर हैं। मैं जानती हूं वो बहुत ज्यादा पढ़-लिख गई है, वो मेरी ही लड़की है मगर वो क्या सोचती है क्यों सोचती है मेरी समझ में बिलकुल नही आता।

सोलोमन : हां, मोनिका को जब तुम···हम बताएंगे तो वो क्या कहेगी ?

ऐमा : (थोड़ा व्यंग्य करते हुए) तुम बताओगे—तुम दोनों पढ़े-लिखे हो··· वो क्या सोचती है वो तुम जानते हो—किस तरह से बात को कहना चाहिए ताकि उसकी समझ में आ जाए यह तुम्ही कर सकते हो।

सोलोमन : तुम मेरा मजाक उड़ा रही हो ऐमा—मेरी समझ में···

ऐमा : नही सोलोमन, तुम्ही को बताना होगा। तुम्हें मोनिका को बताना चाहिए कि तुम्हारा अधिकार क्या है ? मुझे तो तुम जैसा चाहो कर सकते हो। मगर उसके साथ सख्ती से पेश आना चाहिए, वो तभी तुम्हारी इज्जत करेगी।

सोलोमन : क्या मैं उसके साथ सख्ती से पेश नही आता ?

ऐमा : हां आते हो, मगर अंग्रेजों की तरह···

सोलोमन : तुम क्या चाहती हो कि बच्चों की तरह···

ऐमा : सिर्फ वही तो एक तरीका नही है···

सोलोमन : ठीक है, मैं उससे बात करूंगा। तुम्हारी मदद की जरूरत पड़ेगी इसलिए तुम्हारा वहां होना जरूरी है।

ऐमा : ठीक है—यह कल करेंगे—आओ सोने चलें, बहुत देर हो चुकी है।

दृश्य-3

[सोलोमन का घर—वही जो दृश्य दो में था। दूसरे दिन नाश्ते का वक्त। सब डाइनिंग टेबिल पर बैठे हैं और सुबह का नाश्ता कर रहे हैं। रेडियो से संगीत आ रहा है। दरवाजा खुलता है और धमाके से बंद भी होता है।]

मोनिका : (खुशी-खुशी) गुड मॉर्निंग पापा, गुड मॉर्निंग मामा !

सोलोमन : गुड मॉर्निंग—मोनिका।

ऐमा : (जरा-सी डांटती हुई) बेटी, नाश्ते पर तुम हमेशा देर से आती हो यह ठीक नहीं। जल्दी-जल्दी खाना सेहत के लिए अच्छा नहीं।

मोनिका : (हंसते हुए) मैं जानती हूं मामा हाजमे के लिए ठीक नहीं है और अच्छे हाजमे का मतलब है वजन का बढ़ना और वो मैं किसी भी हालत में नहीं चाहती कि बढ़े।

ऐमा : अरे आजकल की तुम मोडर्न लड़कियां फिगर-फिगर इसके अलावा कुछ और भी सोचती हो—बस फिगर के पीछे दीवानी होती हो—मैं जब लड़की थी तो···

सोलोमन : (कुछ परेशानी से) क्या आज मॉडर्न लड़की रात को जल्दी घर लौटेगी।

मोनिका : पापा, मैं कुछ कह नहीं सकती शायद जल्दी आ जाऊं—मगर जोजेफ ने और मैंने कोई रात का प्रोग्राम बना लिया तो और बात है। वैसे मैं घर आ जाऊंगी करीब···

ऐमा : (जरा प्यार से) मोनिका, जोजेफ कैसा है ? बहुत दिन हुए दिखाई नहीं दिया।

मोनिका : (सोलोमन के साथ हंसते हुए) ओह मामा, तुम्हारे लिए तो तीन दिन भी एक लंबा अरसा हो जाता है, मां की परेशानी जो होती है कि बेटी की शादी होगी भी या नहीं। घबराओ नहीं मामा, मैं जब कहूंगी तब ही जोजेफ शादी कर लेगा।

सोलोमन : (मजाक करते हुए) क्यों, यह बेचारे लड़के को तय नहीं करना ?

मोनिका : पापा, कभी किसी मर्द ने तय किया है ? क्यों मामा ? क्या वो अभी भी नहीं जानता कि सिर्फ औरत ही···

ऐमा : चुप—बच्चों को ऐसी बात नहीं करनी चाहिए।

मोनिका : (थोड़ी-सी नाराज होती है) हां-हां हमेशा बच्ची—मैं इतनी बड़ी हो गई तो भी बच्ची ही···

सोलोमन : (बिगड़ती हुई बात को संभालते हुए) मोनिका, मैं यह जानना

चाहता था कि स्कूल से तुम सीधी घर आ रही हो क्या ? क्योंकि हम तुम से कुछ बातें करना चाहते हैं। कुछ जरूरी बात।

मोनिका : (जो नाराज है कुछ देर खामोश रहने के बाद) क्या कोई फैमिली कानफेरेंस है ?

सोलोमन : हां कुछ ऐसा ही समझ लो।

मोनिका : क्या बात है ?

सोलोमन : जब रात को आवोगी तब बताएंगे।

मोनिका : (जरा तोलेपन से) फिर वही बात, मैं क्या बच्ची हू कि बता नही सकते।

सोलोमन : (हार मानते हुए) अच्छा बाबा, आजादी के बाद सरकार मुझे एक पोस्ट देने की सोच रही है।

मोनिका : पापा क्या आपको कोई बड़ी पोस्ट दे रहे है ? कौन-सी है ! वैसे मिनिस्टर तो सब बना दिए गए, और'''

ऐमा : मास्टरनी जी जब रात को आवोगी तब, अब तुम्हें देर हो रही है।

मोनिका : तुम ठीक कह रही हो मामा—मैं चली, रात को फिर मिलेंगे।

दृश्य-4

[दृश्य दो की तरह—उसी शाम को—जब सीन शुरू होता है तो बी० बी० सी० की खबरें खत्म होती ही हैं।]

सोलोमन : सात बज के दस मिनट हो गए और वो अभी तक नहीं आई।

मोनिका : (अंदर आती है, खुश है) गुड ईवनिंग मामा, क्यों पापा, बिलकुल सही वक्त पर आई ना ?

ऐमा : हां, आज जोजेफ से मिली थी ?

मोनिका : हां मामा, आपका होने वाला जंवाई जब मुझे लेने आएगा तो वो आप से भी मिलेगा। तो लीजिए पापा, मैं आ गई। तमाम अच्छी खबरें सुनने।

सोलोमन : खबर अच्छी भी और बुरी भी।

मोनिका : क्या मतलब पापा ?

सोलोमन : (बात कहने के लिए अपना गला साफ करता है) यह तो तुम जानती ही हो कि जिस आजादी के लिए हम बहुत दिनों से लड़ाई लड़ रहे

है वो हमें बहुत जल्द हासिल होने वाली है, और आजादी के बाद दूसरे देशों में हमें अपने राजदूत नियुक्त करने पड़ेंगे ··

मोनिका : (बेहद खुश है) ओ पापा, तो क्या राजदूत बनने वाले हैं ? मैं···

सोलोमन : बेटी, जरा मेरी बात शांति से सुनो। जैसे कि मैंने पहले कहा था कि खबर अच्छी भी है और बुरी भी (पॉज) देखो मोनिका, तुम एक पढ़ी-लिखी लड़की हो। मैंने और लड़कियों से तुम्हें कही ज्यादा अच्छी शिक्षा दिलवाई, इसलिए तुम यह समझ पाओगी कि राजदूत, और खास करके मेरे जैसे सीनियर राजदूत···की पत्नी को सरकारी अफसरों से मिलना-जुलना पड़ेगा, और खास करके यह साम्राज्यवादी देशों के अफसरों से जो अभी भी यह सोचते हैं कि हम राज्य करने के काबिल नही हैं। क्यों ठीक है न ?

मोनिका : (कुछ देर रुकने के बाद, धीरे से) कहते रहिए पापा !

सोलोमन : (कहते हुए मन नहीं रहा है, अपना गला साफ करता है) तुम्हारी मां उन औरतों मे से नही है जो ऐसा कर सकें, क्योंकि वो अनपढ़ है।

मोनिका : तो ?

सोलोमन : तो मुझे यह पोस्ट नही मिलेगी, अगर ···अगर···

मोनिका : (नाराज होकर) कहिए ना।

ऐमा : (बीच में बोलती है) बेटी, पापा तुम से यह कहना चाहते हैं कि वो मुझ को तलाक करके किसी और पढ़ी-लिखी औरत से शादी करें।

मोनिका : पापा, क्या यह सच है ? आप मामा को···नही, मुझे विश्वास नही होता है, मैं हमेशा यही सोचती रही कि आप मामा को बहुत प्यार करते थे।

सोलोमन : इसमें प्यार का क्या लेना-देना है ?

मोनिका : सब कुछ, प्यार दुनिया में सबसे बड़ी चीज है।

सोलोमन : यह तुम्हारी अंग्रेजी शिक्षा का असर है, जरूरी है सम्मान और आदर का होना। जब तुम्हारी मां की और मेरी शादी हुई थी तब आदर और सम्मान का होना जरूरी था। प्यार का नही।

मोनिका : वो अनपढ़ हैं, राजदूत की पत्नी होने के काबिल नही हैं, इसलिए अब आप उनका आदर नही करते ?

सोलोमन : जमाना बहुत तेजी से आगे बढ़ रहा है, और तुम्हारी मां बहुत पीछे छूट गई हैं।

मोनिका : मामा, क्या तुम इस बात से खुश हो ?

ऐमा : मेरे खुश होने या न होने का सवाल ही कहां उठता है ? मैं तुम्हारे पापा के रास्ते का रोड़ा नहीं बनना चाहती।

सोलोमन : ऐमा, तुम्हारे ख्याल जानकर मुझे खुशी हुई।

मोनिका : मगर मैं खुश नहीं हूं—मैं यह नहीं चाहती कि मेरे मां-बाप तलाक दें।

सोलोमन : मैं यह सब कुछ अपने देश के लिए कर रहा हूं।

मोनिका : अपना देश, क्या देश लोगों से ज्यादा महत्त्वपूर्ण है जो उसमें रहते हैं, अगर ऐसा है तो फिर भाड़ में जाय यह देश।

ऐमा : मोनिका—क्या तुम यह भूल गई हो कि तुम किस से बात कर रही हो ?

मोनिका : मैं माफी चाहती हूं, मगर मैं यह जानना चाहूंगी कि हमारे बगैर यह देश क्या है, बताइए मुझको।

सोलोमन : देश को हम सब मिलकर ही बनाते हैं, मगर अकेले हमारा कोई महत्त्व नहीं है। हमारा महत्त्व जनता के रूप में देश के रूप में ही है अकेले हम कुछ भी नहीं।

मोनिका : मगर मैं देखती हूं कि यह मिनिस्टर इस तरह से नहीं सोचते जिस तरह से बड़ी-बड़ी आलीशान गाड़ियों में इधर-उधर घूमते हैं। वो शायद सोचते हैं कि यही सब कुछ है।

ऐमा : बेटी, वो बड़े आदमी हैं।

मोनिका : और तुम्हारे पति भी एक बड़े आदमी बनने जा रहे हैं। पचीस साल से जो आदर, वफा और प्यार तुमने दिया है उसे वो अपने अरमानों को पूरा करने के लिए कुचल देना चाहते हैं। अगर यही बड़प्पन है, तो इन्हीं को मुबारक।

ऐमा : बेटी, पापा को कहने दो, मैं इनकी बात को समझना चाहती हूं।

मोनिका : अब और क्या बाकी रह गया है कहने को, जो कुछ कहना था वो तो कह दिया, और एक तुम हो जो चुपचाप बैठी कह रही हो कि तुम कुछ नहीं कह सकतीं। ठीक है अगर तुम कुछ नहीं करना चाहती तो न करो।

सोलोमन : मोनिका, बस बहुत हो गया, चुप रहो।

मोनिका : अच्छा पापा, यह तो बताइए कि आप किससे शादी कर रहे हैं ? राजदूत की पत्नी होने के काबिल कौन है ?

सोलोमन : उसको अभी बताने की जरूरत नहीं।

ऐमा : सोलोमन, तुम्हें बताना चाहिए। यह सबसे बड़ी है, इसका सब कुछ जानना बहुत जरूरी है।

सोलोमन : ठीक है, तुम उसको जानती हो, वेरोनिका, शिक्षा मंत्री की भतीजी।

मोनिका : क्या'''वो'''वो'''

सोलोमन : मोनिका, उसके बारे में जो कहो सोच-समझकर कहना, वो रिश्ते में तुम्हारी मां बनने वाली है। मेरी बात मानो तो अब से तुम उसे आदर देना सीखो।

मोनिका : वो सेकेण्डरी स्कूल में मुझसे जूनियर थी, जहां तक मैंने देखा और सुना है, पढ़ने-लिखने में भी यूं ही थी, हूं वेरोनिका।

सोलोमन : अच्छा ही हुआ कि वो तुम्हारी तरह चालाक नहीं थी वर्ना वो भी तुम्हारी तरह ढीठ होती और फालतू में बहस करती।

मोनिका : पापा, क्या उसने आपके प्रस्ताव को मान लिया ? या इसकी कोई जरूरत ही नहीं पड़ी ? क्या यह भी उसकी देश के लिए कुरबानी है ? उसके चाचा मिनिस्टर साहब ने आपको कहा कि देश की भलाई के लिए उससे शादी करो और बस सब कुछ तय, क्यों ?

सोलोमन : हां, उसने मेरे प्रस्ताव को मान लिया।

मोनिका : आपका मतलब, आपने उसे पार्टी के दफ्तर में बुलाया, प्रस्ताव रखा और वो मान गई ?

सोलोमन : नहीं, इतना जल्दी नहीं हुआ।

मोनिका : पापा, आप जानते हैं आप क्या कह रहे हैं ? इसका मतलब यह हुआ कि इतने दिनों तक आपके और इस वेरोनिका के बीच नाजायज ताल्लुकात थे।

सोलोमन : (बेहद नाराज है) इससे तुम्हें क्या वास्ता है ?

मोनिका : तो यह सच है, मामा, क्या तुम सब कुछ जानती थी ?

एमा : हम में कोई बात छुपी नहीं रहती बेटी !

मोनिका : और तुम यह सब चुपचाप स्वीकार कर लेती हो ?

सोलोमन : यह कैसी लड़की को जन्म दिया मैंने ? ऐसी शिक्षा''' (दरवाजे पर दस्तक की आवाज होती है) कौन है ?

मोनिका : मैं देखती हूं शायद जोजेफ हो। मैंने कहा था न वो आज शाम को आने वाला था। (दरवाजे पर) हैलो जोजेफ आओ अन्दर आ जाओ।

जोजेफ : हैलो डीयर !(अन्दर आते हुए) गुड ईवनिंग सर, गुड ईवनिंग मामा ! दोनों की तबीयत कैसी है ?

मोनिका : तबीयत का तो नहीं मालूम, मगर मूड तो हम तीनों का ही ठीक नहीं है।

सोलोमन : चुप रहो मोनिका !

मोनिका : चुप रहूं ? क्यों, जोजेफ भी तो इस परिवार का एक सदस्य है जो कभी एक परिवार था, आप क्या सोचते है। जिस परिवार में वो शादी कर रहा है क्या उसके बारे में जानने का उसे हक नहीं है ?

जोजेफ : माफ करना, मैं कुछ भी समझ नही पा रहा कि यह सब क्या हो रहा है।

ऐमा : जोजेफ, तुम चाय पियोगे ?

जोजेफ : हां मामा !

मोनिका : पापा, कहते क्यो नही, जोजेफ को बताइए न कि क्या हो रहा है।

सोलोमन : जोजेफ, शायद तुमने सुना होगा कि मुझे राजदूत बना रहे हैं।

जोजेफ : जी हां सुना था, मुझे बहुत खुशी हुई। बधाई देने में हिचक रहा था क्योंकि मैं यह नही जानता था कि सब बात तय हो गई है।

मोनिका : नही, अभी बधाई देने का वक्त नही आया, वक्त आया है रोने और रोने का, एक इन्सान दूसरे इन्सान से यह माग कैसे कर सकता है।

सोलोमन : यह मांग नही है मोनिका ?

मोनिका : जोजेफ, तुम बताओ, क्या यह सही है ?

जोजेफ : कैसी माग, मुझे नही मालूम, मेरी समझ में कुछ नही आ रहा।

मोनिका : नही, तुम जानते हो। तुम प्राइम मिनिस्टर के दफ्तर मे काम करते हो। मैं तुमसे एक आसान सवाल पूछती हू, जवाब दो। क्या सरकार की यह मांग सही है कि पापा, मामा को तलाक दें··· सिर्फ राजदूत बनने के लिए ?

जोजेफ : तलाक···वो इन्हे एक बहुत महत्त्वपूर्ण मिशन पर भेज रहे है।

मोनिका : इसमे महत्त्वपूर्ण का कोई सवाल नही उठता। सवाल उठता है असल का। मेरे ख्याल मे यह बहुत गलत है।

सोलोमन : मोनिका, तुम बात समझने की कोशिश नही कर रही हो।

ऐमा : लो बेटे चाय, तुम लोग यू ही बाते करते रहोगे तो जाने आज रात का खाना कब मिलेगा।

मोनिका : मामा, तुम सही वक्त पर आई हो। पापा तमाम बात समझाने जा रहे है। जी हा पापा, कहिए तो।

सोलोमन : बात बहुत सीधी है, राजदूत की पत्नी को क्या-क्या जिम्मेदारिया निभानी पडती है यह मैं समझा चुका हूं, और उन सबके लिए उसका पढ़ा-लिखा होना बहुत जरूरी है।

मोनिका : तो आपके कहने का मतलब है कि अगर वो लोग यह शर्त नही रखते तो भी आप उस लड़की से शादी करने के लिए मामा को तलाक दे देते।

सोलोमन : (नाराज होकर) मैंने यह कभी नही कहा।

मोनिका : मगर आपके कहने का मतलब यही है।

सोलोमन : जोजेफ, इस बेवकूफ आदर्शवादी लडकी को जिन्दगी की असलियत

समझाओ।

जोजेफ : किस तरह से समझाऊं कुछ समझ नहीं आ रहा। सिर्फ इतना ही कह सकता हूं कि तुम्हारे पापा ठीक कहते हैं। एक राजदूत की पत्नी का पढ़ा-लिखा होना बहुत जरूरी है, और खास करके जिस पोस्ट पर पापा जा रहे हैं।

मोनिका : क्या प्राइम मिनिस्टर के प्राइवेट सेक्रेट्री की पत्नी को भी पढ़ा-लिखा होना चाहिए? मेरे लिए तुम्हारा क्या ख्याल है? तुम तो जानते हो मैं सिर्फ बी० ए० हूं।

जोजेफ : (थोड़ा-सा घबरा जाता है) नहीं-नहीं, तुम्हारी बात और है, तुम तो काफी पढ़ी-लिखी हो।

मोनिका : काफी। सत्ताईस साल पहले तो मामा भी पापा के लिए काफी पढ़ी-लिखी थी, मगर जब तुम्हें भी कोई बड़ी पोस्ट देंगे तो उस वक्त क्या होगा?

जोजेफ : मैं जहां हूं वहां खुश हूं।

मोनिका : वो तो सत्ताईस साल पहले पापा भी थे।

जोजेफ : अब तुम मुझसे झगड़ा कर रही हो।

मोनिका : नहीं, मैं झगड़ा नहीं कर रही···

ऐमा : (बात को टालते हुए) हम कुछ और बात क्यों नहीं करते? (जोजेफ से) बेटे चाय पिओ ना, ठंडी हो जाएगी, और सब तो ठीक है ना?

[सब चाय पीते हैं, कोई बात नहीं करता, जल्दी से चाय खत्म कर लेते हैं।]

सोलोमन : चाय बहुत अच्छी बनी थी। चलो बर्तन साफ करने में तुम्हारी मदद कर दूं। तुम लोग खाना यहीं खाओगे या बाहर जा रहे हो।

जोजेफ : सोचा तो बाहर जाने का था···

मोनिका : नहीं, कहीं बाहर जाने का आज मन नहीं कर रहा।

जोजेफ : ठीक है।

सोलोमन : (बर्तन लेकर जाता है) ऐमा, जरा दरवाजा खोलना तो।

जोजेफ : उफ! मुझे क्या मालूम था कि इस झगड़े में फंस जाऊंगा!

मोनिका : क्यों, मौका मिलता तो इस झगड़े में नहीं फंसते?

जोजेफ : सच पूछो तो मैं नहीं चाहता था। तुम्हारे पापा एक बड़े अफसर हैं, मैं उनसे बहस नहीं करना चाहता।

मोनिका : तो क्या तुम यह सोचते हो कि वो गलती में हैं?

जोजेफ : हमें एकदम से नतीजे पर नहीं पहुंचना चाहिए, वैसे कुछ बातों पर सही हैं कुछ पर गलत।

मोनिका : तुम साफ-साफ नहीं कहना चाहते, मगर मैं तुम्हारा मतलब समझती हूं।

जोजेफ : मेरी जान, तुम बहुत होशियार हो, इस देश की सबसे समझदार लड़की।

मोनिका : तो क्या मुझ से शादी इसीलिए कर रहे हो ?

जोजेफ : मैं झूठ तो नहीं कहूंगा, इसमें कुछ सच्चाई तो है।

मोनिका : मान लो मेरे पास लंदन यूनीवर्सिटी की डिगरी नहीं होती, मैं यूं ही एक मामूली लड़की होती, तो क्या फिर भी तुम मुझसे शादी करते ?

जोजेफ : इस सवाल का जवाब मैं कैसे दे सकता हूं। जब मैं तुमसे मिला तो तुम ऐसी ही थीं।

मोनिका : थोड़ी देर के लिए मान लो कि मेरे लंदन जाने से पहले अगर तुम मुझसे मिले होते, तो ?

जोजेफ : यह सवाल बेजा है।

मोनिका : नहीं, बेजा नहीं है, तुम किससे प्यार करते हो, मुझसे या मेरी डिगरी से ?

जोजेफ : मोनिका, इन्सान जिस माहौल, जिस वातावरण में पैदा हुआ और परवरिश पाई वो उसके व्यक्तित्व पर गहरा असर छोड़ता है। तुममें जो सभ्यता और तहजीब है वो शिक्षा की वजह से ही है। मैं जानता हूं अगर तुम पढ़ी-लिखी नहीं होतीं तो शायद मैं तुमसे प्यार नहीं करता।

मोनिका : तो बात साफ है कि तुम मेरी शिक्षा से प्यार करते हो, ठीक उसी तरह से जैसे पापा ने मामा से शादी की थी, इसलिए कि वो कुछ पढ़-लिख सकती थी। आज तुम मुझसे प्यार इसलिए करते हो कि जहां तक मैंने शिक्षा पाई है वो तुम्हारे लिए ठीक है, मगर दस साल बाद क्या होगा ? पापा कह रहे थे कि मामा जमाने के साथ नहीं चली, अगर मैं भी जमाने के साथ नहीं चली तो फिर क्या होगा, क्या तुम भी···

जोजेफ : भविष्य में क्या होगा किसे मालूम मोनिका !

मोनिका : जब हमारी शादी होगी तो अग्नि के सामने तुम सौगन्ध खाओगे कि जन्म-जन्मान्तर तक तुम मेरा साथ दोगे; मगर यह सब दिखावा होगा, क्योंकि तुम यह नहीं बता सकते कि भविष्य में क्या होगा। जोजेफ, इस देश के होशियार और समझदारों में से तुम एक हो, तुम यह कहते जरूर हो कि भविष्य में क्या होगा तुम नहीं जानते, मगर यह गलत है। तुम अच्छी तरह से जानते हो कि भविष्य में तुम्हारी

तमाम उम्मीदें पूरी होंगी। मुझे बताओ, उस वक्त मुझ गरीब का क्या होगा?

जोजेफ : अगर इस देश का भविष्य उज्ज्वल होगा तो मोनिका मैं इतना जानता हूं कि तुम दौड़ में पीछे नही रहोगी।

मोनिका : ऐसा लगता है कि जितना मैं अपने आपको जानती हूं तुम मुझे उससे भी ज्यादा जानते हो, मैं एक स्कूल टीचर हूं और खुश हूं। मैं एक पोलीटीशियन नही बनना चाहती जो अपने देश को अपने परिवार से ज्यादा महत्त्व दे, मैं सिर्फ एक अच्छी बीवी और एक अच्छी मां बनना चाहती हूं। बिलकुल मामा की तरह। हां, किसी और को हो न हो, मुझे अपनी मां पर गर्व है, मै हूबहू अपनी मां की तरह होना चाहती हूं। मुझे बताओ जब कभी भी तुम एक बड़े अफसर बनोगे तो क्या तुम मुझे छोड़कर और से शादी करोगे?

जोजेफ : जब तुम इस तरह की बातें करती हो तो मुझे नही मालूम कि मैं क्या कहूं। मैं सिर्फ इतना जानता हू कि मै तुम से प्यार करता हूं और तुमसे शादी करना चाहता हूं।

मोनिका : मगर अब मुझे शक होने लगा है कि मैं तुमसे शादी करना चाहती हूं या नही, शायद मुझे किसी जूनियर अफसर से शादी करनी चाहिए, जिसकी इतनी ख्वाहिशें, इच्छाएं न हों।

[रसोई का दरवाजा खुलता है, सोलोमन बाहर आता है।]

सोलोमन : खाना जल्दी ही तैयार हो जाएगा। जोजेफ, मुझे अफसोस है कि जब तुम आए तो हमें घरेलू मामले पर बहस करते हुए पाया। मगर अब सब ठीक हो गया, रसोई ने हम दोनो ने सब कुछ तय कर लिया है।

जोजेफ : बहुत खुशी की बात है सर!

मोनिका : मैं खुश भी हूं और नही भी। जब आप दोनो यहां तमाम बातें तय कर रहे थे तो यहां पर हम दोनों ने उसका उल्टा किया!

जोजेफ : (उसे मनाते हुए कि आगे कुछ न कहे) मोनिका…

सोलोमन : क्या कहना चाहती हो?

मोनिका : हा पापा, मैं सोचती हू कि इस परिवार मे एक से ज्यादा तलाक होगा। अभी पूरी तरह से तय नही कर पाई हूं मगर सोचती हू कि मैं वो गलती न करूं जो मेरी मा ने की थी, क्योंकि जोजेफ भी आप की तरह उतना ही अवसरवादी है, आप जैसे अवसरवादियों पर भरोसा नही किया जा सकता। कम-से-कम मां और मुझ जैसी औरतों को जिनकी छोटी-छोटी इच्छाएं ही हो। हां, वेरोनिका की और बात है, उसने आपसे शादी करने के लिए हां इसलिए की होगी कि वो दौड़

में आगे पहुंचना चाहती है, और आप लोगों को भी ऐसी पत्नी चाहिए जो आपको आगे बढ़ने मे मदद करे।

मोलोमन . (बीच में बोलते हुए) मगर मोनिका तुम···

मोनिका : मगर आप वहा पर पहुंचेगे नही, क्योकि जोजेफ जैसे नौजवान अपनी पत्नियों की मदद से पहले वहा पर पहुंच चुके होंगे। और जब आप इस दौड़ मे उनसे मुकाबिला करेंगे तो वो आपको लात मार के नीचे गिरा देंगे।

जोजेफ : (टोकते हुए) यह क्या कह रही हो···

मोनिका : मैं यह नही चाहती कि मेरे साथ ऐसा हो, इसलिए मैं इस दौड़ में शामिल नही होना चाहती, यह दौड़ आप जैसे अवसरवादी महापुरुषो को ही मुबारक हो।

मोलोमन : मोनिका !

जोजेफ . मोनिका !

मोनिका : जोजेफ, इसके बाद मैं तुमसे नही मिलना चाहती, यह रही तुम्हारी अंगूठी···पापा, अगर मेरी जरूरत पड़े तो मैं रसोई में हू।···मां के साथ।

[वहा से एकदम चली जाती है—सन्नाटा, रसोई से रोने की आवाज आती है, और उसके साथ-साथ यह भी सुनाई देता है जैसे कोई किसी को दिलासा दे रहा हो।]

□□